कार्यालय, मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी

ब्लॉक-भीण्डर एवं वल्लभनगर

(उदयपुर)

प्रेरणा

प्रश्न बैंक

(एक नवाचारी पहल)

हिन्दी साहित्य

कक्षा- 12

बोर्ड परीक्षा परिणाम में गुणात्मक एवं
संख्यात्मक उन्नयन
हेतु अभिनव कार्ययोजना के तहत् निर्मित

मुख्य संरक्षक

गौरव अग्रवाल , IAS

निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

राजस्थान, बीकानेर

एन्जिलिका पलात

संयुक्त निदेशक

स्कूल शिक्षा, उदयपुर

पुष्पेंद्र शर्मा

मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी

उदयपुर

संरक्षक

मोनिका जाखड

उपखण्ड अधिकारी, भीण्डर

गोविन्द सिंह

उपखण्ड अधिकारी, वल्लभनगर

मार्गदर्शन

महेन्द्र कुमार जैन

मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, ब्लॉक भीण्डर, उदयपुर

अनिल पोरवाल

मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, ब्लॉक वल्लभनगर, उदयपुर

भेरुलाल सालवी

अति.मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी

रमेश खटीक

अति.मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी

गोपाल मेनारिया

अति.मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी

संयोजक

दिलराज सिंह राजावत , व्याख्याता, रा.उ.मा.वि. मेनार , उदयपुर

CBEO BHINDER VALLABHNAGAR

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान

परीक्षा 2023 पाठ्यक्रम

हिन्दी साहित्य

कक्षा 12

इस विषय की परीक्षा निम्नानुसार है–

प्रश्न–पत्र	समय (घंटे)	प्रश्न–पत्र के लिए अंक	सत्रांक	पूर्णांक
एक पत्र	3.15	80	20	100

अधिगम क्षेत्र	अंक
अपठित बोध	12
रचना	16
काव्यांग परिचय	8
पाठ्यपुस्तक : अन्तरा भाग–2	32
पाठ्यपुस्तक : अन्तराल भाग–2	12

समय 3.15 घण्टे **पूर्णांक :80**

इकाई का नाम **अंक**

अपठित बोध : **12**

1. काव्यांश पर आधारित 6 अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न 1X6 = 6
2. गद्यांश पर आधारित बोध, प्रयोग, रचनांतरण, शीर्षक आदि पर 6 अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न 1X6 = 6

रचनात्मक एवं व्यावहारिक लेखन **16**

1. निबंध (किसी एक विषय पर विकल्प सहित) 6

अभिव्यक्ति एवं माध्यम पाठ्यपुस्तक पर आधारित'–

2. कविता/नाटक/कहानी की रचना प्रक्रिया पर आधारित प्रश्न (60 शब्दों में उत्तर) 1 प्रश्न X 3 अंक 3
3. पत्रकारीय लेखन के विभिन्न रूप और लेखन प्रक्रिया (30–40 शब्दों में उत्तर) 2 प्रश्न X 2 अंक 4
4. विशेष लेखन–स्वरूप और प्रकार (20 शब्दों में उत्तर) 3 प्रश्न X 1 अंक 3

काव्यांग परिचय **8 अंक**

(क) काव्य–गुण, काव्य दोष 2
(ख) छन्द 2
(ग) अलंकार 4

पाठ्यपुस्तक – अन्तरा भाग–2 32

(1) 1 व्याख्या गद्य भाग से (विकल्प सहित) 5
(2) 1 व्याख्या गद्य पद्य से (विकल्प सहित) 5
(3) 2 निबंधात्मक प्रश्न से (1 प्रश्न गद्य से एवं 1 प्रश्न पद्य भाग से विकल्प सहित) (100 शब्दों में उत्तर) 2 प्रश्न X 5 अंक 10
(4) 2 लघूत्तरात्मक प्रश्न से (1 गद्य से एवं 1 पद्य भाग से) (30–40 शब्दों में उत्तर) 2 प्रश्न X 2 अंक 4
(5) 4 अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न से (2 गद्य से एवं 2 पद्य भाग से) (एक पंक्ति में उत्तर) 4श्न X 1 अंक 4
(6) किसी एक कवि या लेखक का साहित्यिक परिचय (80 शब्दों में उत्तर) 1 प्रश्न X 4 अंक 4

पाठ्यपुस्तक अन्तरा भाग –2 से परीक्षा 2022 के लिए सम्मिलित अध्याय कविता खण्ड आधुनिक

जय शंकर प्रसाद सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'ए सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन **अज्ञेय**

केदारनाथ सिंह

विष्णु खरे तुलसीदास विद्यापति केषवदास **रघुवीर सहाय मलिक मुहम्मद जायसी घनानन्द**

गद्य खण्ड

रामचन्द्र शुक्ल – प्रेमधन की छाया स्मृति (सम्पूर्ण पाठ यथावत रहेगा)
पंडित चन्द्रधर शर्मा गुलेरी – सुमिरिनी के मनके (सम्पूर्ण पाठ यथावत रहेगा)
ब्रजमोहन व्यास – कच्चा चिटठा (सम्पूर्ण पाठ यथावत रहेगा)
फणीष्वरनाथ रेणु – संवदिया
असगर वजाहत– शेर, पहचान, चार हाथ, साझा (सम्पूर्ण पाठ यथावत रहेगा)
निर्मल वर्मा – जहाँ कोई वापसी नहीं (सम्पूर्ण पाठ यथावत रहेगा)
ममता कालिया – दूसरा देवदास (सम्पूर्ण पाठ यथावत रहेगा)
राम विलास शर्मा (यथास्मै रोचते विश्वम)
हजारी प्रसाद द्विवेदी (कुटज)
भीष्म साहनी (गाँधीएनेहरू ...)

पाठ्यपुस्तक – अन्तराल भाग–2 **12**

(1) 1 एक निबंधात्मक प्रश्न (विकल्प सहित) 4
(2) 4 लघूत्तरात्मक प्रश्न (30–40 शब्दों में उत्तर) 4 प्रश्न X 2 अंक

पाठ्यपुस्तक – अंतराल भाग–2 से परीक्षा 2022 क लिए सम्मिलित अध्याये

सूरदास की झोंपड़ी – प्रेमचन्द
आरोहण – संजीव
अपना मालवा – खाउ–उजाडू सभ्यता में प्रभाष जोशी
बिस्कोहर की माटी - विश्वनाथ त्रिपाठी

CBSE BHINDER VALLABHNAGAR

संकलन कर्ता

1. श्री विनोद कुमार – राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बांसड़ा
2. श्री संजय प्रकाश झालावत - राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय धावड़िया
3. श्री राधा कृष्णा चौबीसा - राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय केदारिया
4. श्री देवी लाल मेघवाल - राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कुंडइ
5. श्री मुकेश कुमार - राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सारंगपुरा
6. श्रीमती दुर्गा चौबीसा - राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सारंगपुरा कानोड़
7. श्रीमती सुमित्रा शर्मा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय धावड़िया अमरपुरा
8. श्री पवन कुमार सेन - राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय नारायण पूरा
9. श्री कमला शंकर मेघवाल - राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय हिंता
10 श्री शैयद हुसेन पिंजारा - राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय वनिया तलाई
10. श्री नवल चंद प्रजापत - राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मोतीदा
11. श्री ललित सेन - राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय हिंताचारगड़िया
12. श्री दिनेश चन्द्र चौबीसा - राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बड़गांव
13. श्रीमती सीमा सोलंकी - राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बरोड़िया
14. श्री नरेंद्र कुमार - राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पिथलपुरा
15. श्री मोहन लाल चौधरी - राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सालेड़ा
16. श्रीमती लता शर्मा - राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भोपाखेड़ा
17. श्री शंकर सिंह - राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय आमलिया
18. श्री राजेंद्र प्रसाद व्यास - राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कानोड
19. श्री प्रह्लाद कुमार चौबीसा - राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय धारता
20. श्री राम लाल मेघवाल - राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय खेरोदा
21. श्रीमती हेमलता आमेटा - राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय ढावा
22. श्रीमती अरुणा जैन - राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय अड़ींदा
23. श्रीमती वीणा अरोड़ा - राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बाठरड़ा कला
24. श्री रोशन लाल सरगरा - राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय गोटीपा
25. श्रीमती नेहा रत्नु - राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय नांदवेल
26. श्रीमती रोमा कुमारी - राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय आसावरा
27. श्री अनिल राघावत - राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पूरियाखेड़ी
28. श्रीमती आशा वया - राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय माल की टूस
29. श्रीमती प्रेमलता आमेटा - राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय करनपुर
30. श्री गोवेर्धन लाल चौबीसा - राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मजावड़ा
31. श्रीमती उपमा जोशी - राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय दरोली
32. श्री कैलाश चन्द्र मेघवाल - राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय धमानिया
33. श्री तुलसी राम जावत - राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बाठरडा खुर्द
34. श्री पवन कुमार मारू - राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय खरसान
35. श्री ईश्वर लाल दौलावत - राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मोड़ी

CBEO BHINDER VALLABHNAGAR

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

प्रश्न 1. लघुकथा 'शेर' में शेर किसका प्रतीक है ?

उत्तर – शेर एक ऐसी व्यवस्था का प्रतीक है जो प्रलोभन एवं हिंसा के बल पर पूरे जंगल समाज में व्याप्त है।

प्रश्न 2. लघुकथा 'शेर' में शेर को किसका समर्थक बताया है ?

उत्तर – शेर अहिंसा और सह – अस्तित्ववाद का समर्थक है।

प्रश्न 3. 'साझा' कहानी का प्रतीकार्थ क्या है ?

उत्तर – पूँजीपतियों की नजर उद्योगों पर एकाधिकार करने के बाद किसानों की जमीन पर है। यह साझा कहानी का प्रतीकार्थ है।

प्रश्न 4. मिल मालिक ने दोगुना उत्पादन करने के लिए क्या किया ?

उत्तर – मिल मालिक ने दोगुना उत्पादन करने के लिए मजदूरी आधी कर दी और दोगुने मजदूर रख लिए।

प्रश्न 5. गधे ने शेर के मुँह में जाने का क्या कारण बताया ?

उत्तर – गधे ने बताया कि शेर के मुँह में घास का मैदान है और वहाँ मुझे घास मिलती रहेगी।

प्रश्न 6. असगर वजाहत के दो नाटकों के नाम लिखिए ?

उत्तर – असगर वजाहत के दो नाटकों के नाम – 'इन्ना की आवाज' और 'फिरंगी लौट आए'।

प्रश्न 7. अन्तरा पाठ्य-पुस्तक में संकलित असगर वजाहत की लघुकथाओं के नाम लिखिए ?

उत्तर – शेर, पहचान, चार हाथ और साझा

प्रश्न 8. हाथी ने किसान को क्या विश्वास दिलाया ?

उत्तर –हाथी ने किसान को छोटे जानवरों से खेती की रक्षा का विश्वास दिलाया।

प्रश्न 9. 'पहचान' कथा में राजा की सफलता का राज क्या है ?

उत्तर – यही कि अंधी, बहरी व गुंगी प्रजा एकजुट न हो पाए तथा प्रलोभन के आधार पर भुलावे में रहे।

प्रश्न 10. 'चार हाथ' कथा किस व्यवस्था को उजागर करती है ?

उत्तर – चार हाथ कथा पूँजीवादी व्यवस्था में मजदूरों के शोषण को उजागर करती है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

प्रश्न 11. 'शेर' लघु कथा में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – शेर लघु कथा में लेखक ने शासन व्यवस्था पर व्यंग्य किया है। शेर व्यवस्था का प्रतीक है जिसके पेट में जंगल के सभी जानवर किसी प्रलोभन या लोभ-लालच के वशीभूत होकर समाते जा रहे है। शेर का प्रचारतंत्र मजबूत है। वह ऊपर से अहिंसावादी, न्यायप्रिय होने का ढोंग करता है किन्तु वास्तव में वह हिंसक एवं अन्यायी है। शासनतंत्र तब तक खामोश रहता है जब तक उसकी आज्ञा का पालन एवं स्वार्थ की पूर्ति होती रहे। जब लेखक शेर के मुँह में न जाने का संकल्प करता है तभी शेर दहाड़ने लगता है। इसके द्वारा लेखक यह व्यक्त करता है कि सत्ता तभी तक चुप रहती है जब तक कोई उसकी व्यवस्था पर उँगली न उठाए किन्तु जब कोई उसकी आज्ञा मानने से इन्कार करता है तब वह भयानक रुप धारण कर विरोधी स्वरों को कुचलने का भरपूर प्रयास करती है।

प्रश्न 12. 'साझा' लघुकथा में लेखक ने किसानों की बदहाल-स्थिति पर प्रकाश डाला है, स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – लेखक ने साझा लघुकथा के माध्यम से आजादी के बाद के किसानों की बदहाली एवं उसके कारणों पर प्रकाश डाला है। आजादी के बाद से ही उद्योगों पर कब्जा जमाने के पश्चात् पूँजीपतियों की नजर किसानों की जमीन एवं उन पर होने वाले उत्पादों पर जमी थी। प्रभुत्वशाली वर्ग अपनी कूटनीति द्वारा किसान को साझा खेती करने का झाँसा देता है। जिसमें मेहनत और लाभ साझा होने की बात करता है लेकिन जब लाभ लेने का अवसर आता है तब यह धनाढ्य वर्ग पूरी फसल हड़प लेता है। साझा कथा में हाथी उन्हीं प्रभुत्वशाली पूँजीपतियों का प्रतीक है जो साझा नीति पर अमल करते हुए सारी फसल खुद निगल जाता है और किसान अपनी बेबसी व लाचारी पर आसूँ बहाता है।

प्रश्न 13. लेखक जंगल में क्यों गया और वहाँ जाकर उसने क्या देखा ?

उत्तर – लेखक कहता है कि अचानक उसके सींग निकल आए, वह डर गया कि कसाई उसे जानवर समझकर काट डालेंगे। अतः वह उनसे डरकर जंगल की ओर भागा। जंगल में उसे एक पेड़ के नीचे शेर बैठा दिखाई दिया जिसका मुख खुला हुआ था। लेखक शेर से डरकर झाड़ियों की ओट में छिपकर बैठ गया। उसने वहाँ से देखा कि जंगल के जानवर पंक्तिबद्ध होकर शेर के मुख में चले जा रहे हैं और शेर उन्हें चबाए बिना ही निगलता जा रहा है। इन जानवरों में लोमड़ी, कुत्ते, गधे, उल्लू सब थे। जब उसने इन जानवरों से यह पूंछा कि आप लोग शेर के मुख में क्यों जा रहे हैं तो किसी ने उसे बताया कि शेर के मुख में हरी घास का मैदान है, किसी ने कहा वहाँ स्वर्ग है तो किसी ने उत्तर दिया कि

CBEO BHINDER VALLABHNAGAR

वहाँ रोजगार का दफ्तर है। इस प्रकार लोभ-लालच और प्रलोभन में फँसकर जंगल के जानवर शेर के पेट में समाते जा रहे थे।

प्रश्न 14. 'चार हाथ' लघुकथा में व्याप्त मजदूरों के प्रति हो रहे शोषण को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर – चार हाथ लघुकथा वर्तमान में पनप रहे मशीनी युग का जीता-जागता उदारहण है। चार हाथ कथा पूँजीवादी व्यवस्था में चल रहे मजदूरों के शोषण को उजागर करती है। मिल-मालिकों का लालच, मजदूरों के शोषण का प्रमुख कारण है। मिल-मालिक मजदूरों की स्थिति एवं हालातों का फायदा उठाकर एक के बदले में दो व्यक्तियों जितना कार्य ले लेते हैं। वे हर सम्भव प्रयास करते हैं कि मजदूर लाचारी और बेबसी में इतना दब जाये कि विरोध की स्थिति में न रहे और मिल मालिक के इशारों पर दुगुना उत्पादन कर दें। लेखक ने चार हाथ में मिल मालिक की इसी प्रवृति पर कटाक्ष किया है जो और ज्यादा उत्पादन के लालच में मजदूरों के दो अधिक हाथ लगवाना चाहता है। इस कार्य में सफल न हाने पर शोषण का दूसरा रास्ता खोज लेता है कि मजदूरी आधी करके दुगुने मजदूर रख लिये जाए।

प्रश्न 15. 'पहचान' लघुकथा में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – पहचान शीर्षक लघुकथा में निम्नलिखित व्यंग्य निहित हैं –

- हर राजा गूँगी, बहरी और अंधी प्रजा पसंद करता है।
- हर राजा चाहता है कि उसकी प्रजा बेजुबान हो और उसके खिलाफ आवाज न उठाये।
- प्रजाजनों के एकजुट होने से राजा को हानि होने की संभावना है इसलिये वह उन्हें एकजुट नहीं होने देता।
- राजा प्रजाजनों को यह झांसा देता है कि उसकी हर आज्ञा राज्य के हित में है और राज्य को स्वर्ग बनाने के लिये है।
- छद्म प्रगति और विकास के बहाने धीरे-धीरे राजा उत्पादन के सभी साधनों पर अपनी पकड़ मजबूत कर लेता है।
- राजा प्रजाजनों को यह झांसा देता है कि वह उनके जीवन को स्वर्ग जैसा बना देगा पर वास्तव में प्रजा का जीवन और भी खराब हो जाता है। हाँ, राजा अपना जीवन स्वर्ग जैसा अवश्य बना लेता है।

प्रश्न 16. खैराती, रामू और छिद्दू ने जब आँखें खोलीं तो उन्हें सामने राजा ही क्यों दिखाई दिया ?

उत्तर – खैराती, रामू और छिद्दू ने वर्षों तक आँखें बंद रखने के बाद जब आँखें खोली तो उन्हें अपने सामने सर्वत्र राजा ही दिखाई दिया। वे यह सोच रहे थे कि उनका राज्य अब तक स्वर्ग जैसा हो गया होगा किन्तु यह उनका भ्रम था। राजा ने अपनी स्थिति पहले से मजबूत कर ली थी और वही सर्वत्र व्याप्त था। यही नहीं वर्षों बाद आँखें खुलने पर वे तीनों एक-दूसरे को भी न देख सके। तीनों एक-दूसरे को भी न देख सके का आशय यह है कि उनको प्रजाहित का कोई काम दिखाई नहीं दिया सर्वत्र राजा का ही प्रभुत्व दिखाई दिया।

प्रश्न 17. 'शेर' लघुकथा में किस प्रवृति पर प्रहार किया गया है ?

उत्तर – 'शेर' लघुकथा में शेर व्यवस्था का प्रतीक है। शेर अंहिसावादी और न्यायप्रिय बनने का दिखावा करके चुप रहता है, और मुँह में प्रवेश करने वालों को निगल लेता है। शेर वस्तुतः सुविधाभोगियों, छद्मक्रान्तिकारियों, अंहिसावादियों और सह-अस्तित्ववादियों का भी प्रतीक है। प्रस्तुत लघुकथा में ऐसे लोगों की ढोंगी एवं स्वार्थी प्रवृति पर प्रहार किया गया है।

प्रश्न 18. 'पहचान' कथा आज के सत्ताधारियों पर कहाँ तक चरितार्थ होती है ?

उत्तर – पहचान कथा में राजा लोगों से आँखें बन्द रखने, कानों में पिघला हुआ सीसा डलवाने, होंठ सिलवाने को कहता है। आज के सत्ताधारी भी चाहते हैं कि जनता उनके कारनामे न जान पाए और अन्याय एवं शोषण का विरोध करने की स्थिति में ही न रहे। वे न देखे, न सुने और न ही विरोध कर सके।

प्रश्न 19. मिल मालिक के स्वभाव पर टिप्पणी करें।

उत्तर – मिल मालिक के दिमाग में अजीब-अजीब ख्याल आया करते है। जैसे सारा संसार मिल हो जाएगा और सभी लोग उसके नौकर हो जाएँ। वह लालची और निर्दयी किस्म का आदमी था। वह अपने मिल को सबसे बड़ा मिल और खुद को सबसे अमीर इंसान बनाना चाहता था। वह चाहता था कि काम खूब हो और उसके बदले मजदूरी कम देनी पड़े, ताकि उसका खूब मुनाफा हो सके। वह शोषण करने वाला व्यक्ति था।

प्रश्न 20. असगर वजाहत का साहित्यिक परिचय लिखिए।

उत्तर – श्री असगर वजाहत ने प्रारंभ में विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेखन कार्य किया, बाद में जामिया मिलिया विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य करने लगे। असगर वजाहत ने कहानी, उपन्यास एवं नाटक आदि लिखे तथा नुक्कड़ नाटकों को नयी भंगीमा प्रदान की। इन्होंने 'गजल की कहानी' वृत्तचित्र का निर्देशन किया है और 'बूँद-बूँद' धारावाहिक का लेखन भी किया है। इनकी भाषा में गाम्भीर्य, सशक्त भावाभिव्यक्ति एवं व्यंगयात्मकता है। असगर वजाहत द्वारा रचित **कहानी संग्रहः–** दिल्ली पहुँचना है, आधी बानी, मैं हिन्दू हूँ आदि **प्रमुख**

नाटकः– वीरगति, समिधन, इन्ना की आवाज आदि **प्रमुख उपन्यासः–** रात के जागने वाले, कैसी आगि लगाई आदि। इन्होंने फिल्मों एवं धारावाहिकों के लिए पटकथाएँ भी लिखी है।

GEOBINDER VALABHNAGAR

पाठ 2 – कच्चा चिट्ठा

लेखक परिचय :– ब्रजमोहन व्यास का जन्म सन 1886 में इलाहाबाद में हुआ । आपने गंगानाथ झा एवं बालकृष्ण भट्ट से संस्कृत शिक्षा प्राप्त की वे 1921 से 1943 तक इलाहाबाद नगर पालिका के कार्यपालक अधिकारी रहे । सन् 1944 से 1951 के लीडर समाचार पत्र समूह के जनरल मैनेजर रहे 23 मार्च 1963 को इलाहाबाद में उनका निधन हो गया।

इलाहाबाद में नौकरी करते हुए वहाँ के विशाल और प्रसिद्ध संग्रहालय उनकी बहुत बडी देन है। संग्रहालय में लगभग दोहजार पाषाण मूर्तियाँ, पांच छह हजार मृण–मूतियाँ, कनिष्क के कार्यकाल की प्राचीनतम बौद्ध मूर्ति, खजुराहो की चन्देल प्रतिमाऐं सैकडो रंगीन चित्रों आदि का संग्रह है। उन्होने अनेक भाषाओं के लगभग 14000 हस्तलिखित ग्रंथों का संकलन इसी संग्रहालय के लिए किया । पंडित नेहरू को मिले मान पत्र तथा चन्द्र शेखर आजाद की पिस्तौल भी इस संग्रहालय में विद्यमान है। व्यासजी ने अपने परिश्रम एवं सूझ बूझ से कम से कम खर्च में अधिकाधिक प्राप्त करने के ढंग से पुरातत्व सम्बन्धी विभिन्न वस्तुओं के संकलन से विशाल संग्रहालय स्थापित कर अपने पुरातत्वीय ज्ञान एवं कौशल का परिचय दिया।

पाठ का सारांश

संकलित पाठ अन्तरा पाठ्यपुस्तक से लिया गया है। यह ब्रजमोहन व्यास की आत्मकथा का एक अंश है । इसका सारांश निम्नानुसार है:–

1. लेखक द्वारा कौशाम्बी एवं पसोवा की यात्रा– इलाहाबाद के अपने कार्यकाल में लेखक ब्रजमोहन व्यास अपने अधीन संग्रहालय में पुरातात्विक वस्तुओं के संग्रह के लिए सदैव उद्यत रहते थे। वे जहाँ भी किसी स्थान की यात्रा करते वहाँ उनकी नजर हमेशा ऐसी ही वस्तुओं की खोज में रहती थी। वे ऐसी ही एक यात्रा पर पसोवा गये वहाँ से मिट्टी की प्राचीन मूर्तियाँ, सिक्के और मनके संग्रहित किये। वही उनकी नजर पत्थरों के ढेर पर रखी लगभग 20 किलो वजनी प्राचीन चतुर्भुज शिवजी की मूर्ति को भी लेकर आ गए। जब गाँव वालों को यह बात पता चली तो वे 15–20 आदमी अपनी मूर्ति को वापस ले जाने के लिए उनके दफ्तर पहुँचे । उन्होने न केवल मूर्ति वापस सौंपदी वरन् उसे बस अड्डे पहुँचाने की व्यवस्था भी कर दी। यह उनकी सहृदयता दर्शाने वाली घटना है।
   इसके दूसरे वर्ष पुनः कौशाम्बी यात्रा पर गये । वहाँ वे गाँव–गाँव नाले–नाले घूमे । एक खेत की मेड पर उन्हे बोधिसत्व की आठ फूट लम्बी सुन्दर मूर्ति दिखाई पडी थी, जो मथुरा के लाल पत्थरो से निर्मित थी । तब उसे दो रूपये का भुगतान कर मूर्ति को अपने साथ संग्रहालय में ले आये ।
2. फ्रांसीसी डीलर का आगमनः– एक दिन एक फ्रांसीसी – डीलर संग्रहालय देखने आया उसने बोधिसत्व की मूर्ति को देखकर उसे दस हजार रूपये में खरीदने की इच्छा जताई। लेखने मूर्ति नहीं बची । वह मूर्ति बोधिसत्व की उन मूर्तियों में से एक है जो संसार में अब तक प्राप्त सभी मूर्तियों से प्राचीन है। वह कुषाण सम्राट कनिष्क के राज्यकाल के दुसरे वर्ष स्थापित की गई थी। ऐसा लेख उस सिरविहीन मूर्ति के पाद स्थल पर उत्कीर्ण है। संग्रहालय के लिए नये परिसर का निर्माण :– लेखक ब्रजमोहन व्यास जी ने संग्रहालय में विभिन्न पुरातात्विक वस्तुओं का संग्रह अपने कार्य काल में निरन्तर जारी रखा जिससे अब भवन जो नगर पालिका में था, छोटा पडने लगा, अतः एक विशाल भवन की आवश्यकता होने लगी। लेखक ने अपनी सूझबूझ से एक संग्रहालय निर्माण कोष की स्थापना की जिसमें दस वर्षो में दो लाख रूपये की राशि एकत्रित हो गई। तत्कालीन जिलाधिकारी द्वारा कम्पनी बाग में भवन के लिए भूखण्ड लिया गया। इस कार्य का शिलान्यास पण्डित जवाहर लाल नेहरू से कराया गया। एक भव्य समारोह में पंडित नेहरू ने न केवल शिलान्यास किया बल्कि बम्बई के प्रसिद्ध इन्जिनियर श्री साठे द्वारा भवन नक्शा बनवाया एवं अपने विभागों द्वारा निर्माण राशि की कमी नही होने दी भवन बन कर तैयार हो गया । उसमें प्रदर्शित वस्तुओं का तत्कालीन मूल्य पन्द्रह लाख रूपये से अधिक ही होगा।
   इस प्रकार से अपनी दूरदर्शिता से लेखक महोदय ने एक नौकरशाह होते हुए भी पूर्ण मनोयोग से संग्रहालय का निर्माण कराने में अपने जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष व्यतीत किये । निश्चत ही यह हमारे देश की ऐतिहासिक धरोहर है।

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्र. 1 " कच्चा चिट्ठा" आत्मकथा के लेखक का नाम बताईये।

उत्तरः– श्री ब्रजमोहन व्यास

प्र. 2 ब्रजमोहन व्यास किस पद पर कार्यरत थे

उत्तरः– ब्रजमोहन व्यास इलाहाबाद नगर पालिका के मुख्य कार्यकारी अधिकारी थे।

प्र.3 "कच्चा चिट्ठा" में श्री व्यास जी की किन– किन चारित्रिक विशेषताओं को अभिव्यक्त करता है

उत्तरः– "कच्चा चिट्ठा" आत्मकथाओं में लेखक की पुरानी वस्तुओं के प्रति पैनी दृष्टि मितव्ययिता, कार्य के प्रति निष्ठा, श्रम कौशल एवं वाक्पटुता आदि विशेषताओं को व्यक्त करता है

प्र. 4 कौशाम्बी एवं पसोवा नगर क्यों प्रसिद्व है

उत्तरः– कौशाम्बी एवं पसोवा नगर क्रमशः बौद्ध एवं जैन धर्मो के प्राचीन तीर्थो के लिए प्रसिद्ध है।

प्र.5 "कच्चा चिट्ठा" किस विधा में लिखा गया है
उत्तर "कच्चा चिट्ठा" आत्मकथा शैली की रंचना है।
प्र.6 आत्मकथा एवं जीवनी मे अन्तर स्पष्ट कीजिए।
उत्तरः– आत्मकथा मे लेखक स्वयं के जीवन में घटित घटनाओं का पूर्ण ईमानदारी से वर्णन करता है जबकि जीवनी में लेखक किसी प्रसिद्ध व्यक्ति द्वारा देश–समाज के लिए किये गए कार्यो का वर्णन करते हुए लिखा जाता है।
प्र. 7 ब्रजमोहन व्यास ने किन महापुरूषों की जीवनी की रचना की थी
उत्तरः– श्री व्यास ने लेखक बालकृष्ण भट्ट एवं पं मदन मोहन मालवीय की जीवनी का लेखन किया।
प्र. 8 इलाहाबाद संग्रहालय मे कौन–कौन सी भाषा के हस्तलिखित ग्रन्थ रखे गये है
उत्तरः– उक्त संग्रहालय में हिन्दी, संस्कृत, अरबी एवं फारसी भाषाओं में लिखे गये हस्तलिखित ग्रन्थ सहेजे गये है। इनकी संख्या चौदह हजार से अधिक है।
प्र. 9 संग्रहालय अवलोकन के लिए आए फ्रासिसी व्यक्ति ने क्या क्रय करने की इच्छा प्रकट की
उत्तरः– फ्रांसीसी दर्शक जो वास्तव में मूर्तियों का एक डीलर था बोधि सत्व को अति. प्राचीन सिर विहिन प्रतिमा दस हजार रूपये में क्रय करना चाहता था।
प्र. 10 लेखक का दक्षिण भारत यात्रा करने का मुख्य उद्देश्य क्या था
उत्तर :– लेखक ने सुन रखा था की दक्षिण भारत में ताम्र मूर्तियाँ एवं हस्तलिखित पोथियों की खरीद फरोख्त होती है उन्हें किसी भी प्रकार से प्राप्त करने का मुख्य उद्देश्य था।

लधूत्तरात्मक प्रश्न

प्र. 1 "कच्चा चिट्ठा" पाठ के आधार पर बताईये कि लेखक ने संग्रहालय के लिए वस्तुऐं एकत्रित करने के लिए कहाँ–कहाँ यात्रा की थी
उत्तरः– लेखक ने संग्रहालय में प्राचीन वस्तुऐं एकत्र करने के लिए – कौशाम्बी, पसोवा, हजियापुर जैसे पडौसी गाँवो के साथ–साथ दक्षिण भारत के मैसूर, रामेश्वरम् तथा मद्रास की यात्राऐं की।
प्र. 2 इस पाठ में आए मुहावरे " मुंह में खून लगना " का अर्थ स्पष्ट करो–
उत्तर :– " मूंह में खून लगना " मुहावरे का शाब्दिक अर्थ है लालच आना। पाठ के सन्दर्भ में लेखक को कोई पुरातात्विक वस्तु मिलने पर वह उससे सम्बन्धित अन्य वस्तुओं को खोजने का लोभ करने लगता है।
प्र. 3 हजियापुर गाँव से भद्रमथ शिलालेख प्राप्त करने में लेखक को किन कठिनाईयों का सामना करना पडा
उत्तर :– हजियापुर गाँव से "भद्रमथ " शिला लेख को पुरातत्व वाले उठाना चाहते थे, लेकिन गाँव के मुखिया ने यह कह कर मना कर दिया कि यह शिला लेख इलाहाबाद संग्रहालय को 25 रूपये में बेच दिया गया है । पुरातत्व विभाग के मजुमदार ने इसकी शिकायत दिल्ली मुख्यालय में की गई तो वहाँ से लेखक को सरकारी कार्य में बाधा डालने की चेतावनी दी गई।
प्र. 4 जमीदार गुलजार के कुँए से लेखक ने कौनसी पुरातात्विक वस्तु प्राप्त की
उत्तर :– जमींदार गुलजार मियाँ के सजिले कुँए से लेखक को ब्राहमी लिपि में लिखा गया लेख दिखाई दिया। लेखक के निवेदन से जमींदार ने अपने कुँए की बँडेर से निकाल कर दे दिया।
प्र. 5 " मैं तो निमित्त मात्र था। अरूण के पीछे सूर्य था। " ब्रजमोहन व्यास के कथन का आशय स्पष्ट करें। इससे उनकी कौनसी चारित्रिक विशेषताऐं प्रकट होती है
उत्तर :– प्रयाग (इलाहाबाद) संग्रहालय के पुरातत्व की वस्तुओं को एकत्रित करने एवं उन्हें संरक्षित करने में व्यास जी ने बहुत परिश्रम किया। परन्तु इस कार्य का श्रेय स्वयं न दे कर उन्होने इसे प्रभु की कृपा का परिणाम बताया। उन्होने स्वयं को अरूण अर्थात सूर्य का सारथि बताया एवं इसके पीछे का सूर्य ईश्वर को बताया। एवं ईश्वरीय प्रेरणा से ही वे कार्य कर सके।
प्र. 6 लेखक द्वारा मद्रास से ताम्र पत्र पर लिखी गई सामग्री क्रय करने में क्या अडचन थी
उत्तर :– मद्रास में ताम्रपत्र पर लिखी गई पुस्तके नही खरीद सकने की अपनी विवशता वर्णित करते हुए कहा कि उनकी कीमत ढाई–तीन सौ रूपये से कम नहीं है। यह कीमत उनके बजट से बहुत अधिक थी। साथ ही ये तेलगु व तमिल भाषा मे लिखी गई थी।
प्र. 7 श्री ब्रजमोहन व्यास का साहित्यिक परिचय दीजिये–
उत्तर :– श्री ब्रजमोहन व्यास लम्बे समय तक इलाहाबाद नगर पालिका में मुख्य कार्यकारी अधिकारी के रूप में सेवाऐं दी। इसी दौरान इन्होने अपनी सूझ बूझ एवं वाक पटूता द्वारा कई पुरातात्विक वस्तुओं का संग्रह किया। एवं एक विशाल एवं प्रसिद्ध संग्रहालय की स्थापना की। इसी संग्रहालय मे हिन्दी संस्कृत एवं अरबी फारसी को 14000 पाण्डूलिपियों का संग्रह प्रमुख है। उन्होने अपनी साराधन और जीवन पुरातात्विक वस्तुओं के संग्रहण में लगाकर अपने श्रम कौशल एवं कार्य के प्रति निष्ठा का परिचय दिया।

CEO BHINDER VALLABHNAGAR

व्यास जी ने कुमार दास कृत जानकी हरण का अुनवाद किया तथा पं. बालकृष्ण भट्ट एवं मदन मोहन मालवीय को जीवनी का लेखन कार्य भी किया।

निर्मल वर्मा 3– जहॉ कोई वापसी नहीं

प्रश्न–1. निर्मल वर्मा का जन्म कब व कहॉ हुआ?
उत्तर– सन् 1929 ई. शिमला हिमाचल प्रदेश में।
प्रश्न–2. निर्मल वर्मा किस कहानी आंदोलन से सम्बन्धित है?
उत्तर– नई कहानी आंदोलन से।
प्रश्न–3. निर्मल वर्मा के प्रमुख कहानी संग्रहों के नाम लिखिए।
उत्तर– परिंदे, जलती झाड़ी, तीन एकान्त, पिछली गर्मियों में कव्वे और काला पानी, सूखा आदि।
प्रश्न–4. निर्मल वर्मा के प्रमुख उपन्यासों के नाम बताइए।
उत्तर– वे दिन, लाल टीन की छत, एक चिथड़ा सुख, अन्तिम अरण्य आदि।
प्रश्न–5. निर्मल वर्मा के यात्रा संस्मरण व निबन्ध संग्रह कौन–कौनसे हैं?
उत्तर– 1. यात्रा संस्मरण– हर बारिश में, चीड़ों पर चॉदनी, धुंध से उठती धुन
2. निबन्ध संग्रह– शब्द और स्मृति, कला का जोखिम, ढलान से उतरते हुए।
प्रश्न–6. निर्मल वर्मा को साहित्य अकादमी पुरस्कार कब व किस रचना के लिए मिला?
उत्तर– सन् 1985 ईस्वी में कहानी संग्रह 'कव्वे और काला पानी' के लिए।
प्रश्न–7. 'जहॉ कोई वापसी नहीं'– यात्रा वृत्तांत निर्मल वर्मा के किस संग्रह से लिया गया है?
उत्तर– धुंध से उठती धुन।
प्रश्न–8. जहॉ कोई वापसी नहीं यात्रा वृत्तांत में वर्माजी ने प्रमुखता से किस समस्या को उठाया है?
उत्तर– पर्यावरण विनाश व विस्थापन सम्बन्धी मनुष्य की यातना की समस्या को।
प्रश्न–9. जहॉ कोई वापसी नहीं यात्रा वृत्तांत में हिमाचल के किस क्षेत्र का वर्णन है?
उत्तर– नवॉ गॉव–सिंगरौली क्षेत्र।
प्रश्न–10. सरकार के द्वारा क्या घोषणा की गई?
उत्तर– अमरौली प्रोजेक्ट के अन्तर्गत नवॉ गॉव के अनेक गॉव उजाड़ दिये जावेंगे।
प्रश्न–11. नवॉ गॉव क्षेत्र में लगभग कितने गॉव है व इनकी जनसंख्या कितनी है?
उत्तर– इस क्षेत्र में लगभग 18 गॉव हैं व इनकी आबादी 50,000 से भी ज्यादा है।
प्रश्न–12. अमझर से आप क्या समझते हैं?
उत्तर– आम के पेड़ों से घिरा गॉव जहॉ आम झरते है, इसी को अमझर कहा गया है।
प्रश्न–13. प्राचीन दन्त कथा के अनुसार इस क्षेत्र का नाम सिंगरौली क्यों पड़ा?
उत्तर– श्रृंगावली पर्वतमाला के कारण।
प्रश्न–14. सिंगरौली को काला पानी क्यों माना जाता था?
उत्तर– इस क्षेत्र को घने जंगलों व यातायात के साधन सीमित होने के कारण।
प्रश्न–15. लेखक के सिंगरौली जाने का कारण था?
उत्तर– लोकायन संस्था दिल्ली की ओर से अमरौली प्रोजेक्ट से होने वाले प्राकृतिक नुकसान का जायजा लेने।
प्रश्न–16. आधुनिक भारत के नए शरणार्थी किन्हें कहा गया है?
उत्तर– आधुनिक भारत में नए शरणार्थी वे हैं जो औद्योगिकरण के झंझावत द्वारा अपनी घर–जमीन से उखाड़कर हमेशा के लिए विस्थापित कर दिये गये हैं। इनकी जमीन सरकार ने अधिगृहित कर ली है। ये लोग अब अपने घरों को, अपने मूल स्थान को कभी नहीं लौट सकते।
प्रश्न–17. लेखक के अनुसार स्वातन्त्र्योतर भारत की सबसे बड़ी 'ट्रेजडी' क्या है?
उत्तर– लेखक के अनुसार स्वातन्त्र्योतर भारत की सबसे बड़ी 'ट्रेजडी' है कि हमारे सत्ताधारियों का ध्यान प्रकृति, मनुष्य और संस्कृति के बीच के नाजुक सन्तुलन नष्ट होने से बचाए रखने की ओर नहीं गया है, यही ट्रेजडी है।

प्रश्न–18. प्रकृति के कारण विस्थापन और औद्योगीकरण के कारण विस्थापन में क्या अन्तर है?

GEOBINDER VALLABHNAGAR

उत्तर– बाढ़ या भूकम्प के कारण लोग सुरक्षा की दृष्टि से अपना घर–बार छोड़कर कुछ समय के लिए चले जाते हैं और आफत टलते ही दोबारा अपने परिवेश में, अपने घरों में लौट आते हैं, किन्तु औद्योगीकरण के कारण विस्थापित किए गए लोग फिर कभी अपने घर नहीं लौट पाते हैं।

प्रश्न–19. सिंगरौली क्षेत्र के प्राकृतिक सौन्दर्य को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर– सिंगरौली क्षेत्र की प्रकृति में पेड़ों के घने झुरमुट, साफ–सुथरे खप्पर लगे मिट्टी के झोंपड़े और पानी। चारों तरफ पानी। अगर मोटर–रोड की भागती बस की खिड़की से देखो, तो लगेगा जैसे समूची जमीन एक झील है, एक अंतहीन सरोवर, जिसमें पेड़, झोंपड़े, आदमी, ढोर–डॉगर आधे पानी में, आधे उपर तिरते दिखाई देते हैं, मानो किसी बाढ़ में सब कुछ डूब गया हो, पानी में धँस गया हो।

प्रश्न–20. लेखक के अनुसार आने वाले वर्षों में सिंगरौली क्षेत्र की स्थिति क्या होगी?

उत्तर– लेखक के अनुसार आने वाले वर्षों में सब कुछ मटियामेट हो जाएगा– झोंपड़ें, खेत, ढोर, आम के पेड़–सब एक गंदी, –आधुनिक' औद्योगिक कॉलोनी की ईटों के नीचे दब जाएगा– और ये हँसती मुस्कुराती औरतें, भोपाल, जबलपुर या ढ़न की सड़कों पर पत्थर कूटती दिखाई देगी। शायद कुछ वर्षों तक उनकी स्मृति में अपने गॉव की तस्वीर एक स्वप्न की तरह धुँधलाती रहेगी, किंतु धूल में लोटते उनके बच्चों को तो कभी मालूम भी नहीं होगा कि बहुत पहले उनके पुरखों का गॉव था– जहॉ आम झरा करते थे।

प्रश्न–21. जहॉ कोई वापसी नहीं पाठ का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– प्रस्तुत पाठ पर्यावरण तथा औद्योगीकरण से सम्बन्धित है। इसका प्रतिपाद्य यह है कि देष की प्रगति के लिए औद्योगीकरण जरूरी है, परन्तु औद्योगीकरण की अंधी दौड़ में प्राकृतिक सौन्दर्य को नष्ट करना तथा पर्यावरण को हानि पहुँचाना गलत योजना है। औद्योगीकरण से विस्थापित होने वालों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इस सम्बन्ध में सन्तुलन बनाये रखने की जरूरत है।

प्रश्न–22. सिंगरौली की सम्पदा ही उसके लिए अभिशाप बन गयी, सिद्ध कीजिए।

उत्तर– सिंगरौली की भूमि इतनी उर्वरा और घने जंगल अपने आप में इतने समृद्ध एवं वन सम्पदा से पूर्ण थे कि उनके सहारे शताब्दियों से हजारों वनवासी और किसानों ने अपने परिवार का भरण–पोषण किया है। आज सिंगरौली की वही अतुलनीय सम्पदा उसके लिए विकास के नाम पर अभिशाप बन गई। दिल्ली के सत्ताधारियों और उद्योगपतियों की ऑखों से सिंगरौली की अथाह सम्पदा छिप न सकी। सिंगरौली जो अब तक अपने सौन्दर्य के बेकुंठ और अकेलेपन के कारण कालापानी माना जाता था, वही प्रगति के मानचित्र पर राष्ट्रीय गौरव के साथ प्रतिष्ठित हुआ। विकास के खेल में प्रकृति और मानव का कितना विनाश हुआ, वह किसी ने नहीं देखा।

प्रश्न–23. लेखक के अनुसार सिंगरौली का ऐतिहासिक परिचय दीजिए।

उत्तर– लेखक के अनुसार 1926 से पूर्व यहॉ खैरवार जाति के आदिवासी राजा शासन करते थे, किंतु बाद में सिंगरौली का आधा हिस्सा, जिसमें उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश के खंड शामिल थे, रीवॉ राज्य के भीतर शामिल कर लिया गया। बीस वर्ष पहले तक समूचा क्षेत्र विंध्याचल और कैमूर के पहाड़ों और जंगलों से घिरा हुआ था, जहॉ अधिकांशतः कत्था, महुआ, बॉस और शीशम के पेड़ उगते थे। एक पुरानी दंतकथा के अनुसार सिंगरौली का नाम ही सृंगावली पर्वतमाला से निकला है।

पाठ 4 संवदिया

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों को हल कीजिए

1. **संवदिया कहानी के रचनाकार है–**
   अ. रामचन्द्र शुक्ल ब. निर्मल वर्मा स. फणीश्वर नाथ रेणु द. प्रेमचन्द (स)
2. **"और कितना कड़ा करूँ दिल ? माँ से कहना" ये शब्द किसने कहे ?**
   अ. बड़ी बहुरिया ने ब. हरगोबिन ने स. माँ ने द. देवरानी ने (अ)
3. **बड़ी बहुरिया के कितने देवर थे?**
   अ. चार ब. दो स. तीन द.एक (स)
4. **फणीश्वर नाथ "रेणु" का जन्म इस राज्य में हुआ–**
   अ. पंजाब ब.केरल स.राजस्थान द. बिहार (द)
5. **काबुल से कपड़ा लाकर गाँव में उधार बेचता था–**
   अ. मोहसिन ब.रहीम स.गुलमुहम्मद आगा द. आमिर (स)

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

CEO BHINDER VALLABHNAGAR

6. **संवदिया का क्या अभिप्राय है?**
उत्तर–किसी के द्वारा संदेश पहुँचाने के लिए बोले गये संवाद को उसी भाव में, उन्हीं शब्दों में अभिव्यक्त करने वाले संदेशवाहक को संवदिया कहते है।

7. **बड़ी बहुरिया की कैसी स्थिति थी?**
उत्तर–बड़ी बहुरिया अकेली,असहाय व दयनीय स्थिति में थी।

8. **फणीश्वर नाथ "रेणु" की दो महत्वपूर्ण रचनाओं के नाम लिखे।**
उत्तर–फणीश्वर नाथ "रेणु" की मेला आँचल और परती परिकथा महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं।

9. **हरगोबिन ने मोदिआइन के व्यवहार पर क्या किया?**
उत्तर–हरगोबिन ने मोदिआइन को खरी–खरी सुना दी।

10. **"नहीं माय जी ! जमीन–जायदाद कुछ कम नहीं।" ये शब्द किसनें किससे कहें?**
उत्तर–ये शब्द हरगोबिन ने बड़ी बहुरिया की माँ से कहे।

11. **बड़ी हवेली से बुलावा किसने, किसको तथा क्यों भेजा?**
उत्तर –बड़ी बहुरिया ने संवदिया हरगोबिन को अपना संदेश माँ तक पहुँचाने के लिये बुलावा भेजा।

लघुत्तरात्मक प्रश्न

12.काबुली की मरम्मत से संबंधित घटना को स्पष्ट कीजिये।

उत्तर –पाँच साल पहले काबुली से गुल मोहम्मद आगा ने गाँव में आकर मीठा–मीठा बोल बोल कर लोगों को उधार में कपड़ा बेच दिया। वसूली के समय जोर–जुल्म करने लगा। उसके बुरे व्यवहार से तंग आकर लोगों ने मिलकर उसकी पिटाई कर दी थी अर्थात मरम्मत कर दी थी।

13.संवदिया के बारे में लोगों के क्या विचार थे ?

उत्तर –संवदिया के बारे में लोग कहते हैं कि न तो इसका कोई आगे है न ही पीछे है। औरतों की मीठी बोली में आ जाता हैं, बिना मजदूरी लिये ही यह गाँव–गाँव संदेश पहुँचाता हैं। अतः निठल्ला, कामचोर और पेटू आदमी ही संवदिया का काम करता हैं।

14.मोदिआइन को काबुली नाम से चिढ़ क्यों थी?

उत्तर – काबुली गुल मुहम्मद आगा मोदिआइन के बरामदें में दुकान लगाता था। वह उधारी करता था। वसुली करते समय लोगों से जोर–जुल्म करता था। लोगों ने उसकी पिटाई करदी थी। मोदिआइन भी उसी की तरह वसूली करने लगी , तो लोग उसे काबुलीवाले का नाम लेकर चिढ़ाते तो बहुत चिढ़ने लगी।

15.हरगोबिन बड़ी बहुरिया का संवाद क्यों नहीं सुना सका ?

उत्तर –गाँव की लक्ष्मी के समान बड़ी बहुरिया के गाँव छोड़कर चले जाने पर विचार किया। जिस संवाद को सुनाने पर सुनने वाले उसके गाँव के नाम पर थुकेंगे, धिक्कारेंगे। इसलिये हरगोबिन गाँव के गौरव की रक्षा करने के विचार से दुखद संवाद को नहीं सुना सका।

16.बड़ी बहुरिया का संदेश पहुंचाने वाला संवाद क्या था?

उत्तर – "और कितना कड़ा करू दिल ?..... माँ से कहना मैं भाभियों की नौकरी करके पेट पालूंगी। बच्चों की झुठन खाकर एक कोने में पड़ी रहूँगी, लेकिन यहाँ अब नहीं रह सकूँगी। कहना यदि माँ मुझे यहाँ से नहीं ले जायेगी तो मैं किसी दिन गले में घड़ा बाँध कर पोखरे में डूब मरूँगी.....बथुआ साग खाकर कब तक जिऊँ ?किसलिए.....किसके लिये..... ।

17 हरगोबिन को हवेली से बुलावा आंने पर अचरज क्यों हुआ?

उत्तर – हरगोबिन ने सोचा आजकल गाँव–गाँव में डाकघर खुल चुके हैं। डाकघरों से चिठ्ठी–पत्री दुर–दुर तक भेजने और पाने की पूरी सुविधा हैं। तो कोई आज भी संवदिया के द्वारा संदेश क्यों भेजेगा। इसलिए हरगोबिन को अचरज हुआ।

पाठ -5 गाँधी, नेहरू और यास्सेर अराफात

CEO BHINDER VALLABHNAGAR

अतिलघुरात्मक प्रश्न–

प्र.1 भीष्म साहनी का जन्म कब और कहॉ हुआ?

उत्तर– भीष्म साहनी का जन्म रावलपिंडी शहर में सन् 1915 में हुआ।

प्र.2 'गॉधी, नेहरू और यास्सेर अराफत' संस्मरण के लेखक कौन है?

उत्तर– हिन्दी कथाकार, उपन्यासकार भीष्म साहनी इसके लेखक है।

प्र.3 भीष्म साहनी की आत्मकथा का शीर्षक क्या हैं?

उत्तर– 'आज के अतीत' भीष्म साहनी की आत्मकथा है।

प्र.4 लेखक की गॉधीजी से कहॉ मुलाकत हुई थी?

उत्तर– लेखक गॉधीजी से सेपाग्राम में मिले थे।

प्र.5 'उन दिनों में कितना काम कर लेता, थकता ही नहीं था।' यह किसने कहॉ?

उत्तर– यह गॉधीजी ने अपने सहयोगियों से कहॉ जब वे टहलने जाते थे।

प्र.6 सेवाग्राम में रहते हुए लेखक किन–किन देश भक्तों से मिला?

उत्तर– पृथ्वीसिंह आजाद, मीरा बेन, खान अब्दुल गफ्फार खान और राजेन्द्र बाबू से मिले।

प्र.7 काश्मीर में नेहरूजी को किसके बंगले पर ठहराया गया था?

उत्तर– काश्मीर में नेहरूजी को लेखक भीष्म साहनी के फुफेरे भाई के बंगले पर ठहराया गया था।

प्र.8 अफ्रो–एशियाई लेखक संघ का सम्मेलन कहाँ हुआ था?

उत्तर– ट्यूनिसिया की राजधानी ट्यूनिस में सम्मेलन हुआ था।

प्र.9 ट्यूनिस में कौनसी पत्रिका का कार्यालय हुआ करता था?

उत्तर– ट्यूनिस में लेखक संघ की पत्रिका 'लोटस' का कार्यालय हुआ करता था।

प्र.10 लेखक ने यास्सेर अराफत के किस स्वभाव की प्रशंसा की है?

उत्तर– लेखक ने यास्सेर अराफत के अतिथि–सत्कार भाव की प्रशंसा की हैं।

प्र.11 यास्सेर अराफत किस हिन्दू नेता को अपना मानते थे?

उत्तर– वे गॉधीजी को अपना आदरणीय नेता मानते थे।

प्र.12 लेखक सेवाग्राम कब गये थे?

उत्तर– लेखक सन् 1938 के आसपास सेवाग्राम गये थे।

प्र.13 लेखक का गॉधीजी के साथ चलने का पहला अनुभव किस प्रकार का रहा?

उत्तर– लेखक अपने भाई के साथ तेजी से चलकर गॉधीजी से मिला। उस समय लेखक को गॉधीजी के साथ चलने का पहला अनुभव अतीव मनोरंजक और सुखद लगा।

प्र.14 लेखक को गॉधीजी से मिलने का किसने उपाय बताया था?

उत्तर– लेखक को गॉधीजी से मिलने का उपाय उनके बड़े भाई बलराज ने बताया था।

प्र.15 लेखक सेवाग्राम क्यों गया था?

उत्तर– लेखक के बड़े भाई बलराज साहनी सेवाग्राम में 'नयी–तालीम' पत्रिका के सह–सम्पादक के रूप में काम कर रहे थे। लेखक बड़े भाई के पास कुछ दिन बिताने के लिए सेवाग्राम गये थे।

प्र.16 किसके नेतृत्व में शोभायात्रा का आयोजन हुआ?

उत्तर– शेख अब्दुल्ला के नेतृत्व में शोभायात्रा का आयोजन हुआ।

प्र.17 अफ्रो–एशियाई लेखक संघ में कार्यकारी मन्त्री कौन था?

उत्तर– अफ्रो–एशियाई लेखक संघ में कार्यकारी मन्त्री लेखक भीष्म साहनी था।

प्र.18 भीष्म साहनी ने कितनी पुस्तकों का अनुवाद किया?

CBEO BHINDER VALLABHNAGAR

उत्तर– उन्होंने लगभग दो दर्जन रूसी पुस्तकों का अनुवाद किया।

प्र.19 भीष्म–साहनी को कौनसे पुरस्कार से सम्मानित किया?

उत्तर– उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा शलाका सम्मान से सम्मानित किया गया।

प्र.20 भीष्म साहनी का निधन कब हुआ?

उत्तर– भीष्म साहनी का निधन सन् 2003 में हुआ।

लघुतरात्मक प्रश्न–

प्र.21 लेखक को गॉधीजी से मिलने का किसने और क्या उपाय बताया था?

उत्तर– सेवाग्राम में पहुंचकर लेखक की गॉधीजी को देखने की इच्छा स्वाभाविक थी। उनके बड़े भाई बलराज ने बताया था कि गॉधीजी प्रातः सात बजे घूमने निकलते हैं और हमारे क्वार्टर के सामने से ही जाते हैं। तुम चाहो तो उनके साथ घूमने जा सकते हो।

प्र.22 लेखक को बचकाना–सी हरकत क्यों सूझी?

उत्तर– लेखक बरामदे की तिपाई से अखबार उठाकर पढ़ने लगे। उन्हें लगा कि नेहरूजी सीढ़ियों से उतरकर आ रहे हैं। उन्होंने फैसला किया कि वह अखबार पढ़ते रहेंगे और तभी नेहरूजी के हाथ में देंगे जब वे मॉगेंगे। कम–से–कम एक छोटा–सा वार्तलाप तो इस बहाने हो ही जाएगा।

प्र.23 काश्मीर में लेखक का नेहरूजी से पास जाकर मिलना किस प्रकार संभव हुआ?

उत्तर– काश्मीर यात्रा पर आये नेहरूजी लेखक के फुफेरे भाई के बंगले पर ठहरे थे। उनकी खातिरदारी में हाथ बॅटाने के लिए फुफेरे भाई ने भीष्म को बुला लिया था। इस कारण नेहरूजी जब शाम को खाने पर बैठे, तब और लोगों के साथ लेखक भी वहॉ जा बैठे। इस प्रकार लेखक को नेहरूजी को नज़दीक से देखने का सुनहरा मौका मिला।

प्र.24 गॉधीजी के आश्रम में आने वाले भिक्षु के बारे में बतलाइये।

उत्तर– एक जापानी भिक्षु भी अपने चीवर वस्त्रों में आश्रम की प्रदक्षिणा किया करता था। वह बार–बार अपना 'गॉग' बजाता हुआ आगे बढ़ता जाता था। गॉग की आवाज दिन में अनेक बार सुनाई देती थी। उसकी प्रदक्षिणा प्रार्थना के समय समाप्त होती थी। तब वह प्रार्थना स्थल पर पहुँचकर आदरभाव से गॉधीजी को प्रणाम करता था और एक ओर बैठ जाता था।

प्रश्न 25. अख़बार वाली घटना से नेहरू जी के व्यक्तित्व की कौन सी विशेषता स्पष्ट होती है?

उत्तर: अख़बार वाली घटना के माध्यम से हमें नेहरू जी के व्यक्तित्व में सहनशीलता, मितभाषी और शालीनता के होने का पता चलता है। अख़बार वाली घटना यह है कि लेखक नेहरू जी के पढ़े हुए अख़बार को पढ़ रहा था। लेखक ने ऐसा इसलिए किया क्योंकि उसको लगा कि नेहरू जी उससे अख़बार वापस मांगेंगे तो वह उनसे बात करेगा। जब नेहरू जी वापस आए तो उन्होंने देखा कि लेखक अख़बार पढ़ रहे थे। उन्होंने बड़ी विनम्रतापूर्वक लेखक से पूछा कि आपने अख़बार पढ़ लिया हो तो मुझे दे दीजिए मै भी पढ़ लूंगा। यह सुनकर लेखक को बहुत खुशी हुई।

प्रश्न 26. फिलिस्तीन के प्रति भारत का रवैया बहुत सहानभूतिपूर्ण एवं समर्थन भरा क्यों था?

उत्तर: भारत ने फिलिस्तीन को हमेशा सहानभूति और समर्थन दिखाया है क्योंकि कोई अन्य देश उसके विकास के समर्थन में नहीं था। फिलिस्तीन के लोग बहुत ही अच्छे स्वभाव के थे और सभी के साथ विनम्रतापूर्वक बात करते थे। इसलिए भारत का रवैया फिलिस्तीन के प्रति अच्छा था।

प्रश्न 27. अराफात के आतिथ्य प्रेम से संबन्धित किन्हीं दो घटनाओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर: अराफात के आतिथ्य प्रेम से संबन्धित दो घटनाएँ इसप्रकार हैं:-

1. अराफात बड़े ही प्रेम के साथ सभी से शहद का शरबत पीने को कह रहे थे।
2. उनका आतिथ्य प्रेम इतना था कि वह सभी को अनूठा फल खिला रहे थे और शहद की चटनी के बारे में भी बता रहे थे।

प्रश्न 28. अराफात ने ऐसा क्यों बोला की 'वे आपके ही नहीं हमारे भी नेता हैं उतने ही आदरणीय जितने आपके लिए।' इस कथन के आधार पर गाँधी जी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।

CBSE BHINDER VALLABHNAGAR

उत्तर: अराफात ने बोला कि गाँधी जी बस आपके नेता नहीं हैं, वह हम सभी के नेता हैं। अराफात ने यह कहकर गाँधी जी के व्यक्तित्व को दर्शाया है। गाँधी जी से प्रभावित होकर अन्य लोगों ने भी उनकी शिक्षा को अपनाया और उनसे ही कई नेताओं ने अहिंसावाद के बारे में जाना।

पाठ 6 सुमिरिनी के मनके

प्रश्न 1. 'सुमिरिनी के मनके ' शीर्षक पाठ के लेखक कौन है?
उत्तर ' सुमिरिनी के मनके ' शीर्षक पाठ के लेखक पंडित चन्द्रधर शर्मा गुलेरी है।
प्रश्न 2. ' सुमिरिनी के मनके 'शीर्षक पाठ किस विधा में लिखा गया है?
उत्तर 'सुमिरिनी के मनके ' शीर्षक पाठ निबन्ध विधा में लिखा गया है।
प्रश्न 3. लेखक 'गुलेरी' द्वारा रचित रचनाएँ किन–किन पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई है?
उत्तर पंडित गुलेरी द्वारा रचित रचनाएँ समालोचक, मर्यादा प्रतिभा और नगरी प्रचारिणी पत्रिका में प्रकाशित हुई है।
प्रश्न 4. लेखक 'गुलेरी 'द्वारा रचित प्रमुख कहानियाँ कौनसी है?
उत्तर पंडित गुलेरी ने 'सुखमय जीवन', 'बुद्ध का काँटा,' और 'उसने कहाँ था' ये तीन कहानियाँ लिखी।
प्रश्न 5. 'बालक बच गया' निबन्ध का मूल प्रतिपाद्य क्या है?
उत्तर 'बालक बच गया' निबन्ध का मूल प्रतिपाद्य शिक्षा ग्रहण की सही उम्र तथा रटन प्रवृति शिक्षा की दोषपूर्ण प्रणाली है।
प्रश्न 6. 'बालक बच गया' निबन्ध में लेखक ने किस पर व्यंग्य किया है?
उत्तर लेखक गुलेरी ने अपने समय की शिक्षा प्रणाली और शिक्षकों की मानसिकता पर व्यंग्य किया है।
प्रश्न 7. 'घड़ी के पुर्जे' निबन्ध का मूल उद्देश्य क्या है?
उत्तर 'घड़ी के पुर्जे ' निबन्ध का मूल उद्देश्य धर्म के रहस्यों को जानने पर धर्म उपदेशकों द्वारा लगायें गए प्रतिबन्धों को घड़ी के दृष्टान्त द्वारा प्रस्तुत करना है।
प्रश्न 8. 'ढ़ेले चुन लो' निबन्ध में लेखक ने किस विषय पर प्रकाश डाला है?
उत्तर 'ढ़ेले चुन लो' निबन्ध में लेखक ने लोक विश्वासों में निहित अन्धविश्वासी मान्यताओं पर चोट की है।
प्रश्न 9. 'बालक बच गया ' निबन्ध में बालक ने इनाम में क्या माँगा?
उत्तर 'बालक बच गया ' निबन्ध में बालक ने इनाम में लड्डू माँगा।
प्रश्न 10. 'शेक्सपीयर ' के किस प्रसिद्ध नाटक में पोर्शिया अपना वर बड़ी सुन्दर रीति से चुनती है?
उत्तर 'शेक्सपीयर' के किस प्रसिद्ध नाटक मर्चेन्ट ऑफ वेनिस में पोर्शिया अपना वर बड़ी सुन्दर रीति से चुनती है।
प्रश्न 11. वैदिकाल में हिन्दुओं में पत्नीवरण के लिए कौनसी प्रथा मान्य थी?
उत्तर वैदिकाल में हिन्दु मिट्टी के ढ़ेले छुआकर स्वंय पत्नीवरण करते थे।
प्रश्न 12. 'मिस्टर हादी के कोल्हू की तरह ' की उपमा लेखक ने किसे दी है?
उत्तर लेखक ने वार्षिकोत्सव में प्रधानाध्यापक के आठ वर्षीय पुत्र को मिस्टर हादी के कोल्हू की तरह की उपमा दी है। जो रटन प्रवृति का अनवरत प्रदर्शन कर रहा था।
प्रश्न 13. बालक द्वारा इनाम में लड्डू मांगने पर लेखक ने सुख की साँस क्यों भरी?
उत्तर बालक द्वारा इनाम में लड्डू मांगने पर लेखक ने सुख की साँस भरी क्योंकि जो आठ वर्षीय बालक अपनी उम्र और योग्यता से ऊपर के प्रश्नों के रटे रटाए उत्तर दे रहा था, उसने जब इनाम में कुछ सकोंच करते हुए लड्डू मांगा तो लेखक को लगा कि अभी बालक की सभी इच्छाओं का गला नहीं घोटा गया है। अभी बालक को शिक्षा देने, उसकी छिपी हुई प्रवृतियों, क्षमताओं को विकसित करने की संभावना विद्यमान है।
प्रश्न 14.''बालक बच गया। उसके बचने की आशा है क्योंकि वह लड्डू की पुकार जीवित वृक्ष के हरे पत्तों का मधुर मर्मर था, मेरे काठ की अलमारी की सिर दुखाने वाली खडखडाहट नहीं'' कथन के आधार पर बालक की स्वभाविक प्रवृतियों का उल्लेख कीजिए।
उत्तर बालक की स्वभाविक प्रवृति उसका कोमल व सरल स्वभाव है माता–पिता की आकांक्षाएँ और नवीन शिक्षा पद्धति ने बच्चों से उनका स्वभाविक बचपन छीन लिया है उक्त स्थिति में भी यही वर्णन है। कम उम्र वाले बच्चों से उसकी आयु स्थिति के विपरित भारी भरकम सवाल पूछे जाते है, जिनका वह रटा रटाया जवाब देता है, लेकिन जब उससे उसकी रूचिअनुसार सवाल पूछा जाता है तो वह कुछ भ्रमित होकर सरल इच्छा प्रकट करता है, जिसे सुनकर लेखक प्रसन्न होता

GEC BHAVNAGAR VALLABHNAGAR

है। लड्डू की इच्छा हरे भरे कोमल वृक्ष के पत्तों के समान है जिसमें ऊपर उठने की स्वभाविक इच्छा है और जो जीवन से परिपूर्ण होकर अपनी गति से फलने फूलने का सामर्थ्य रखते है निर्जीव काठ की अलमारी समान यन्त्रवत कार्य कर सिर दुखाने वाली खडखडाहट उत्पन्न नहीं की। अतः लेखक बालक की जीवित स्वभाविक वृति देखकर प्रसन्न हुआ।

प्रश्न 15. 'बालक बच गया' कहानी के माध्यम से क्या संदेश दिया गया है?

उत्तर 'बालक बच गया' कहानी के माध्यम से यह संदेश दिया गया है कि शिक्षा ग्रहण करने की सही उम्र होने पर ही बालक पर शिक्षा का भार डालना चाहिए। शिक्षा का उद्देश्य 'रटने की प्रवृति' नहीं होना चाहिए, अपितु शिक्षा का उद्देश्य बालक का शारारिक, मानसिक, तथा मूल प्रवृतियों का विकास होना चाहिए।

प्रश्न 16. 'बालक बच गया' निबन्ध की मूल संवेदना पर प्रकाश डालते हुए, लेखक के शिक्षा सम्बन्धी विचारों को प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर वर्तमान समय में बच्चें रटकर परीक्षा उर्तीण हो जाते है। इस रटन प्रवृति के कारण व्यवहारिक जीवन में उस शिक्षा का उपयोग सहीं रूप में नहीं कर पाते। लेखक वर्तमान शिक्षा पद्धति के इस विकृत रूप को घातक मानते है। उनके अनुसार धर्म, विज्ञान, प्रकृति या पुराण शिक्षा का कोई भी विषय क्यों ना हो, ठोस शिक्षा एवं उनका गूढ अर्थ ही बच्चे के व्यक्तित्व के लिए आवश्यक है, शिक्षा बच्चे पर लादनी नहीं चाहिए बल्कि उसके मानस में शिक्षा की रूचि पैदा करने वाले बीज डाले जाने चाहिए। लेखक बच्चों को उस फल के समान बताते है ' जो सहज पके सो मीठाा होये' के समान हो, यह स्थिति लेखक बच्चों के मस्तिष्क की मानते है।

प्रश्न 17. निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए–

I. '' वेदशास्त्रज्ञ धर्माचार्यो का ही काम है कि घड़ी के पुर्जे जानें, तुम्हें इससे क्या''?

उत्तर लेखक ने अपने मत के समर्थन में घड़ी का दृष्टान्त दिया है। व्यक्ति घड़ी का उपयोग उससे समय देखने उन्हें जानने के लिए करता है। घड़ी के पुर्जे देखने उन्हें ठीक करने से उसका सम्बन्ध नहीं है। इसी तरह उपदेशक द्वारा दिए गए धार्मिक उपदेशक को मानना, उसके अनुसार आचरण करना यही र्प्याप्त है। धर्म का रहस्य जानने की उसे आवश्यकता नहीं है। धर्म का रहस्य जानने का क्षेत्र वेदशास्त्र के सत्ता धर्माचार्यो का है।

II. '' अनाड़ी के हाथ में चाहे घड़ी मत दो पर जो घड़ीसाजी का इम्तहान पास कर आया है, उसे तो देखने दो

उत्तर लेखक गुलेरी के अनुसार आम आदमी को धर्म का रहस्य जानने की इच्छाा नहीं करनी चाहिए, उसे तो केवल उपदेशों का ही पालन करना चाहिए अज्ञानी को नहीं परन्तु धर्म के ज्ञाता को धर्म का रहस्य जानने और जिज्ञासा व्यक्त करने का अधिकार मिलना चाहिए। घड़ीसाजी की जानकारी रखने वालो को तो घड़ी के पुर्जे देखने, उन्हें ठीक करने की अनुमति देनी चाहिए, इससे घड़ी का प्रयोजन और घड़ीसाज की अर्थवता मजबूत होती है।

III. '' हमें तो धोखा होता है कि परदादा की घडी जेब में डाले फिरते हो, वह बन्द हो गई है, तुम्हें न चाबी देना आता है न पुर्जे सुधारना, तो भी दूसरों को हाथ नहीं लगाने देते''।

उत्तर उक्त कथन उन धर्मोपदेशको के बारे में है जो सतयुगी मान्यता का हवाला देकर श्रोताओं से कहते है कि आपका काम धर्मोपदेश सुनना है, जिज्ञासा व्यक्त करना या धर्म का रहस्य जानना नहीं, ऐसे व्यवहार से उपदेशक के ज्ञान के बारे में ही आशंका होने लगती है। सम्भवतः वे ही धर्म का रहस्य न जानते हो। बन्द घड़ियों की तरह वे केवल रूढ़ियों के समान चलते है। न स्वंय रूढ़ियों से मुक्त हो पाते है और न ही दूसरो को मुक्ति का रास्ता दिखा पाते है।

प्रश्न 18. '' घड़ी के पुर्जे '' कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर '' घड़ी के पुर्जे '' कहानी का उद्देश्य यह है कि समाज में धर्मोपदेशक केवल यहीं चाहते है कि जनसाधारण केवल उनके उपदेशो को सुनो, धर्म का रहस्य जानने की चेष्टा ना करे। अपने कथन के सर्मथन में वे घड़ी का उदाहरण देते है कि घड़ी के समय जान लो, परन्तु घड़ी के पुर्जे खोलने या जोड़ने की कोशिश मत करो, क्योंकि यह काम घड़ीसाज का है। परन्तु धर्म का मुल रहस्य जानने का अधिकार सभी का है, उसका रहस्य आम आदमी को ज्ञात होना चाहिए। जिससे धर्म तत्व को जीवन में उतार कर अपना जीवन सुखमय बना सके।

प्रश्न 19. जन्मभर के साथी का चुनाव मिट्टी के ढेले पर छोडना बुद्धिमानी नहीं है इसलिए बेटी का शिक्षित होना अनिवार्य है। ' बेटी बचाओं बेटी पढाओं ' के सन्दर्भ में अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर बेटियों को बचाने ओर उन्हें शिक्षित करने हेतु यह ' बेटी बचाओं बेटी पढाओं ' योजना प्रासांगिक है। शिक्षा मस्तिष्क का विकास करती है समझ विकसित करती है एवं सही मार्ग का चुनाव करने में सहायता प्रदान करती है लडकी या बेटी शिक्षित होने पर परिवार स्वतः ही शिक्षा के महत्व से अवगत हो जाता है और समाज में स्त्री व पुरूष दोनो के ही शिक्षित होने से देश की प्रगति का मार्ग स्वतः ही प्रशस्त हो जाएगा। शिक्षित लडकी कभी भी अपने जीवन साथी का चुनाव मिट्टी के ढेलो पर ना छोड़कर अपनी रूचि, समझ,व संस्कारों के आधार पर करेगी। समाज की झूठी परम्पराओं का विरोध कर उन्हें समाप्त करेगी तथा शिक्षित नारी ही देश को बुलन्दी पर पहुँचाने में मील के पत्थर साबित होगी।

CBO BHINDER VALLABHNAGAR

प्रश्न 20. आशय स्पष्ट कीजिए–

अपनी आँखो से जगह देखकर अपने हाथ से चुने हुए मिट्टी के डगलो पर भरोसा करना क्यों बुरा है और लाखों करोड़ो कोस दूर बैठे बडे–बडे मट्टी और आग के ढेलो–मंगल, शनिचर और बृहस्पति की कल्पित चाल के कल्पित हिसाब का भरोसा करना क्यों अच्छा है?

उत्तर पंडित गुलेरी के अनुसार वैदिकाल में विभिन्न स्थानों से मिट्टी के ढ़ेले लाकर उनके चयन के आधार पर जीवन साथी चुना जाता था जो कि दोषपूर्ण प्रथा थी। ढेलो के आधार पर जो परख होगी वह सही और विश्वास योग्य नहीं होगी। क्योंकि एक बार एक व्यक्ति उन ढेलो के आधार पर लडकी को चुने जाने के अयोग्य सिद्ध कर सकता है। दूसरा यही ढंग अपनाए तब हो सकता है लडकी शमशान की मिट्टी न छूकर वेदी की मिट्टी छू लेने से गुणवत्ती मान ली जाए। इस तरह परख के लिए ढेले विश्वसनीय नहीं हो सकते। दूसरी और लाखौ करोड़ो कोस दूर स्थित मंगल, बुध, गुरू आदि ग्रह जो आग और मिट्टी के ही ढेले है, उनकी कल्पित चाल या ग्रह गति का हिसाब लगाकर वर कन्या का चयन किया जाता है, उस पर कुछ विश्वास किया जा सकता है, परन्तु उसी को आधार मानना भी बुद्धिमानी नहीं है। अतः हमें जीवन साथी का सही चुनाव करते समय उसके गुणो को ही प्राथमिकता देनी चाहिए।

प्रश्न 21. ' ढेले चुन लो ' निबन्ध की मूल संवेदना व्यक्त कीजिए।

उत्तर पंडित गुलेरी द्वारा रचित यह निबन्ध 'ढेले चुन लो ' लोकजीवन में व्याप्त अंधविश्वासो पर व्यंग्य करता है। इस अंधविश्वास में लोग अपने जीवन साथी का चुनाव सोने, चाँदी व लोहे की पेटियों तथा विभिन्न प्रकार की मिट्टी के ढेलो के आधार पर करते है जो कि एक अंधविश्वास मात्र है, जिनका कोई वैज्ञानिक तथ्य नहीं है। जो समाज की दृष्टि से हितकारी भी नहीं है। लेखक का मानना है कि भविष्य की नींव कल्पना मात्र पर ना टिकाकार मजबूत धरती पर टिकानी चाहिए। वर्तमान के सत्य को अनदेखा ना करते हुए भविष्य की कल्पना को ही केवल सत्य नहीं मान लेना चाहिए। वर्तमान समाज अपने आप को आधुनिक कहते हुए भी कोरी कल्पना (जन्मपत्री, ग्रह नक्षत्र की चाल के आधार पर सुखद भविष्य का जो महल बनता है वो समय की आंधी (दुखः) से शीर्घ ही तहस– नहस हो जाता है। अतः लेखक के अनुसार हमें विचारों से धरातल पर रहते हुए उन्हें आधुनिक बनाना चाहिए। तभी सुखद भविष्य सुनहरा सपना साकार होगा।

प्रश्न 22. ' पंडित चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ' का साहित्यक परिचय दीजिए।

उत्तर ' पंडित चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ' का जन्म पुरानी बस्ती जयपुर में हुआ। गुलेरी जी बहुभाषाविद् संस्कृत, पाली प्राकृत, अपभ्रंश, ब्रज, अवध, मराठी, गुजराती, राजस्थानी, पंजाबी, बांगला के साथ अंग्रेजी लैटिन तथा फ्रेंच आदि भाषाओं में भी उनकी अच्छी गति थी वे संस्कृत के पंडित थे। उनकी गहरी रूचि भाषा विज्ञान में थी। उनकी सृजनशीलता का प्रकाशन समालोचक, मर्यादा, प्रतिभा और नागरी प्रचारिणी पत्रिका में हुआ। उत्कृष्ट निबन्धों के अतिरिक्त तीन कहानियाँ– सुखमय जीवन, बुद्ध का काँटा व उसने कहाँ था भी उन्होंने हिन्दी साहित्य जगत को दी। उन्हें इतिहास दिवाकर की उपाधि से भी सम्मानित किया गया।

पाठ 7 प्रेमघन की छाया स्मृति

(1) प्रेमघन की छाया स्मृति पाठ के लेखक हैं

(अ) रामचंद्र शुक्ल

(ब) जैनेंद्र

(स) नागार्जुन

(द) प्रेमचंद। (अ)

(2) आचार्य रामचंद्र शुक्ल का जन्म स्थान है–

(अ) गुजरात

(ब) उत्तर प्रदेश

(स) दिल्ली

(द) मध्य प्रदेश। (ब)

3– प्रेमघन की छाया स्मृति पाठ किस विधा में रचित है

(अ) कहानी

(ब) निबंध

(स) कविता

(द) नाटक। (ब)

4– प्रेमघन का पूरा नाम क्या है?

(अ) हरीश चंद्र(ब) वैद्यनाथ मिश्र

(स) इलाचंद्र जोशी(द) बद्रीनारायण चौधरी। (द)

5– लेखक के पिताजी की बदली कहां हुई थी?

CEO BHINDER WAL LABHNGAR

(अ) आगरा
(ब) दिल्ली
(स) मिर्जापुर
(द) कोलकाता। (स)
6– लेखक के पिता रात के समय घर के लोगों को एकत्र करके रोचक ढंग से क्या पढ़ा करते थे?
(अ) रामचरितमानस
(ब) रामायण
(स) रामचंद्रिका
(द) रामचरितमानस और रामचंद्रिका (द)
7– आचार्य रामचंद्र शुक्ल का बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'से परिचय कहां हुआ?
उत्तर आचार्य रामचंद्र शुक्ल का बद्रीनारायण चौधरी प्रेमघन से परिचय मिर्जापुर में हुआ।
8– शुक्ल जी के सम वयस्क मित्रों की हिंदी प्रेमी मंडली का नाम लोगों ने क्या रख दिया था?
उत्तर–शुक्ल जी के सम वयस्क मित्रों के हिंदी प्रेमी मंडली का नाम लोगों ने निसंदेह लोग रख दिया था।
9– शुक्ल जी ने अपने पिता के बारे में क्या बताया?
उत्तर–शुक्ल जी ने अपने पिता के बारे में बताया कि वह फारसी के अच्छे ज्ञाता और पुराने हिंदी कविता के प्रेमी थे।
10–लेखक की बाल बुद्धि किस में कोई भेद नहीं कर पाती थी?
उत्तर–सत्यवादी हरिश्चंद्र नाटक के नायक राजा हरिश्चंद्र एवं कवि हरीश चंद्र में लेखक की बाल बुद्धि कोई भेद नहीं कर पाती थी।
11–''लताऋ प्रतान के बीच एक मूर्ति खड़ी दिखाई पडी ''
यह मूर्ति किसकी थी?
उत्तर– लता प्रतान के बीच एक मूर्ति खड़ी थी वाह चौधरी बद्रीनारायण प्रेमघन की थी।
12–लेखक का हिंदी साहित्य के प्रति झुकाव किस तरह बढ़ता गया?
उत्तर– लेखक के सयाना होने पर हिंदी साहित्य की और उनका झुकाव बढ़ता गया। उनके पिता साहित्य प्रेमी थे भारतीय जीवन प्रेस की किताबें उनके यहां आया करती थी । साथ ही मिर्जापुर में केदारनाथ पाठक ने एक पुस्तकालय खोल रखा था जहां से शुक्ला जी किताबें लाकर पढ़ा करते थे।
13–सम वयस्क हिंदी प्रेमियों की मंडली में कौन कौन से लेखक मुख्य थे?
उत्तर–बचपन में आचार्य रामचंद्र शुक्ल के सम वयस्क हिंदी प्रेमियों की मंडली मै श्रीयुत काशी प्रसाद जायसवाल, बाबू भगवान दास जी हालना, पंडित बद्रीनाथ गौड़ और उमाशंकर द्विवेदी प्रमुख थे।
14–लेखक ने अपने पिताजी के बारे में क्या–क्या विशेषताएं बताई?
उत्तर–लेखक रामचंद्र शुक्ल ने अपने पिताजी के बारे में निम्नलिखित विशेषताओं का वर्णन किया है
1–वे फारसी के अच्छे ज्ञाता और पुरानी हिंदी कविता के बड़े प्रेमी थे।
2–फारसी कवियों की युक्तियों को हिंदी कवियों की युक्तियों के साथ मिलाने में बड़ा आनंद आता था।
3–वह रात को घर के सभी सदस्यों को एकत्र करके रामचरितमानस (तुलसीदास) व रामचंद्रिका(केशव दास) बड़े चित आकर्षक ढंग से पढ़ कर सुनाया करते थे।
15–बद्रीनारायण चौधरी से संपर्क बढ़ने पर शुक्ल जी को क्या पता चला?
उत्तर–शुक्ल जी ने लेखक की हैसियत से बद्री नारायण चौधरी के यहां आने जाने लगे थे। तब उन्हें पता चला कि चौधरी साहब एक अच्छे खासे हिंदुस्तानी रईस हैं ।बसंत पंचमी , होली के अवसर पर उनके घर नाच रंग की महफिल सजती है। वह लंबे बाल रखने के शौकीन हैं उनकी बातें मनोरंजक होती हैं वह घर में स्थानीय भाषा बोलते हैं वे विनोदी स्वभाव के हैं।
16–'चौधरी बद्रीनारायण दृढ़ मान्यता वाले व्यक्ति थे।''इस कथन को पुष्ट करने के लिए पाठ में आए प्रसंग तर्क सहित प्रस्तुत कीजिए।
उत्तर–चौधरी साहब दृढ़ मान्यता वाले व्यक्ति थे और अपनी मान्यताओं को तर्क से पुष्ट करते थे वह नागरी लिपि ना मानकर भाषा मानते थे और कहते थे कि'' नागर अपभ्रंश से जो शिष्टलोगों की भाषा विकसित हुई वही नागरी कहलाई।''इस प्रकार वे मिर्जापुर को मीरजापुर लिखा करते और उसका अर्थ करते थे लक्ष्मीपुर।इस संबंध में तर्क देते कि मीर= समुद्र जा=पुत्री अतःमीरजापुर का अर्थ हुआ समुद्र की पुत्री(लक्ष्मी) का पर अर्थात लक्ष्मीपुर।
17–बद्रीनारायण चौधरी के स्वभाव की तीन विशेषताएं बताइए जो इस पाठ से सामने आती हैं।
उत्तर–(1) बद्रीनारायण चौधरी एक हिंदुस्तानी रईस थे अतः रईसी तबीयत और रियासत उनकी हर अदा से व्यक्त होती थी। वे इतने आराम तलब और नौकरों पर निर्भर रहने वाले व्यक्ति थे की जलती भभकती लैंप के बत्ती को स्वयं कम कर देने की जगह नौकरों को आवाज देते थे भले ही चिमनी टूट क्यों न जाए।
(2) वह काव्यप्रेमी रसिक स्वभाव के बन ठन के रहने वाले व्यक्ति थे।

CBSE BHINDER VALLABHNAGAR

(3) वे अपनी दृढ़ मान्यताओं के लिए भी जाने जाते थे नागरी कोलिपि ना मानकर भाषा मानते थे और मिर्जापुर को मिराजापुर लिखते थे तथा उसका अर्थ करते हुए मीर =समुद्र जा =पुत्री अतः मिर्जापुर समुद्र की पुत्री(लक्ष्मी) का पूर लक्ष्मीपुर।
18–वामन आचार्य गिरी कौन थे? उनकी चौधरी साहब से क्या बात हुई?
उत्तर– वामन आचार्य गिरी मिर्जापुर में पुरानी परिपाटी के बहुत ही प्रतिभाशाली कवि थे। एक दिन वह सड़क पर चौधरी साहब के ऊपर एक कविता जोड़ते चले जा रहे थे ।अंतिम चरण रह गया था कि चौधरी साहब अपने बरामदे में कंधों पर बाल छिटकाए हैखंभे के सहारे खड़े दिखाई पड़े। वामन जी ने चौधरी साहब को नीचे से अपने कविता के जरिए ललकारा ''खंभा टेकी खड़ी जैसे नारी मुगलन की।
19– रामचंद्र शुक्ल का लेखक परिचय लिखिए।
उत्तर– आचार्य रामचंद्र शुक्ल का जन्म सन 1884 में उत्तर प्रदेश के बत्तीजिले के अगोना गांव में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा उर्दू अंग्रेजी व फारसी भाषा में हुई थी। उनकी विधिवत शिक्षा इंटरमीडिएट तक ही हो पाई बाद में उन्होंने स्वाध्याय द्वारा संस्कृत अंग्रेजी बांग्ला और हिंदी के प्राचीन तथा नवीन साहित्य का गंभीरता से अध्ययन किया सन 1905 में वे काशी नागरी प्रचारिणी सभा में हिंदी शब्द सागर के निर्माण कार्य में सहायक संपादक के पद पर नियुक्त होकर काशी आ गए और बाद में काशी हिंदी विभाग के अध्यक्ष पद पर कार्य करते रहे।
20–आचार्य रामचंद्र शुक्ल का साहित्यिक परिचय लिखिए ।
उत्तर– साहित्यिक परिचयआचार्य रामचंद्र शुक्ल उच्च कोटि के आलोचक ,निबंधकार, साहित्य चिंतक एवं इतिहास लेखन के रूप में जाने जाते हैं उन्होंने अपने मौलिक लेखन संपादन ,
अनुवादो से हिंदी साहित्य में पर्याप्त वृद्धि की।
भाषाऋआचार्य शुक्ल ने संस्कृत तत्सम शब्दावली युक्त तथा मुहावरेदार परिष्कृत खड़ी बोली हिंदी का प्रयोग किया है। आवश्यकता अनुसार वे अपनी भाषा में अंग्रेजी और फारसी के प्रचलित शब्दों का प्रयोग भी करते हैं।
शैली शुक्ल जी की गद्य शैली विवेचनात्मक है जिसमें विचार प्रधानता सूक्ष्म तर्क योजना व्यंगऋ विनोद का भी योगदान।
प्रमुख कृतियांऋचिंतामणि, रस मीमांसा (निबंध), हिंदी साहित्य का इतिहास,(इतिहास) तुलसीदास, सूरदास ,त्रिवेणी (समालोचना) जायसी ग्रंथावली, भ्रमरगीत सार, हिंदी शब्द सागर, काशी नागरी प्रचारिणी पत्रिका है।

पाठ -8 "यथास्मै रोचते विश्वम्"

प्रश्न 1 – "यथास्मै रोचते विश्वम्" पाठ का अर्थ बताइए।
उत्तर– कवि को जैसा रूचता है वह संसार को वैसा ही बदल देता है।
प्रश्न 2 – "यथास्मै रोचते विश्वम्" निबन्ध के रचयिता का नाम बताइए।
उत्तर– रामविलास शर्मा
प्रश्न 3 – "साहित्य समाज का दर्पण है" यह कथन किस विद्वान का है?
उत्तर– महावीर प्रसाद द्विवेदी
प्रश्न 4 – "पांचजन्य समर" से लेखक का क्या तात्पर्य है?
उत्त्र– अधर्म पर धर्म की विजय हेतु श्री कृष्ण ने पांचजन्य शंख से युद्ध की घोषणा की थी।
प्रश्न 5 – लेखक के अनुसार कवि कैसा होना चाहिए?
उत्तर– लेखक के अनुसार कवि को सृष्टा और दृष्टा होना चाहिए।
प्रश्न–6 कवि का उत्तरदायित्व कब पूरा होता है?
उत्तर– बंधन मुक्त होकर आगे बढने के लिए प्रयत्नशील लोगों का मार्गदर्शक बनने पर ही कवि का उत्तरदायित्व पूरा होता है।
प्रश्न–7 अफलातून ने संसार को क्या कहा था?
उत्तर– अफलातून ने संसार को असल की नकल बताकर कला को जीवन की नकल कहा है।
प्रश्न 8– अरस्तु ने मनुष्य के संबंध में क्या कहा था?
उत्तर– अरस्तु ने कहा है कि जैसे मनुष्य को उसकी सीमा से बढकर दिखने पर नकल–दिवस का खंडन हो जाता है।
प्रश्न 9– यूनानी विद्वानों के बारे मे क्या कहा गया?
उत्तर– यूनानी विद्वानों के बारे में कहा जाता है कि वे कला को जीवन की नकल समझते है।
प्रश्न 10– लेखक के अनुसार प्रजापति कौन होता है?
उत्तर– लेखक प्रजापति को सृष्टि का रचनाकर्त्ता मानते है।
प्रश्न 11– "हेमलेट" का लेखक कौन था?

CBSEBHINDER VALLABHNAGAR

उत्तर– शेक्सपियर
प्रश्न 12– 17 वीं और 20 वीं सदी के प्रमुख कवियों के नाम लिखिए?
उत्तर–17 वीं और 20 वीं सदी के प्रमुख कवि रविन्द्रनाथ, भारतेन्दु ,वीरेश लिंगम, तमिल भारती, मलयाली वल्लतोल आदि थे।
प्रश्न 13– कवि कैसे अपने रूचि के अनुसार विश्व को परिवर्तित करता है।
उत्तर– कवि अपनी रूचि के अनुसार विश्व को परिवर्तित करने हेतु विश्व को बताता है कि उसमें इतना असंतोष क्यों है? व यह भी बताता है कि विश्व में व्याप्त कुसंगतियॉ क्या है। ताकि लोग अपने समाज को समझ पाए।
प्रश्न 14– लेखक के खींचें गए चित्र समाज की व्यवस्था से मेल खाते है। कैसे?
उत्तर– लेखक जो साहित्य लिखता है, वे समाज में अपनी आंखों द्वारा देखी हुई कुसंगतियों या तथ्यों के आधार पर लिखता है , इसलिए लेखक का साहित्य समाज के भावों से मेल खाता है।
प्रश्न 15– साहित्य को कैसा होना चाहिए?
उत्तर– साहित्य को समाज का दर्पण होने के साथ साथ मानव सुधार के लेखों से भरा होना चाहिए। साहित्य संबंधों, कुरूतियों, असंगतियों के खिलाफ एक मुहित से भरा होना चाहिए, जिसमें समाज सुधार का भाव भरा होना चाहिए।
प्रश्न 16– लेखक किनको साहित्यकार नहीं मानता? अथवा "धिक्कार है उन्हें जो तीलियॉ तोड़ने के बदले उन्हें मजबुत कर रहे है"– लेखक के इस कथन पर टिप्पणी कीजिए?
उत्तर– लेखक का मानना है कि सच्चा साहित्यकार वह है जो मन को मानव संबंधों के पिजंडे से मुक्त होने में सहयोग देता है, उनका मार्गदर्शन करता है। आज भारतीय जीवन इस पिजंडे की तीलियों को संगठित होकर तोड रहा है। वह मुक्ती का जीवन जीने को व्याकुल है।किन्तु स्वयं को साहित्यकार कहने वाले कुछ लोग तीलियों को तोडने के स्थान पर उन्हें और मजबुत कर रहे है। ऐसे साहित्यकार दंभी है। वै मानव मुक्ती के गीत गाते है और दूसरी ओर भारतीयों को पराधीनता का पाठ पढाते है। वे न तो साहित्यकार है और न भविष्यदृष्टा। वे धिक्कार के योग्य है
प्रश्न 17– "प्रजापति की भूमिका भूल कर कवि दर्पण दिखाने वाला ही रह जाता है।" लेखक के इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए?
उत्तर– कवि सृष्टा होता है। अपने काव्य जगत की रचना वह उसी प्रकार करता है जैसे प्रजापति ब्रह्मा विश्व की सृष्टि करते है। जब कवि अपना यह स्वरूप भूलकर केवल अपने समाज को अपनी रचना में प्रतिबिम्बिता करता है और साहित्य को समाज का दर्पण बताता है तो वह मात्र दर्पण दिखाने वाला रह जाता है। वह साहित्यकार के उॅचें आसन से पतित हो जाता है। उसकी असलियत नष्ट हो जाती है और वह नकलची बन जाता है। यदि वह परिवर्तन चाहने वाली जनता का अगुवा नहीं बनता तो उसका व्यक्तित्व नष्ट हो जाता है।
प्रश्न– 18– "साहित्य का पांचजन्य समर भूमि में उदासीनता का राग नहीं सुनाता।" इस कथन का मर्म स्पष्ट कीजिए?
उत्तर– पांचजन्य श्रीकृष्ण का शंख था। जब श्रीकृष्ण पांचजन्य का नाद करते थे तो उसे सुनकर योद्धा युद्ध के लिए सन्नद्ध हो जाते थे। उनके मनमें उत्साह की लहरें उठने लगती थी। युद्ध के लिए भुजाएं फडकने लगती थी । इसी तरह साहित्य भी हताश और निराश लोगों को आगे बढने और संघर्ष करने के लिए प्रेरित करता है व लोगों को संघर्ष से पलायन का पाठ नहीं पढाता।
प्रश्न– 19– विधाता की सृष्टि से कवि असंतुष्ट क्यों होता है?
उत्तर– विधाता द्वारा रची गयी सृष्टि को अपने मनोनुकूल प्रतीत नहीं होती उसको सृष्टि के जिस रूप की कल्पना होती है यथार्थ रूप में वह वैसी नहीं होती है। कवि इसी कारण विधाता द्वारा रचि हुई सृष्टि से संतुष्ट नहीं होता वह उससे असंतुष्ट होकर अपने मनोनुकूल सृष्टि रच लेता है।
प्रश्न 20– कवि किस तरह से रचना द्वारा परिवर्तन लाने के लिए प्रयत्न करता है?
उत्तर– कवि सामाजिक प्राणी है। जब समाज में व्याप्त विसंगतियों एवं बुराईयों को देखता है तो वह मानव जीवन की उन्नति के मार्ग के बारे में विचार करता है। उसे ही अपनी रचना द्वारा समाज के समक्ष प्रस्तुत करता है। वह मानव समाज अथवा सृष्टि की विसंगतियों को देखकर उसमें परिवर्तन लाने के उद्देश्य से ही अपनी रूचि के अनुसार नई साहित्यिक सृष्टि की रचना करता है।
प्रश्न 21– कवि और प्रजापति में क्या समानता है?
उत्तर– प्रजापति अर्थात ब्रह्मा अपनी इच्छा के अनुसार सृष्टि की रचना करता है उसे जैसा समझता है वह चिजों को वैसी ही बनाता है। इसी तरह विधाता सब तरह के नियत्रंण से मुक्त रहता है। कवि भी कभी भी अपनी इच्छा के अनुरूप अपने पात्रों की सृष्टि करता है। चरित्र और आर्दशों को प्रस्तुत करता है। कवि अपने साहित्य में संभव या असंभव सभी तरह के तथ्यों को स्वैच्छा से अभिव्यक्त कर देता है।
प्रश्न 22– "कवि सृष्टा ही नहीं दृष्टा भी होता है।" इस कथन से लेखक का क्या अभिप्राय है?
उत्तर– लेखक बताता है कि सच्चा कवि केवल रचना ही नहीं करता अपितु वह भूत, वर्तमान के साथ के साथ भविष्य को देखने वाला भी होता है। वह अपनी दिव्य शक्तियों से आकाश से लेकर पाताल तक देख लेता है। और लोक– मंगल से सारी

CBSE BHINDER VALLABHNAGAR

बातें पहले ही देख लेता है। जहां सुर्य की किरणें नहीं पहुॅच पाती सच्च कवि वहां भी पहुॅच जाता है। इसी कारण कवि सृष्टा ही नहीं दृष्टा भी होता है।

प्रश्न 23– "यथास्में रोचते विश्वम" निबंध के आधार पर साहित्य की युगान्तकारी भुमिका पर प्रकाश डालिए?

उत्तर– मध्यकालीन साहित्य ने सामंती पिजंडे में बंद मानव जीवन की मुक्ति के लिए वर्ण और धर्म के सींखचों पर प्रहार किए थे। 17 वीं और 20 वी सदी में साहित्यकारों ने अंग्रेजी राज और सामंती अवशेषों के पिजंडे पर प्रहार किए। उन्होंने भारत की दुखी जनता को संगठित कर उसे स्वाधीनता प्राप्ति के लिए उत्साहित किया था। अतः इन सभी से साहित्य से युगान्तकारी भुमिका स्पष्ट होती है।

प्रश्न 24– लेखक ने पिजंडे और तीलियों द्वारा क्या कहना चाहा है?

उत्तर– समाज में मुनष्य पर अनेक तरह की बंदिशे लगी हुई है जो उसकी प्रगति में बाधक है। बंदिशों के लिए तीलियों वाले पिजंडे शब्द का प्रयोग किया गया है । यह लाक्षणिक और अलंकारिक प्रयोग है। कवि सामाजिक जीवन की उन बंदिशों पर प्रहार करता है यहां पिजंडे और तीलियों को सामाजिक बंदिशों के रूप में अभिव्यक्त किया गया है।

पाठ 9 ममता कालिया – 'दूसरा देवदास'

प्र.1 ' दूसरा देवदास' पाठ गद्य की कौनसी विद्या में है?

(अ) निबन्ध (ब) कहानी

(स) संस्मरण (द) संस्मरणात्मक रेखाचित्र ( )

उत्तर – (ब) कहानी

प्र.2 निम्नांकित में से कौनसा पात्र पाठ में नहीं है?

(अ) पारो (ब) संभव

(स) मन्नू (द) लालू ( )

उत्तर – (द) लालू

प्र.3 'दूसरा देवदास' पाठ की लेखिका है–

(अ) ममता कालिया (ब) महादेवी वर्मा

(स) सुभद्रा कुमारी चौहान (द) मन्नू भण्डारी ( )

उत्तर – (अ) ममता कालिया

प्र.4 'दूसरा देवदास' पाठ में किस नदी का वर्णन है?

(अ) गंगा (ब) यमुना

(स) कावेरी (द) नर्मदा ( )

उत्तर – (अ) गंगा

प्र.5 'गंगापुत्र' किसे कहते है?

(अ) हरिद्वारा (ब) पुजारी

(स) भिक्षुक (द) गोताखोर ( )

उत्तर – (द) गोताखोर

प्र.6 'दूसरा देवदास' कहानी का मूख्य विषय क्या है?

उत्तर – इसमें युवामन की संवेदना, भावना और विचार जगत की उथल–पुथल को आकर्षक भाषा शैली में प्रस्तुत किया है।

प्र.7 संभव ने किस भीड़ की तुलना हर की पौड़ी की भीड़ से की है?

उत्तर – संभव ने दिल्ली शहर की भीड़ की तुलना हर की पौड़ी की भीड़ से की।

प्र.8 हर की पौड़ी पर 'स्पेशल आरती' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर – 'स्पेशल आरती' आर्थत् जिसने भी एक सौ एक या एक सौ इक्यावन रूपये देकर आरती करवाई हो।

प्र.9 'दूसरा देवदास' पाठ की मूल संवेदना क्या हैं?

उत्तर – ममता कालिया की कहानी 'दूसरा देवदास' प्रेम के महत्व और गरिमा को ऊँचाई प्रदान करती है। कहानी से यह सिद्व होता है कि प्रेम के लिए किसी नियत व्यक्ति, स्थान और समय की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि वह स्वतः ही घटित हो जाता है।

प्र.10 पाठ में हर की पौड़ी का संध्या समय का मनोहारी दृश्य किस प्रकार बताया गया है?

उत्तर – हर की पौड़ी पर संध्या के समय गंगा की आरती का रंग ही निराला होता है। भक्तों की भीड़ मनोकामना की पूर्ति के लिए फूल, प्रसाद आदि खरीदती है। उस समय पण्ड़े और गोताखोर सक्रिय हो जाते है। चारों तरफ पूजा का वातावरण है, पंच मंजिली निलांजलि में लगे सहस्त्र दीप जल उठते है और आरती शुरू हो जाती है। मनौतिओं के दीए लिए हुए फूलों के छोटे–छोटे दोने गंगा की लहरों पर इठलाते हुए आगे बढ़ते जाते है। पूरे वातावरण में चंदन और धूप की सुंगंध फैली हुई और भक्तजन संतोष भाव से भर उठते है।

GEO BHINDER VALLABHNAGAR

प्र.11 गंगापुत्रों का जीवन परिवेश 'दूसरा देवदास' कहानी के आधार पर बताइए।

उत्तर – गंगापुत्र उन गोताखोर को कहते है जो गंगा में डुबकी लगाकर भक्तों द्वारा छोडे गए पैसों को इकठ्ठा करके अपनी आजीविका चलाते है। इनका जीवन गंगा पर ही निर्भर करता है। यह रेजगारी बटोरकर अपनी बहन या पत्नी को कुशाघाट पर दे आते हैं जो इन्हें बेचकर नोट कमाती है। कभी–कभी इनके साथ हादसा भी हो जाता है, किन्तु बगैर परवाह किए यह अपने कार्य में लगे रहते है।

प्र.12 संभव व पारो का प्रथम परिचय कैसे होता है?

उत्तर – कहानी का नायक 'संभव' व नायिका 'पारों' है। संभव कुद दिनों के लिए अपनी नानी के घर आता है। नास्तिक होते हुए भी अपने माता–पिता के कहने पर गंगा का आशीर्वाद लेने आता है तब नायक–नायिका का प्रथम परिचय गंगा किनारे के मंदिर में होता है। संभव मंदिर में पैसे चढ़ाने के उपरांत अपना हाथ कलावा बंधवाने के लिए आगे बढ़ाता है, तभी एक नाजुक सी कलाई भी कलावा बंधवाने के लिए आगे बढ़ती है। संभव उस गुलाबी कपड़ों में भीगी लड़की का देखता है। पुजारी दोनों को दम्पति समझकर आशीर्वाद देता हैं।

प्र.13 पुजारी संभव व पारों को क्या आशीर्वाद देता है?

उत्तर – पुजारी संभव व पारो को दम्पति समझकर "सुखी रहो फले–फुलो जब भी आयो साथ ही आया। गंगा मैया मनोरथ पूरे करें।" का आशीर्वाद देता है।

प्र.14 "मनोकामना की गाँठ भी अद्भुत, अनुठी है, इधर बाँधो उधर लग जाती है" कथन के आधार पर पारो का मनोदशा का वर्णन करो।

उत्तर – इस कथन से पारो की मनोदशा का पता लगता है। सम्भव से मिलने के लिए उसने मंशा देवी पर चुनरी चढ़ाने का संकल्प लिया था, क्योंकि पहली मनः कामना का फल तो उसने देख ही लिया था कि जिसके मिलने की संभावना न थी वह लड़का स्वयं चलकर उसके पास आया था।

प्र.15 'दूसरा देवदास' कहानी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – कहानी में 'दूसरा देवदास' संभव नाम के लड़के के लिए आया है। यह शीर्षक कहानी के लिए सार्थक है। देवदास अपनी प्रेमिका के प्रति आसक्त था। यह संभव नाम का दूसरा देवदास भी पारो की खोज पागल की तरह करता रहा। उसकी दूसरी बार झलक पाने के लिए वह मंशा देवी के मन्दिर गया, वहाँ उसने मनौती और मनोकामना पूरी देखकर उसने संभव नाम के साथ देवदास जोडकर पारो को अपने प्रेम का संकेत भी दे दिया इस दृष्टि से यह शीर्षक सार्थक है।

प्र.16 हर की पौड़ी के पण्डे–पुजारियों के बारे में बताइए।

उत्तर – गंगातर पर पण्डे अपने –अपने तख्त पर जमे होते है। गंगा में स्नान करने वाले भक्तों के कपड़े–लत्तों की वे ही सुरक्षा रखते है। स्नान किए हुए लोगों के मस्तक पर वे चंदन का तिलक और महिलाओं के मस्तक पर सिन्दूर का टीका लगाते है। लोग अपनी मनोकामना के अनुसार उनसे आरती करवाते है और वे स्नान करके आने वाले उन लोगों से भेंट–चढ़ावा प्राप्त कर उन्हें आशीर्वाद देते है।

प्र.17 ममता कालिया का साहित्यिक परिचय प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर – हिन्दी के नयी कहानी आन्दोलन में ममता कालिया का विशेष योगदान माना जाता है। नारी ह्दय की सरलता, सुबोधता एवं संवेदना का सुन्दर समावेश तथा कथा–वस्तु का भावपूर्ण विन्यास इनकी कहानी कला का वैशिष्ट्य है।ममता कालिया को साहित्य के क्षेत्र में अनेक पुरस्कार भी प्राप्त हुए है। इनके 'बेघर', 'नरक दर नरक', एक पत्नी के नोट्स, 'प्रेम–कहानी' आदि उपन्यास तथा बारह कहानी–संग्रह प्रकाशित है। इनके हाल ही में दो कहानी–संग्रह प्रकाशित हुए है– " पच्चीस साल की लड़की और "थियेटर रोड़ के कौवें।

प्र.18 संभव से मिलने के बाद पारो की क्या मनोदशा थी?

उत्तर – पारो की मनोदशा भी संभव से भिन्न न थी, वह स्वयं भी उसके आकर्षक में बंध चुकी थी। युवा मन का निश्चल प्रेम केवल एक झलक देखने के लिए व्याकुल था।
मनसा देवी पर लगी मनोकामना की गांठ का परिणाम संभव से मिलने के रूप में आया तो वह आश्चर्य मिश्रित सुख में डूब गई। सफेद साड़ी में उसका चेहरा लाज से गुलाबी हो रहा था क्योंकि उसे भी इस बात की प्रतीक्षा थी। उसने ईश्वर को धन्यवाद दिया और मन ही मन एक और चुनरी चढ़ाने का संकल्प लिया। मनोकामना पूरी होने से देवी पर आस्था और संभव के प्रति प्रेम और अधिक दृढ़ और स्थाई हो गया।

प्र.19 पारो से प्रथम भेंट के बाद संभव के मनोभावों के बारे में बताइए।

उत्तर – पारो से मुलाकात के बाद संभव के मन में प्रेमभावना जागृत हुई थी। पारो को जब उसने गुलाबी साड़ी में पूरी भीगी हुई देखा, तो वह देखता रह गया। उसका सौन्दर्य अनुपम था। उसने संभव के कोमल मन में हलचल मचा दी। वह उसे खोजने के लिए हरिद्वार की गली–गली खोजता था। घर पहुँचकर उसका किसी चीज में मन नहीं लगा। विचारों और ख्वाबों में बस पारो की ही आकृति उसे नजर आ रही थी। उसका दिल उसे पाना चाहता था।

CREO BHINDER VALLABHNAGAR

प्र.20 संभव और पारो दोनों को पुजारी के आशीर्वाद के बाद क्या अफसोस हुआ और क्यों?
उत्तर – संभव और पारो दोनों ही पुजारी के आशीर्वाद के वचन सुनकर अकबका गए। तब दोनों की मनःस्थिति सामान्य नहीं थी। संभव कहना चाहता था कि इसमें मेरी कोई गलती नहीं थी। लड़की को लगा कि गलती तो मेरी ही थी, मुझे लड़के के इतने पास नहीं खड़ा होना चाहिए था।

पाठ -10 कुटज (हजारी प्रसाद द्विवेदी)

निम्न प्रश्नों में दिए गए विकल्प में से सही विकल्प चुनिए
1.हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म कहां हुआ था
(अ)मथुरा(ब)अल्मोड़ा(स)आरत दुबे का छपरा(द)काशी
2.हजारी प्रसाद द्विवेदी को किस रचना पर साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला
(अ)आलोक पर्व(स)अशोक के फूल(स)विचार और वितर्क(द)कल्पलता
3.निम्न में से कौन सा उपन्यास हजारी प्रसाद द्विवेदी का नहीं है
(अ)चारुचंद्र लेख(ब)बाणभट्ट की आत्मकथा
(स)मैला आंचल(द)अनामदास का पोथा
4.कुटज पाठ में लेखक ने पृथ्वी का मानदंड किसे कहा हे
(अ)कुटज(ब)हिमालय(स)शिवालिक(द)भारत
अति लघु उत्तरात्मक प्रश्न
5.लेखक के अनुसार संपूर्ण हिमालय को देखकर मन में क्या स्थिति पैदा होती है?
उत्तर- मन में समाधि महादेव की मूर्ति स्पष्ट होती है।
6.लेखक ने गिरी कूट बिहारी की उपाधि किसे प्रदान की?
उत्तर कुटज को।
7.लेखक ने किस कवि को दरिया दिल आदमी बताया?
उत्तर-रहीम को।
8.प्रतापी अगस्त मुनि भी कुटज कहे जाते हैं इसके पीछे क्या कारण था?
उत्तर- कूट अर्थात घड़े से उत्पन्न होने के कारण।
9.लेखक कुटज को किन नामों से संबोधित करता है?
उत्तर -लेखक कुटज को पहाड़फोड़ धरतीधकेल अपराजित आदि नामों से संबोधित करता है।
10.सोशल सेक्शन किसे कहा जाता है?
उत्तर -नाम के पद पर मुहर के लगने को आधुनिक शिक्षित लोग सोशल सेक्शन कहते हैं।
11.कुटज का वृक्ष कहां पाया जाता है?
उत्तर- कुटज का वृक्ष हिमालय पर्वत के नीचे शिवालिक पर्वत श्रृंखला में पाया जाता है।
लघु उत्तरात्मक प्रश्न
12.कुटज को गाड़े का साथी क्यों कहा गया है?
उत्तर इस पाठ में लेखक ने कुटज की विशेषताओं के बारे में बताया है की कुटज मुश्किल हालात में भी साथ देता है लेखक ने इसका वर्णन करते हुए कहा है कि कालिदास ने अपनी एक रचना में लिखा है कि जब राम ने गिरी पर्वत विद्यमान बादलों को यज्ञ के द्वारा एक निवेदन भेजा तो वहां के मुश्किल हालातों में भी लक्ष्य को एक कुटज वृक्ष दिखा वह वृक्ष ऐसी जगह पर खड़ा था जहां आप कुछ पनप नहीं सकता यज्ञ को यह देख कर बड़ी हैरानी हुई इसलिए कुटज को गाड़े का साथी कहा जाता है
13..वे रहीम अब बिरछ कहँ जिन कर छाह गंभीर;
बागन बीच-बीच देखियत है सेहुड कुटज करिर|
रहीम के उपरोक्त दोहे के माध्यम से लेखक क्या संदेश देना चाह रहे हैं?

CBEO BHINDER VALLABHNAGAR

उत्तर -उपरोक्त दोहे में रहीम दास कहते हैं कि अब वे पेड़ नहीं रहे जिनकी छाया गनी हुआ करती थी अब तो संसार रूपी बाग में कांटेदार सेहुद कटीली झाड़ियां कुटज और करीब जैसे वृक्ष ही दिखाई दे रहे हैं इस दोहे के माध्यम से लेखक का भाव यह है कि इतने बड़े कवि ने भी कुटज को एक कंटिली झाड़ी ही माना है

14.सुख और दुख मन के भाव हैं पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए?

उत्तर लेखक कहता है कि अगर व्यक्ति के मन और उसमें उठने वाले भाव उसके वश में है तो वह सुखी कहलाता है और सुखी भी हो सकता है क्योंकि कोई दूसरा उसको कष्ट नहीं दे सकता दुखी तो वह है जो दूसरों के कहे अनुसार चलता है या जिसका मन खुद के बस में नहीं होता है

निबंधात्मक प्रश्न

15.हजारी प्रसाद द्विवेदी का साहित्यिक परिचय लिखिए-

उत्तर द्विवेदी जी का अध्ययन बहुत व्यापक था संस्कृत,प्राकृत, अपभ्रंश, बांग्ला आदि भाषाओं तथा इतिहास ,दर्शन ,धर्म ,संस्कृति आदि विषय पर आपका अच्छा अधिकार था । द्विवेदी जी ने सरल और परिष्कृत भाषा को अपनाया है वह विषय अनुकूल तथा प्रवाह पूर्ण है आपकी भाषा में तद्भव शब्द प्रचलित लोक भाषा के शब्द तथा उर्दू ,अंग्रेजी आदि भाषाओं के शब्द भी मिलते हैं मुहावरों तथा उद्धरण ने उन्होंने आपकी भाषा की शक्ति को बढ़ाया है| द्विवेदी जी ने वर्णनात्मक, विवरणात्मक, विचारात्मक, समीक्षात्मक आदि शैलियों को अपनाया है ललित निबंधों में आपकी शैली आत्म फर्क है यत्र तत्र व्यंग शैली का भी आपने प्रयोग किया है|

प्रमुख कृतियां

निबंध संग्रह:- अशोक के फूल,विचार और वितर्क,कल्पलता,कुटज, आलोक पर्व

उपन्यास:- चारुचंद्र लेख,बाणभट्ट की आत्मकथा, पुनर्नवा,अनामदास का पोथा

समालोचना:- सुर साहित्य,कबीर, हिंदी साहित्य की भूमिका आदि|

इनके अतिरिक्त आपने हिंदी साहित्य का आदिकाल, मेरा बचपन, नाथ सिद्धों की बानिया आदि ग्रंथों की रचना भी की है|

- **पुरस्कार एवं सम्मान** भारत सरकार द्वारा पद्मभूषण से अलंकृत आप को साहित्य अकादमी पुरस्कार आलोक पर्व पर मिला तथा लखनऊ विश्वविद्यालय से डी लिट की मानद उपाधि प्राप्त की|

16. जीना भी एक कला है और कुटज इस कला को जानता है पाठ के आधार पर इस कथन को समझाइए-

उत्तर:- जीना एक कला है आचार्य द्विवेदी ने तो जीने को एक कला से भी बढ़कर एक तपस्या माना है तपस्या में तल्लीनता और सहिष्णुता का होना आवश्यक होता है| जीवन जीने का सच्चा सुख उसी व्यक्ति को मिलता है जो सुख-दुख को समान मानकर ग्रहण करता है| गीता में कहा गया है "सुखे दुखे समे कृत्वा लाभा लाभौ जया जयौ" यही जीवन जीने की कला है|

पाठ -1 अज्ञेय यह दीप अकेला/मैंने देखा, एक बूंद–

प्र. 1 "हिंदी कविता में प्रयोगवाद के प्रवर्तक कौन है"–
अ. रामचन्द्र शुक्ल ब. निर्मल वर्मा
स. फणीश्वरनाथ रेणु द. अज्ञेय (द)

प्र. 2. "यह दीप अकेला" कविता में दीप किसका प्रतीक है–
अ. दीया ब. मनुष्य
स. जीवात्मा द. रोशनी (ब)

प्र. 3. यह प्रकृत, स्वयंभू, ब्रह्मा, अयुत, इसको भी शक्ति को दे दो। इस वाक्य में **यह** शब्द किसके लिए आया है–
अ. ईश्वर के लिए ब. स्वयं कवि के लिए
स. व्यक्ति विशेष के लिए द. दीया के लिए (स)

प्र. 4. कवि ने समुद्र को किसका प्रतीक बताया है –
अ. दिया ब. आत्मा
स. परमात्मा द. बूंद (स)

प्र. 5. मैंने देखा एक बूंद कविता में कवि बूंद के परिपेक्ष्य में किसकी बात कर रहा है–
अ. बूँद की क्षणभंगुरता की ब. बूंद के सौंदर्य की
स. बूंद के यौवन की द. बूंद के महत्व की (अ)

CEO BHINDER VALLABHNAGAR

प्र. 6 अज्ञेय का मूल नाम क्या है?
उत्तरः– अज्ञेय का मूल नाम सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय है।
प्र. 7 यह वह विश्वास नहीं जो अपनी लघुता में भी कांपा इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।
उत्तरः– मनुष्य को ईश्वर पर इतना अटूट विश्वास होता है कि अपनी लघुता /कमी/ अभाव का पता होने पर भी अपनी विश्वास के बल पर वह आगे बढ़ने का प्रयास करता है और अंततः सफल हो जाता है।
प्र.8 गीत की सार्थकता किस से जुड़ी है?
उत्तरः– एक गीत तभी सार्थक माना जाएगा जब वह गाया जाए क्योंकि गाए जाने से ही उसके भाव/कथ्य/महत्व आदि सब ज्ञात होते हैं, अतः बिना गायन के गीत निरर्थक है।
प्र. 9 सागर और बूंद किस प्रकार एक दूसरे से भिन्न है?
उत्तरः– कवि का आशय यह है कि सागर शाश्वत, सार्वकालिक, परब्रह्मा है जबकि बूंद क्षणभंगुर, नश्वर, जीवन का एक क्षण मात्र है। सागर से अलग होने पर उसका कोई अस्तित्व नहीं है किंतु वह सागर से मिलने पर उसी प्रकार अमर हो जाती है जिस प्रकार आत्मा परमात्मा में विलीन होकर अमर हो जाती है।
प्र.10 कवि व्यक्ति का सामाजिकरण क्यों करना चाहता है?
उत्तरः– कवि के अनुसार सर्वगुण संपन्न व्यक्ति का जब समाज में विलय होगा तो समाज और राष्ट्र और अधिक मजबूत बन जाएंगे।
प्र.11 दीप अकेला कविता में कवि ने दीप को स्नेहभरा गर्वभरा एवं मदमाता क्यों कहा है?
उत्तरः– दीप अकेला कविता में दीप मनुष्य का प्रतीक है। दीप (मनुष्य) में जितना अधिक तेल (स्नेह) भरा होगा वह उतना ही अधिक ऊपर की ओर उठता (गर्वित होता) है। लौ ऊपर उठना जिस प्रकार उसमें भरे हुए तेल पर निर्भर करता है जिस प्रकार मनुष्य में विनय स्नेह आदि गुण होने से वह स्वयं को गर्वित महसूस करता है।
प्र.12 पनडुब्बा ये मोती सच्चे फिर कोन कृती लाएगा? इन पंक्ति से संबंधित तुलनात्मक भाव को लिखो।
उत्तरः– कवि कहते हैं कि यह वह गोता है जो हदय रूपी समुन्द्र में डूब कर रचनाओं रूपी मोतियों को खोज कर लाता है अर्थात कवि साहित्यकारों की और संकेत कर रहे हैं।
प्र.13 'मैंने देखा एक बूंद' कविता से कवि का क्या अभिप्राय है?
उत्तरः– इस कविता में अज्ञेय ने समुन्द्र से अलग होती एक बूंद की क्षणभंगुरता की व्याख्या की है। इस कविता द्वारा कवि ने एक क्षण के महत्व को दर्शाया है।
प्र.14 'समिधा – ऐसी आग हठीला बिरला सुलगायेगा' निम्न पंक्ति का आशय लिखों।
उत्तरः– इन पंक्तियों में कवि ने एक गुणवान व्यक्ति की तुलना हवन की उस लकड़ी से की है जो खुद जल कर भी लोगों को लाभ पहुंचाती है। उसी प्रकार गुणवान व्यक्ति भी लोगों को लाभ पहुंचाता है।
प्र.15 एक मधु है स्वयं काल की सोना का युग संचय यह गोरस जीवन कामधेनु का अमृत पूत दृपय, इन पंक्तियों के भावार्थ लिखो।
उत्तर :– इन पंक्तियों में कवि मनुष्य की तुलना मधु से करते हैं और कहते हैं कि जिस प्रकार मधुमक्खी को शहद बनाने में समय लगता है, उसी प्रकार व्यक्ति को भी खुद की रचनाओं की खोज करने में समय लगता है और प्रतिभाशाली व्यक्ति कामधेनु के समान है जो हर कठिनाइयों के बाद भी हर परिस्थिति से गुजर कर शुद्धता और प्रेम से भरे व्यक्तित्व का निर्माण करता है
प्र.16 मैंने देखा, 'एक बूंद' कविता के माध्यम से कवि हमको क्या सीख देते हैं?
उत्तर :– मैने देखा एक बूंद कविता के माध्यम से कवि लोगो को बताना चाहते हैं कि हमारे जीवन का एक–एक क्षण बहुत महत्वपूर्ण है, जैसे एक बूंद की काया एक पल में पलट जाती है, उसी प्रकार हमारे जीवन में बदलाव कभी भी आ सकता है

पाठ -2 केशवदास

प्रश्न -1 देवी सरस्वती की उदारता का गुणगान क्यों नहीं किया जा सकता?

उत्तर - देवी सरस्वती सुर, कला तथा ज्ञान की देवी हैं। इस संसार में सबके गले में वह विराजती है। इस संसार में ज्ञान का अथाह भंडार उनकी ही कृपा से उत्पन्न हुआ है। उनकी महत्ता को व्यक्त करना किसी के भी वश में नहीं है क्योंकि उनकी महत्ता को शब्दों का जामा पहनाकर उसे बांधा नहीं जा सकता है। सदियों से कई विद्वानों ने सरस्वती की महिमा को व्यक्त करना चाहता है परन्तु वे उसमें पूर्ण रूप से सफल नहीं हो पाए हैं। जितना भी उसे व्यक्त करने का प्रयास किया गया, उतना ही कम प्रतीत होता है। उनमें अभी इतना बल नहीं है कि वह सरस्वती की महिमा को समझ पाएँ। अतः उनकी उदारता का गुणगान मनुष्य के वश में नहीं है।

प्रश्न - 2:चारमुख, पाँचमुख और षटमुख किन्हें कहा गया है और उनका देवी सरस्वती से क्या संबंध है?

CBEO BHINDER VALLABHNAGAR

उत्तर- कवि 'चारमुख' ब्रह्मा के लिए, 'पाँचमुख' शिव के लिए तथा 'षटमुख' कार्तिकेय के लिए कहा है। ब्रह्मा को सरस्वती का पति कहा गया है। शिव को उनका पुत्र कहा है तथा शिव पुत्र कार्तिकेय को उनका नाती कहा गया है।

प्रश्न 3: कविता में पंचवटी के किन गुणों का उल्लेख किया गया है?

उत्तर- कविता में पंचवटी के निम्नलिखित गुणों का उल्लेख किया गया है-

(क) पंचवटी में आकर दुखी लोगों के संताप्त (दुख) हर जाते हैं तथा उन्हें सुख का अनुभव होता है।

(ख) दुष्ट लोग यहाँ एक क्षण भी नहीं रुक पाते हैं।

(ग) पंचवटी इतना सुंदर है कि यहाँ का वातावरण लोगों को सुख देता है।

(घ) पंचवटी पवित्र स्थलों में से एक माना जाता है। यहाँ पर आकर हर तरह का पाप कट जाता है।

प्रश्न 4:तीसरे छंद में संकेतित कथाएँ अपने शब्दों में लिखिए?

उत्तर- तीसरे छंद में रावण की पत्नी मंदोदरी ने निम्नलिखित कथाओं का वर्णन किया है-

(क) सिंधु तर्यो उनका बनरा- इस पंक्ति में हनुमान द्वारा समुद्र लांघ कर आने की बात कही गई है। जब सीता की तलाश में हनुमान का वानर दल समुद्र किनारे आ पहुँचा तो, सभी वानर चिंतित हो गए। किसी भी वानर में इतना सामर्थ नहीं था कि समुद्र को लाँघ सके। जांमवत जी से प्रेरणा पाकर हुनमान जी समुद्र पार करके लंका पहुँच गए। मंदोदरी ने यहाँ उसी का उल्लेख किया है।

(ख) धनुरेख गई न तरी- इस पंक्ति में सीता द्वारा रावण का हरण करने की बात कही गई है। स्वर्ण हिरण को देखकर सीता ने राम से उसे पाने की इच्छा जाहिर की। सीता की इच्छा को पूरा करने हेतु राम लक्ष्मण की निगरानी में सीता को छोड़कर हिरण के पीछे चल पड़े। कुटी में सीता और लक्ष्मण को राम का दुखी स्वर सुनाई दिया। लक्ष्मण ने उस मायावी आवाज़ को पहचान लिया। परन्तु सीता द्वारा लांछन लगाए जाने पर उन्हें विवश होकर जाने के लिए तैयार होना पड़ा। वह सीता को लक्ष्मण रेखा के अंदर सुरक्षित करके राम की सहायता के लिए चले गए। रावण ने सीता को अकेली पाकर ऋषि रूप में उसका हरण करना चाहा परन्तु लक्ष्मण की खींची रेखा की प्रबल शक्ति के कारण वह उसे पार नहीं कर पाया। रावण एक शक्तिशाली राक्षस था। उसने सभी
देवताओं को अपने घर में कैद किया हुआ था। परन्तु वह उस रेखा को पार न कर सका। आखिर सीता को धर्म तथा परंपराओं का हवाल देकर रेखा को पार करने के लिए विवश किया। जैसे ही सीता ने उसे पार किया रावण ने उसका बलपूर्वक हरण कर लिया।

(ग) बाँधोई बाँधत सो न बन्यो- जब हनुमान जी ने लंका में प्रवेश किया तो उन्होंने बहुत उत्पात मचाया। उनको बलशाली राक्षस तक नहीं बाँध पाए। रावण का पुत्र अक्षत इसी समय हनुमान के हाथों मारा गया।

(घ) उन बारिधि बाँधिकै बाट करी- इस पंक्ति में पत्थरों को बाँधकर लंका आने की बात की गयी है। सीता का पता लग जाने पर राम-लक्ष्मण और सग्रीव सभी वानर सेना सहित समुद्र किनारे आ गए। सुमद्र से जब लंका तक जाने का मार्ग माँगा गया, तो समुद्र इसमें अपनी असमर्थता जताई। तब समुद्र द्वारा बताए गए उपाय से नल तथा नील ने समुद्र के ऊपर सौ योजन लंबा सेतू का निर्माण किया। रावण ने सोचा था कि कोई भी उसकी लंका तक नहीं पहुँच पाएगा। परन्तु राम तथा उनकी सेना ने इस असंभव कार्य को संभव कर दिखाया। मंदोदरी इसी बात का उल्लेख करती है।

(ङ) तेलनि तूलनि पूँछि जरी न जरी, जरी लंक जराइ-जरी- प्रस्तुत पंक्तियों में उस समय का वर्णन किया गया है, जब अशोक वाटिका में सीता से मिलने के बाद हनुमान जी ने वहाँ कोहराम मचा दिया था। हनुमान जी को पकड़कर सज़ा के तौर पर उनकी पूंछ में रावण ने आग लगवा दी। हनुमान ने उसी जलती पूंछ के सहारे पूरी लंका को स्वाहा कर दिया और रावण कुछ न कर सका। कहा जाता है, सोने से बनी लंका का सारा सोना अग्नि की तपन के कारण सागर में जा मिला। इस तरह मंदोदरी रावण का सत्य से परिचय करना चाहती है। परन्तु हतबुद्धि रावण उसकी बात को समझने से इनंकार कर देता है।

प्रश्न 5:निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

(क) पति बर्नै चारमुख पूत बर्नै पंच मुख नाती बर्नै षटमुख तदपि नई-नई।

(ख) चहुँ ओरनि नाचति मुक्तिनटी गुन धूरजटी वन पंचवटी।

(ग) सिंधु तर यो उनको बनरा तुम पै धनुरेख गई न तरी।

(घ) तेलन तूलनि पूँछि जरी न जरी, जरी लंक जराई-जरी।

उत्तर- (क) प्रस्तुत पंक्तियों में कवि सरस्वती के बखान को कहने में स्वयं को असमर्थ पाता है। इसमें उनकी महिमा को अतुलनीय बताया है। उसके अनुसार सरस्वती का बखान अकथनीय है। ब्रजभाषा का बहुत सुंदर प्रयोग है। 'नई-नई' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार की छटा दिखाई देती है। कवि ने इसमें अतिशयोक्ति अलंकार का प्रयोग किया है। तत्सम शब्दों 'पाँचमुख', 'षटमुख' तथा 'तदपि' आदि का प्रयोग किया गया है।

GEOBINDER VALABHNAGAR

(ख) प्रस्तुत पंक्तियों में पंचवटी स्थान की सुंदरता का वर्णन किया गया है। कवि ने लोक सीमा से परे जाकर इसकी सुंदरता का वर्णन किया है। उसने पंचवटी की शोभा की तुलना शिव के समान की है। ब्रज का बहुत ही सुंदर प्रयोग किया है। भाषा में गेयता का गुण विद्यमान है। 'टी' शब्द का प्रयोग काव्यांश में बहुत सुंदर चमत्कार उत्पन्न कर रहा है। 'मुक्ति नटी' रूपक अलंकार का बड़ा अच्छा उदाहरण है। 'जटी' शब्द का दो बार प्रयोग हुआ है परन्तु दोनों बार इसके अलग अर्थ भिन्न हैं। अतः यह यमक का उदाहरण है।
(ग) प्रस्तुत पंक्तियों में मंदोदरी रावण को आइना दिखाते हुए व्यंग्य कसती है। उसके अनुसार जिस राम के अनुचर बंदर ने विशाल सागर को पार कर दिया और जिसके भाई की खींची लक्ष्मण रेखा तुम पार नहीं कर सकते हो, वह सही मैं कितने शक्तिशाली होंगे। ब्रज का बहुत सुंदर ढंग से प्रयोग किया गया है। व्यंजना शब्द का कवि ने सटीक प्रयोग किया है। गेयता का गुण विद्यमान है।
(घ) प्रस्तुत पंक्तियों में मंदोदरी ने हनुमान की शक्ति से परिचय कराया है। ब्रजभाषा का सुंदर प्रयोग है। गेयता का गुण विद्यमान है। 'त' तथा 'ज' शब्दों के द्वारा काव्यांश में बहुत सुंदर चमत्कार उत्पन्न किया गया है। यह अनुप्रास अलंकार का सुंदर उदाहरण है। 'जरी' 'जरी' यमक अलंकार का उदाहरण है।
प्रश्न 6:निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए।
(क) भावी भूत बर्तमान जगत बखानत है 'केसोदास' क्यों हू ना बखानी काहू पै गई।
(ख) अघओघ की बेरी कटी बिकटी निकटी प्रकटी गुरूजान-गटी।
उत्तर- (क) प्रस्तुत पंक्ति का आशय है कि देवी सरस्वती की महत्ता इस संसार में अद्वितीय है। प्राचीनकाल से लेकर आज तक लोग इनकी महिमा का बखान करने का प्रयास करते हैं। परन्तु न तब संभव था और न आज संभव है। इसका कारण यह है कि इनके स्वभाव में नित्य नवीनता विद्यमान रहती है। भाव यह है कि लोग उनसे चमत्कृत हो जाते हैं और उनकी बुद्धि चकरा जाती है। वह वर्णनानीत है इसलिए इनका बखान नहीं किया जा सकता है।
(ख) प्रस्तुत पंक्तियों में पंचवटी के सौंदर्य तथा पवित्रता का वर्णन देखने को मिलता है। कवि के अनुसार पंचवटी के दर्शन मात्र से ही घोर पापों के बंधनों से मुक्ति प्राप्त हो जाती है। इसके अंदर ज्ञान के भंडार भरे पड़े हैं, यहाँ जाकर इसका आभास हो जाता है। पंचवटी पापों को मिटाने तथा पुण्यों को बढ़ाने में सक्षम है।

पाठ -3 –सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

निम्नलिखित वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दीजिए–
प्रश्न –1 सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला का बचपन का नाम था–
(अ) सूर्यप्रकाश (ब) सूर्यकुमार
(स) सूर्यकान्त (द) सूर्यराज (ब)
प्रश्न– 2 निराला का समस्त साहित्य "निराला रचनावली " नाम से कितने खण्डों में प्रकाशित है–
(अ) छः (ब) चार
(स) आठ (द) बारह (स)
प्रश्न– 3 कवि निराला के अनुसार किसकी लौ बुझ गई है–
(अ) दीपक (ब) पृथ्वी
(स) स्वयं (द) सूर्य (ब)
प्रश्न–4 "सरोज स्मृति" कैसा गीत है–
(अ) गजल गीत (ब) शोक गीत
(स) लोग गीत (द) देश भक्ति गीत (ब)
प्रश्न– 5 सरोज को श्रद्धांजलि के रूप में कवि क्या समर्पित करना चाहता है–
(अ) फूलों का गुलदस्ता (ब) पवित्र जल
(स) पूण्य कर्मों का फल (द) धन–दौलत (स)
प्रश्न–6 कवि निराला कौनसे छन्द के मुख्य प्रवर्तक माने जाते हैं–
(अ) कवित्त छन्द (ब) सवैया छन्द
(स) वर्णिक छन्द (द) मुक्त छन्द (द)

निम्नलिखित अति लघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर दीजिए–
प्रश्न–7 "गीत गाने दो मुझे" कविता में कवि हमें क्या करने की प्रेरणा देता हैं ?

CBSE BHINDER VALLABHNAGAR

उत्तर– ''गीत गाने दो मुझे'' कविता में कवि हमको निरन्तर संघर्ष करने की प्रेरणा देते हैं।

प्रश्न–8 ''गीत गाने दो मुझे'' कविता किस कवि की रचना है ?

उत्तर– '' गीत गाने दो मुझे '' कविता कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की रचना है।

प्रश्न–9 ''सरोज स्मृति'' कविता किस भाव पर केन्द्रित है ?

उत्तर– ''सरोज स्मृति'' कविता निराला की दिवंगत पुत्री सरोज की स्मृतियों पर केन्द्रित है।

प्रश्न–10 '' सरोज स्मृति'' कविता का मुख्य स्वर क्या है ?

उत्तर– ''सरोज स्मृति'' कविता में वात्सल्य से भरा एक पिता का विलाप है।

प्रश्न–11 कवि निराला पुत्री सरोज को किसकी पुत्री के समान मानते हैं ?

उत्तर– कवि निराला पुत्री सरोज को कण्व ऋषि की पुत्री शकुन्तला के समान मानते हैं।

निम्नलिखित लघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

प्रश्न–12 'गीत गाने दो मुझे तो, वेदना को रोकने को'। वेदना को रोकने के लिए कवि गीत गाने की बात क्यों कहता है ?

उत्तर– कवि निराला का जीवन सदा कष्ठमय और वेदनाग्रस्त रहा। उस दशा में अपने जीवन और समाज की वेदना को भूलने के लिए, उससे छुटकारा पाने के लिए कवि गीत गाने की बात कहता है, क्योंकि गीत गाने से अपनी वेदना भी कम हो जायेगी और अन्याय–अत्याचार एवं शोषण से जूझने वालों को भी संघर्ष करने की शक्ति मिल सकेगी।

प्रश्न–13 '' गीत गाने दो'' कविता का केन्द्रिय भाव लिखिए।

उत्तर– ''गीता गाने दो'' कविता में कवि ने उन परिस्थितियों की ओर संकेत किया है जिसमें संघर्षों का सामना करते हुए समर्थ एवं शक्तिशाली व्यक्तियों का जीना भी कठिन हो जाता है। इस दृष्टि से वातावरण प्रतिकूल है। कवि स्वयं अपने जीवन में संघर्ष करते–करते थक गया है। जीवन–मूल्यों का पतन हो रहा है। शोषण और अन्याय के सामने सारे संसार को हार माननी पड़ रही है। मानवता के कहीं दर्शन नहीं होते। मनुष्य की चेतना शक्ति समाप्त हो गई है। कवि ऐसे निराश जीवन में आशा का संदेश देना चाहता है।

प्रश्न–14 ''सरोज स्मृति'' कविता के संकलित अंश का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– 'सरोज स्मृति' के संकलित अंश का प्रतिपाद्य कवि निराला के उल्लास और विषाद की अभिव्यक्ति करना है। इसमें पुत्री सरोज के विवाह को लेकर प्रसन्नता और उचित लालन–पालन न कर पाने से वेदना व्यक्त हुई है। कन्या के असामयिक निधन पर तो कवि वेदना–विषाद की मार्मिक व्यंजना की है।

प्रश्न–15 'सरोज स्मृति' को शोक गीत क्यों कहा जाता है ?

उत्तर– शोक–गीत प्रियजन की मृत्यु के उपरान्त उसके विरह में लिखा जाने वाला गीत होता है। उसमें रचनाकार अपने हृदय की पीड़ा को व्यक्त करता है। 'सरोज स्मृति' भी निराला की ऐसी ही लम्बी कविता है। निराला ने अपनी प्रिय पुत्री सरोज की मृत्यु के उपरान्त यह कविता लिखी थी जिसमें शोक, निराशा और पीड़ा के भावों की अभिव्यक्ति हुई है। पुत्री की मृत्यु के पश्चात कवि को आत्मग्लानि की अनुभूति हुई थी क्योंकि जब वह जीवित थी निराला उसके लिए कुछ नहीं कर सके। इस गीत में कवि के मार्मिक भावों की अभिव्यक्ति हुई है।

प्रश्न–16 'देखा मैंने वह मूर्ति–धीति,
मेरे वसन्त की प्रथम गीति– पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– निराला जी कहते हैं कि मैंने सरोज के दुलहन रूप में शीतलता और धैर्य की उस मूर्ति को देखा जिसे मैंने अपने जीवन के प्रथम वसन्त में मधुर संगीत के रूप में अनुभव किया था। सरोज को दुलहन के रूप में देखकर कवि को अपनी दिवंगत पत्नी तथा उसके साथ यौवन में गाये गीतों की स्मृति हुई। उनको अपना यौवनकाल याद आ गया।

निम्नलिखित निबन्धात्मक प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

प्रश्न–17 '' गीत गाने दो मुझे'' कविता के माध्यम से कवि निराला ने स्वयं के जीवन को व्यक्त किया है। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– ''गीत गाने दो मुझे'' कविता में कवि ने ऐसे समय की ओर इशारा किया है जहाँ स्वार्थपरता एवं अराजकता के कारण निराशा व्याप्त है। वेदना से पीड़ित कवि अपनी व्यथा को भुलाने के लिए गीत गाना चाहता है। कवि के जीवन में अनेक ऐसी घटनाएँ हो चुकी थी जिससे कोई भी आम आदमी कमजोर पड़ जाता है। उनके जीवन में माँ, पत्नी और फिर पुत्री की मृत्यु ने उन्हें भीतर तक तोड़कर रख दिया था। संसार में जिधर देखो अपरिचित ही व्याप्त था। कोई किसी पर विश्वास नहीं करता था। जीवन जीना आसान नहीं रह गया था। कवि के पास जीवन जीने के लिए जो थोड़ा–बहुत था, वह भी छल कपट द्वारा छीना जा चुका था। लोगो में जीने की इच्छा शक्ति खत्म–सी हो गई थी। इसलिए इस कविता के माध्यम से कवि एक बार फिर पृथ्वी पर जागृति गीत गाकर कर्म–शक्ति के भाव जगाना चाहता था।

प्रश्न–18 निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य–सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए–
चोट खाकर राह चलते

CEO BHINDER VALLABHNAGAR

होश के भी होश छूटे,
हाथ जो पाथेय थे, ठग
ठाकुरों ने रात लूटे,
कंठ रुकता जा रहा है,
आ रहा है काल देखो।

भाव पक्ष– कवि का कथन है कि जीवन में संघर्षों से जूझते–जूझते, जो समर्थ थे, जिनमें संघर्षों का सामना करने की शक्ति थी, वे भी हार गए। उनकी जिजीविषा समाप्त हो गई। जो जीवन मूल्यवान था अथवा जीवन में जो मूल्यवान था उसे शोषकों ने, समाज के भेड़ियों ने छीन लिया। ठग तो रात को लूटते हैं पर समाज के इन ठगों ने दिन में ही जीवन की मूल्यवान वस्तु लूट ली है। कंठ रुकता जा रहा है, लगता है काल ने आकर घेर लिया है। मूल भाव यह है कि संसार में जीना कठिन हो गया है। लोग किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गए हैं। जीवन में सभी कुछ खो चुके हैं, पर कुछ कहने में असमर्थ हैं।

कला पक्ष– निराला की अभिव्यक्ति का अपना एक निराला ही ढंग है। वे छायावादी युग के कवि है फिर भी उन्होंने एक नई राह पकड़ी जो उनको प्रगतिवाद के निकट तक ले जाती है। उपर्युक्त पंक्तियाँ मुक्त छन्द में लिखी गई। तत्सम शब्दावली है। भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण एवं भावानुकूल है। ' ठग–ठाकुरों' जैसे प्रतीकों का प्रयोग किया है। 'ठग–ठाकुरों' में अनुप्रास अलंकार और लक्षणा शक्ति है।

उपर्युक्त पंक्तियों का भावपक्ष एवं कलापक्ष दोनों सबल है।

प्रश्न–19"सरोज स्मृति" एक शोकगीत है। इस कथन के आधार पर उक्त कविता की समीक्षा कीजिए।

उत्तर– 'सरोज–स्मृति' हिन्दी काव्य कला में अपने ही ढंग का एकमात्र शोकगीत है। कवि निराला ने वात्सल्य भाव से पूरित होकर अपनी पुत्री की मृत्यु पर लिखी इस कविता में करूणा एवं वेदना को प्रमुखता दी है। 'सरोज–स्मृति' कविता में कवि ने पुत्री के वात्सल्य से लेकर उसकी मृत्यु तक की स्मृतियों को बड़े ही प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया है। इसमें पुत्री सरोज के नववधू स्वरूप का बड़ा ही सुन्दर–सजीव व मार्मिक रूप प्रस्तुत किया है। कविता में जहाँ पुत्री के प्रति प्रेम–भाव है, वहीं कवि निराला के एक भाग्यहीन पिता का संघर्ष, समाज से उसके सम्बन्ध, पुत्री के प्रति बहुत कुछ न कर पाने का अपराध–बोध भी प्रकट हुआ है। निराला ने साथ ही अपने जीवन संघर्षों को भी उभारा है।

प्रश्न–20 निम्नलिखित पंक्तियों के भाव प़क्ष एवं कला पक्ष पर अपने विचार प्रकट कीजिए–

उत्तर– **शृंगार रहा जो निराकार,**
इस कविता में उच्छ्वसित–धार,
गाया स्वर्गीया–प्रिया–संग–
भरता प्राणों में राग–रंग,
रति रूप प्राप्त कर रहा वही,
आकाश बदल कर बना मही।

भावपक्ष– निराला जी कहते हैं कि मैंने तुम्हारे शृंगार में उस शृंगार को देखा जो मेरे काव्य के रस में छिपा रहता है और सहस्र रसधारा के रूप में प्रवाहित होता रहता है। मेरी कविता में जो भावधारा प्रवाहित हो रही थी और जिसे मैंने अपनी स्वर्गीया पत्नी के साथ गाया था वह आज भी दाम्पत्य सुख के रूप में समस्त विश्व में व्याप्त हो रही है। लगता है वह रंग–रूप आकाश से उतर आया है और तेरे शृंगारिक रूप में साकार हो उठा है।

कलापक्ष– उपर्युक्त पंक्तियाँ निराला की कल्पना का सुन्दर उदाहरण है। सरोज के सौन्दर्य का साकार चित्रण किया गया है। सामाजिक शब्दावली का प्रयोग किया गया है। तत्सम शब्दों का प्रयोग है। राग–रंग, रति–रूप में अनुप्रास अलंकार है। भाषा में प्रसाद गुण है मुक्त छन्द और वर्णनात्मक शैली है।

प्रश्न–21 " सरोज– स्मृति" कविता का सार लिखिए।

उत्तर– "सरोज–स्मृति" निराला की लम्बी कविताओं में से एक है। इसका आधार जीवन है। इसमें एक पिता के हृदय की आन्तरिक पीड़ा की अभिव्यक्ति हुई है। यह वह रचना है जो पूत्री सरोज की मृत्यु के दो वर्ष बाद सन् 1935 में निराला जी ने लिखी थी। इसमें पिता का विलाप है। पूरी कविता में पूत्री सरोज के जन्म से लेकर मृत्यु तक की घटनाओं का स्मरण करते हुए उन्हें व्यक्त किया है। प्रस्तुत अंश में पुत्री के विवाह और मृत्यु का वर्णन है। पुत्री के विवाह के समय कवि को अपनी पत्नी याद आती है। कवि ने पुत्री की विदाई के समय स्वयं की माँ का धर्म निभाया। पुत्री के लिए बहुत कुछ न कर पाने के कारण उन्हें पश्चाताप है। इसमें निराला के जीवन संघर्ष की झलक मिलती है। उन्होंने स्वयं कहा है–'दुःख ही जीवन की कथा रही, क्या कहूँ आज जो नहीं कही"।

प्रश्न–22 **भर गया है जहर से**
संसार जैसे हार खाकर,

CBEO BHINDER VALLABHNAGAR

देखते है लोग लोगों को,
सही परिचय न पाकर,
बुझ गई है लौ पृथा की,
जल उठो फिर सींचने को।

उपर्युक्त पंद्याश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

उत्तर–

सन्दर्भ–प्रस्तुत पंक्तियाँ छायावादी कति सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित कविता ''गीत गाने दो मुझे'' से अवतरित है। यह कविता हमारी पाठ्य पुस्तक के अन्तरा भाग–2 में संकलित है।

प्रसंग– इस काव्यांश में कवि ने संसार में व्याप्त शोषण तथा अत्याचार की भयावह स्थिति का चित्रण किया है।

व्याख्या– कवि निराला कहते हैं कि सारा संसार विषमता से भरा गया है। विषमता के कारण जो लोग निराश हो गये हैं तथा हार मान बैठे हैं, अर्थात् जिजीविषा खो बैठे हैं। मनुष्यता हार गई है। विषम परिस्थितियों से संघर्ष करने के कारण लोग जीना नहीं चाहते है। वे जीवन का दाँव हार चुके हैं। लोग एक दूसरे को अपरिचित की तरह देखते हैं। मनुष्य को उसकी सही पहचान नहीं मिल रही है। पारम्परिक स्नेह, सौहार्द का भाव समाप्त हो गया है। उसकी चेतना की लौ बुझ गई है। अतः कवि उस बुझी लौ (जिजीविषा) को पुनः जगाना चाहता है। कवि सांसारिक विषमता को दूर करने और संघर्ष करने के लिए लोगों का आह्वान करना चाहता है। कवि गीत गाकर लोगों को प्रेरणा देना चाहता है कि वे जागें और अपने तेज से पृथ्वी की बुझी हुई लौ (जिजीविषा) को पुनः प्रज्वलित करें। कवि क्रांति चाहता है। विषाक्त और असंगत व्यवस्था को बदलना चाहता है।

विषेश– (1) सार्थक शब्दों का प्रयोग।
(2) भाषा लाक्षणिक एवं प्रसाद गुण से सम्पन्न।
(3) लोग–लोगों में अनुप्रास अलंकार।
(4) 'भर गया है जहर से संसार जैसे हार खाकर' में उपमा अलंकार।
(5) मुक्त छनद

प्रश्न–23 निम्नलिखित पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

मुझ भाग्यहीन की तू संबल,
युग वर्ष बाद जब हुई विकल,
दुःख ही जीवन की कथा रही,
क्या कहूँ आज, जो नहीं कही।
हो इसी क्रम पर वज्रपात,
यदि धर्म रहे नत सदा माथ
इस पथ पर, मेरे कार्य सकल
हो भ्रष्ट शीत के–से शतदल।
कन्ये, गत कर्मों का अर्पण
कर, करता मैं तेरा तर्पण।

प्रसंग– प्रस्तुत काव्यांश कहाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की प्रसिद्ध कविता ''सरोज–स्मृति'' से अवतरित है। कवि स्वर्गीय पुत्री का स्मरण करते हुए भाव विह्वल हो उठता है। इस अंश में निराशा से भरे हुए पिता के भावों का वर्णन हुआ है।

व्याख्या– कवि निराला कहते हैं कि हे पुत्री! मेरे जैसे भाग्यहीन पिता का एकमात्र सहारा तू ही तो थी, लेकिन अब मेरी मृत्यु के इतने वर्षों बाद जब व्याकुलता बढ़ गई है, तब मैं तुझसे क्या कहूँ ? मैंने अपने जीवन की इस व्यथा–कथा को आज तक किसी से नहीं कहा, क्योंकि दुःख ही मेरे जीवन की कथा है। मैंने जीवन में दुःख ही दुःख देखे हैं।

कवि भाव–विह्वल होकर कहता है कि मेरे ऊपर चाहे कितनी ही भयानक विपत्तियाँ आयें। यदि धर्म मेरे साथ रहा तो इन विपदाओं को मस्तक झुकाकर सहज भाव से स्वीकार कर लूँगा। धर्म के रास्ते पर चलते हुए भले ही मेरे समस्त सत्कर्म उसी प्रकार भ्रष्ट हो जायें जैसे सर्दी की अधिकता के कारण कमल पुष्प नष्ट हो जाते हैं, लेकिन मैं अपने रास्ते से नहीं हटूँगा। कवि अन्त में कहता है कि बेटी, मैं अपने जीवन के समस्त शुभ कर्मों को तुझे अर्पण करते हुए तेरा तर्पण करता हूँ। अर्थात् अपने कर्मफलों को श्रद्धांजलि रूप में अर्पित करता हूँ।

विशेष–(1) कवि की विवशता एवं वेदना की स्वाभाविक अभिव्यक्ति है।
(2) करुण एवं वात्सल्य रस का मिश्रण है। 'शीत के–से शतदल' में उपमा अलंकार है।
(3) भाषा सहज, सरल व तत्सम शब्दावली से युक्त है।

प्रश्न –25 सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' साहित्यिक परिचय दीजिए।

उत्तर– सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का जन्म सन् 1898 ई. में बंगाल के मेदिनीपुर जिले के महिषादल गाँव में हुआ था। उनके बचपन का नाम 'सूर्यकुमार' था। पत्नी की प्रेरणा से निराला की साहित्य और संगीत में रूचि पैदा हुई। सन् 1918 में पत्नी का

CBEO BHINDER VALLABHNAGAR

देहान्त हो गया। पत्नी की मृत्यु के बाद कवि ने अपना सारा प्रेम–स्नेह पुत्र–पुत्री पर उड़ेल दिया। किन्तु दैवयोग से विवाहित पुत्री सरोज भी चल बसी। पुत्री की मृत्यु ने निराला को अन्दर तक झकझोर दिया तथा पुत्री की स्मृति में ''सरोज–स्मृति'' नामक एक लम्बी कविता लिखी। निराला का जीवन अभावों और दुःखों को झेलते हुए सन् 1961 ई. में स्वर्ग सिधार गये। हिन्दी की छायावादी कविता के प्रमुख स्तम्भ निराला ने मुक्तछन्द का प्रवर्तन किया। उन्हें भारतीय इतिहास, दर्शन और परम्परा का व्यापक बोध था। श्रमिक–कृषक, प्रकृति एवं संस्कृति आदि के साथ जीवन का संघर्षमय चित्रण उनकी रचनाओं में आद्योपांत दिखाई देता है। इनका समस्त साहित्य 'निराला रचनावली' नाम से आठ खण्डों में प्रकाशित है।

इनकी प्रमुख काव्य कृतियाँ– परिमल, गीतिका, अनामिका, कुकुरमुत्ता, अणिमा, नये पत्ते, बेला, अर्चना, आराधना, गीत–गुंज आदि।

निराला ने सुकुल की बीबी, लिली आदि कहानियाँ तथा अप्सरा, अलका, प्रभावती, कुल्ली भाट आदि उपन्यास लिखे।

निराला की भाषा संस्कृत निष्ठ है। निराला छायावाद के साथ–साथ प्रगतिवादी कवि भी हैं।

पाठ -4 केदारनाथ सिंह (बनारस)

1. बनारस कविता में किस ऋतु का उल्लेख हुआ है?
उत्तरः– बसन्त ऋतु का।
2. नवांकुर किसमें फूटने लगते हैं?
उत्तरः– जो अस्तित्वहीन हैं उनमे नवांकुर फूटने लगते हैं।
3. बनारस शहर में संध्या कैसे उतरती है?
उत्तरः– धीरे–धीरे।
4. सैकड़ों वर्षों से किसकी खडाऊँ बनारस में रखी हैं?
उत्तरः– तुलसीदास जी की।
5. अलक्षित शब्द का अर्थ बताइये।
उत्तरः– अज्ञात या दिखाई न देने वाला।
6. "और खाली होता है यह शहर" यहॉ शहर शब्द किस नगर के लिए प्रयुक्त हुआ है?
उत्तरः– बनारस नगर के लिए प्रयुक्त हुआ है।
7. बनारस कविता में शहर का जीवन कैसे चलता है?
उत्तरः– धीमी गति से चलता है।
8. बच्चे ने हिमालय को किस दिशा में बताया था?
उत्तरः– जिस दिशा में उसकी पतंग उडी जा रही थी?
9. बनारस शहर की दो विशेषताएं बताइये।
उत्तरः– 1. भारत का पुराना शहर है।
2. बनारसी साडियों के लिए प्रसिद्ध है।
10. बनारस के भिखारियों का क्या उल्लेख किया गया है?
उत्तरः– बसन्त ऋतु आगमन से बनारस के भिखारियों को अधिक भीख मिलती है।
11. मुहल्लों में धूप क्यों छा जाती है?
उत्तरः– वसंत के अचानक आगमन से।
12. वसंत के अकस्मात् आगमन से लहरतारा या मडुवाडीह मोहल्लों से क्या चलती हैं?
उत्तरः– धूल भरी आँधियाँ चलती है।
13. 'खाली कटोरों में बसन्त का उतरना' पंक्ति का आशय क्या है?
उत्तरः– 'भिखारियों' के कटोरे भीख से भर जाना।
14. "बिल्कुल बेखबर" में कौनसा अलंकार है?
उत्तरः– अनुप्रास अलंकार।
15. दिशा कविता का मूल आधार क्या है?
उत्तरः– मनोविज्ञान।
16. निम्न पक्तियों में कवि का भाव क्या है?

जो है वह खडा है
बिना किसी स्तम्भ के।

GEO BHINDER VALLABHNAGAR

उत्तरः– बनारस शहर की प्राचीनता, आस्था, विश्वास भावित अत्यन्त सुदृढ है जो बिना किसी सहारे के जन जीवन में समाई हुई है।

17. बनारस कविता में कुछ आम बोलचाल के शब्दों का प्रयोग हुआ है। ऐसे कोई दो शब्द लिखिए।

उत्तरः– 1. सुग बुगाना
2. पचखियाँ

18. शाम धीरे–धीरे होती है
यह धीरे–धीरे होना
यहाँ धीरे–धीरे में कौनसा अलंकार है?

उत्तरः– पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

19. कवि केदारनाथ की कविता बनारस में भाषा के कौनसे गुण का प्रयोग हुआ है?

उत्तरः– प्रसाद गुण युक्त है।

20. कवि केदारनाथ सिंह का जन्म कब और कहाँ हुआ?

उत्तरः– 7 जुलाई 1934 ग्राम चकिया जिला–बलिया (उत्तर प्रदेश)।

प्रश्न 21-बनारस में वसंत का आगमन कैसे होता है और उसका क्या प्रभाव इस शहर पर पड़ता है?

उत्तर– कवि के अनुसार अचानक बनारस में वसंत का आगमन होता है। मुहल्लों के हर स्थानों पर धूल का बवंडर बनने लगता है। इस कारण चारों ओर धूल छा जाती है और लोगों के मुँह में धूल के होने से किरकिराहट उत्पन्न होने लगती है प्राय: वसंत में फूलों की बहार छा जाती है, सुंगध सारे वातावरण में व्याप्त हो जाती है। नए पत्ते तथा कोपलें निकलने लगती है। परन्तु इस वसंत में ऐसा कुछ नहीं है। यहाँ तो बिलकुल अलग तरह का वसंत आता है, जो धूल से भरा होता है। भिखारी के कटोरों के मध्य वसंत उतरता दिखाई देता है। गंगा के घाट लोगों से भर जाते हैं। यहाँ तक इस मौसम में बंदरों की आँखों में नमी दिखाई देती है।

प्रश्न 22 'खाली कटोरों में वसंत का उतरना' से क्या आशय है?

उत्तर– 'खाली कटोरों में वसंत का उतरना' का आशय है कि भिखारी को भीख मिलने लगी है। इससे पहले उन्हें भीख नसीब नहीं हो रही थी। गंगा के घाटों में भिखारी भिक्षा की उम्मीद पर आँखें बिछाए बैठे हुए थे लेकिन उनके भिक्षापात्र खाली ही थे। अचानक घाट पर भीड़ बढ़ने लगी है और लोग उन्हें भिक्षा दे रहे हैं। भिक्षा मिलने से उनके खाने-पीने संबंधी चिंताएँ कुछ समय के लिए समाप्त हो गई हैं और उनके मुख पर प्रसन्नता दिखाई देनी लगी है। अत: कवि इस स्थिति को खाली कटोरों में वसंत का उतरना कहता है।

प्रश्न 23 बनारस की पूर्णता और रिक्तता को कवि ने किस प्रकार दिखाया है ?

उत्तर– कवि बनारस की पूर्णता को उसके उल्लास भरे दिन से दर्शाता है। उसके अनुसार यह शहर हर स्थिति में प्रसन्न रहता है। यहाँ का हर दिन तकलीफों तथा कठिनाइयों के बाद भी उल्लास और आनंद से भरपूर होता है। बनारस की रिक्तता को वह मृत शरीरों के माध्यम से दर्शाता है। उसके अनुसार रोज़ ही यहाँ कितने शव दाह-संस्कार के लिए गंगा घाट की ओर जाते हैं। वे शव कंधों पर सवार होकर अपनी जीवन की अंतिम यात्रा पर निकल रहे होते हैं। यह रिक्तता बनारस का नित्य क्रम है, जो मृत्यु रूपी परम सत्य का अहसास दिलाती है।

प्रश्न 24 बनारस में धीरे-धीरे क्या होता है? 'धीरे-धीरे' से कवि इस शहर के बारे में क्या कहना चाहता है?

उत्तर कवि के अनुसार बनारस शहर में धूल धीरे-धीरे उड़ती है, यहाँ लोग धीरे-धीरे चलते हैं, धीरे-धीरे ही यहाँ मंदिरों में घंटे बजते हैं तथा शाम भी यहाँ धीरे-धीरे होती है। कवि के अनुसार यहाँ सभी कार्य धीरे-धीरे होना इस शहर की विशेषता है। यह शहर को सामूहिक लय प्रदान करता है। धीरे-धीरे शब्दों द्वारा कवि बनारस में हो रहे बदलावों को दर्शाता है। उसके अनुसार सारी दुनिया में तेज़ी से बदलाव हो रहे हैं। इन बदलावों की रफ़्तार इतनी तेज़ है कि पुराना सब खो गया है। लोग स्वयं को इन बदलावों में झोंक रहे हैं। इससे हमारी सभ्यता और संस्कृति को नुकसान पहुँचता है। परन्तु बनारस
इन बदलावों से अभी तक अछूता है। वहाँ बदलाव हो अवश्य रहे हैं परन्तु उनकी रफ़्तार बहुत कम है। इस प्रकार आज भी बनारस की संस्कृति, विरासत तथा धार्मिक मान्यताएँ वैसी की वैसी ही बनी हुई हैं। वह अपने पुराने स्वरूप को बनाए हुए है तेज़ी के इस दौर में वह भूत तथा वर्तमान से बंधे हुए दृढ़तापूर्वक चल रहा है।

CBEO BHINDER VALLABHNAGAR

प्रश्न 25 धीरे-धीरे होने की सामूहिक लय में क्या-क्या बँधा है?

उत्तर – धीरे-धीरे की इस सामूहिक लय में पूरा बनारस बंधा हुआ है। यह लय इस शहर को मजबूती प्रदान करती है। धीरे-धीरे की सामूहिक लय में यहाँ बदलाव नहीं हुए हैं और चीज़ें प्राचीनकाल से जहाँ विद्यमान थीं, वहीं पर स्थित हैं। गंगा के घाटों पर बंधी नाव आज भी वहीं बँधी रहती है, जहाँ सदियों से बँधी चली आ रही हैं। संत कवि तुलसीदास जी की खड़ाऊ भी सदियों से उसी स्थान पर सुसज्जित हैं। भाव यह है कि धीरे-धीरे की सामूहिक लय के कारण शहर बँधा ही नहीं है बल्कि वह इस कारण से मजबूत हो गया है। अपने आस-पास हो रहे बदलावों से यह शहर अछूता है। यहाँ कि प्राचीन परंपराएँ, संस्कृति, मान्ताएँ, धार्मिक आस्थाएँ, ऐतिहासिक विरासत वैसी की वैसी ही हैं। लोग आज वैसे ही गंगा को माता की संज्ञा देकर उसकी पूजा अर्चना करते हैं, उनमें आधुनिक सभ्यता का रंग नहीं चढ़ा है इसलिए यह शहर अपने पुराने स्वरूप को संभाले हुए बढ़ रहा है।

प्रश्न 26 'सई साँझ' में घुसने पर बनारस की किन-किन विशेषताओं का पता चलता है?

उत्तर – कवि के अनुसार सई-साँझ के समय यदि कोई बनारस शहर में जाता है, तो उसे निम्नलिखित विशेषताओं का पता चलता है।-

क) यहाँ मंदिरों में हो रही आरती के कारण सारा वातावरण आलोकित हो रहा होता है।

ख) आरती के आलोक में बनारस शहर की सुंदरता अतुलनीय हो जाती है। यह कभी आधा जल में या आधा जल के ऊपर सा जान पड़ता है।

ग) यहाँ प्राचीनता तथा आधुनिकता का सुंदर रूप दिखाई देता है। अर्थात जहाँ एक ओर यहाँ प्राचीन मान्यताएँ जीवित हैं, वहीं यह बदलाव की ओर भी अग्रसर है।

घ) गंगा के घाटो में कहीं पूजा का शोर है, तो कहीं शवों का दाहसंस्कार होता है, जो हमें जीवन के कड़वे सत्य के दर्शन कराता है।

प्रश्न 27 बच्चे का उधर-उधर कहना क्या प्रकट करता है?

उत्तर – 'बच्चे का उधर-उधर कहना' प्रकट करता है कि उस दिशा में उसकी पतंग उड़ी जा रही है। जहाँ उसकी पतंग उड़ रही है, वह उसी दिशा को जानता है। हिमालय की दिशा का उसे ज्ञान नहीं है। वह तो उसी दिशा पर अपना ध्यान केन्द्रित किए हुए है।

प्रश्न 28 'मैं स्वीकार करूँ, मैंने पहली बार जाना हिमालय किधर है'- प्रस्तुत पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – प्रस्तुत पंक्तियों का भाव है कि मैं पहले समझता था कि मैं जानता हूँ हिमालय कहाँ है। अर्थात मुझे मालूम था कि हिमालय उत्तर दिशा में स्थित है। परन्तु बच्चे से इसके बारे में विपरीत दिशा जानकर मालूम हुआ कि जो मुझे पता है, वह तो गलत है। हर मनुष्य का सोचने-समझने का नजरिया तथा उसका यथार्थ अलग-अलग होता है। उसी के आधार पर वह तय करता है कि क्या सही है। बच्चे के लिए उसकी पतंग बहुत महत्वपूर्ण थी। हिमालय की दिशा से उसे कोई लेना-देना नहीं है। वह तो बस अपनी पतंग को पा लेना चाहता है। वह पतंग जिस दिशा में बढ़ती है, वही उसका सत्य है।

पाठ -5 जयशंकर प्रसाद

प्र.1 'छलछल' में अलंकार है –
(अ) अनुप्रास (ब) पुनरूक्तिप्रकाश (स) उपमा (द) उत्प्रेक्षा (ब)

प्र.2 देवसेना ने जीवन में भ्रमवंश कौन–सी भूल की ?
(अ) राष्ट्र रक्षा का व्रत लिया (ब) स्कंदगुप्त से प्रेम किया
(स) स्कंदगुप्त के प्रेम को ठुकराया (द) भीख मांगने का व्रत लिया (ब)

प्र.3 देवसेना की वेदना का मूल कारण है –
(अ) आर्यावर्त पर हूणों का आक्रमण (ब) भाई बन्धुवर्मा की मृत्यु का शोक
(स) स्कंदगुप्त का प्रेम नहीं मिलना (द) लोगों की कुदृष्टि (स)

प्र.4 लौटा लो यह अपनी थाती ' यहाँ थाती ' शब्द का व्यजंनात्मक अर्थ है –

CBEO BHINDER VALLABHNAGAR

(अ) धरोहर (ब) सम्पत्ति (स) दी हुई वस्तु (द) प्रेम (द)
प्र.5 कार्नेलिया ने अपने गीत में सही मायने में भारत की पहचान का मूलाधार क्या बताया है ?
(अ) आतिथ्य सत्कार (ब) भारतीयों का करूणा भाव
(स) सांस्कृतिक गौरव और प्राकृतिक सौदंर्य (द) सूर्योदय का दृश्य (ब)
प्र.6 देव सेना का गीत प्रसाद जी के किस नाटक से उद्धृत किया गया है –
(अ) चन्द्रगुप्त (ब) स्कंदगुप्त (स) अजातशत्रु (द) ध्रुवस्वामिनी (ब)
प्र.7 कार्नेलिया का गीत प्रसाद जी के किस नाटक से उद्घृत किया गया है –
(अ) स्कदंगुप्त (ब) चन्द्रगुप्त (स) अजातशत्रु (द) ध्रुवस्वामिनी (ब)
प्र.1 'देवसेना का गीत' किस कवि द्वारा रचित है ?
उत्तर – 'देवसेना का गीत' छायावादी महाकवि जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित है।
प्र.2 'देवसेना का गीत' कविता में किस भाव को प्रमुखता मिली है ?
उत्तर – 'देवसेना का गीत' में निराशा व वेदना के भावों को प्रमुखता मिली है ।
प्र.3 देवसेना कौन थी ?
उत्तर – देवसेना मालवा के राजा बंधुवर्मा की बहन थी ।
प्र.4 'देवसेना का गीत' जयशंकर प्रसाद के कौनसे नाटक से लिया गया है ?
उत्तर – 'देवसेना का गीत' प्रसाद के 'स्कंदगुप्त' नाटक से लिया गया है।
प्र.5 'देवसेना का गीत' किसके माध्यम से कहा गया है ?
उत्तर – 'देवसेना का गीत' प्रकृति और मनुष्य के माध्यम से कहा गया है।
प्र.6 देवसेना अपने जीवन में किससे विदा लेती है ?
उत्तर – देवसेना अपने जीवन में भावी सुखों, आशाओं व आकांक्षाओं से विदा लेती है।
प्र.7 कार्नेलिया कौन थी ?
उत्तर – कार्नेलिया सिकन्दर के सेनापति सिल्यूकस की बेटी थी।
प्र.8 'कार्नेलिया का गीत' प्रसाद के कौनसे नाटक से लिया गया है।
उत्तर – 'कार्नेलिया का गीत' प्रसाद के 'चन्द्रगुप्त' नाटक से लिया गया है।
प्र.9 'अरूण यह मधुमय देश हमारा' कविता को किस रूप में प्रस्तुत किया गया है ?
उत्तर – भारतवर्ष की विशिष्टता एवं पहचान के रूप में प्रस्तुत किया गया है।
प्र.10 भारतवर्ष की क्या विशेषता बताई गई है ?
उत्तर – अनजान को सहारा देना लहरों को किनारा देना भारतवर्ष की विशेषता बताई गई है।
प्र.11 'कार्नेलिया का गीत' में भारतवर्ष कहाँ बताया गया है ?
उत्तर – जिस पर पक्षी अपने प्यारे घोंसले की कल्पना कर जिस ओर उड़ते है वही प्यारा भारतवर्ष है।
प्र.12 'कार्नेलिया का गीत' का कथ्य क्या है ?
उत्तर – भारत देश की गौरवगाथा तथा प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन प्रमुख कथ्य है ।
प्र.13 ' हेमकुम्भ ले उषा सवेरे ' में कौनसा अलंकार है ?
उत्तर – इस पंक्ति में प्रकृति का मानवीकरण व रूपक अलंकार है।
प्र.14 ' अनजान को मिलता एक सहारा ' से भारत की कौनसी विशेषता पता चलती है ?
उत्तर – ' अतिथि देवो भव ' अर्थात् आने वाले सभी अतिथि देवता समान संस्कृति का पता चलता है।
प्र.1 ' कार्नेलिया का गीत ' कविता का भाव–सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए ।
उत्तर – ' कार्नेलिया का गीत ' का भाव–सौन्दर्य यह है कि यहाँ प्रातःकालीन परिवेश अतीव मनोरम रहता है तथा यहाँ पर अनजान लोगों को सहारा तथा लहरों को किनारा मिल जाता है। भारत प्राचीन देश है, जहाँ पर सभ्यता का सूर्य अपनी आभा–लालिमा सर्वप्रथम बिखेरता है। इस गीत में प्रकृति के माध्यम से मानवीकरण का प्रयोग प्रशस्य है।
प्र.2 ''मेरी आशा आह ! बावली, तूने खो दी सकल कमाई।'' पंक्ति के आधार पर देवसेना की मनोव्यथा का चित्रण कीजिए ।
उत्तर – प्रेमी स्कन्दगुप्त द्वारा पहले तो उपेक्षा करने तथा बाद में प्रेम का प्रस्ताव रखने से देवसेना अत्यधिक व्यथित होकर सोचने लगी कि जीवन भर जिस सुख की आशा लगी रही वही आज सामने होकर भी खो दी। इसलिए आशा को बावली कहा। जब प्रेम नहीं पाया था तब पाने की आशा थी और जब मिला तो उसे ठुकराकर फिर आशा है।

प्र.3 '' लौटा लो यह अपनी थाती मेरी करूणा हा–हा खाती। '' इस पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए ।
उत्तर – देवसेना स्कन्दगुप्त की प्रेम रूपी धरोहर को लौटाना चाहती थी, क्योंकि जिससे उसने प्रेम किया, उसी ने उसकी उपेक्षा भी की। अब जीवन के अन्तिम मोड़ पर उस प्रेम को याद रखकर वह क्या करेगी ? जिस प्रेम ने उसे जीवन भर करूणा और पीड़ा में डुबाये रखा अब उसे रखने से भी क्या लाभ रहेगा ?

CEO BHINDER VALLABHNAGAR

प्र.4 निम्न पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए–

'' पथिक उनींदी श्रुति में किसने यह विहाग की तान उठाई। ''

उत्तर – जिस प्रकार पथिक थककर किसी वृक्ष की छाया में सुखद स्वप्नों में सोया हो और उसे कोई विहाग राग सुना दे, तो उस समय पथिक को वह विहाग अच्छा नहीं लगता। इसी प्रकार जीवन के उतार में स्कन्दगुप्त देवसेना से प्रणय–निवेदन करता है, तो तब उसे वह विहाग राग की तरह अच्छा नहीं लगा।

प्र.5 ' अरूण यह मधुमय देश हमारा ' कविता में भारत की विशेषताओं का चित्रण है। समझाये।

उत्तर – ' अरूण यह मधुमय देश हमारा ' कविता में कवि भारत की विशेषताओं का चित्रण करते हुए बताता है कि सूर्य की प्रातःकालीन किरणें सर्वप्रथम यहीं पड़ती हैं। यहाँ सभी को आश्रय मिलता है और सभी के प्रति करूणा का प्रसार होता है। भारत मानवता का उपासक और आदर्शों का निर्वाहक देश है।

प्र.6 '' बरसाती आँखों के बादल–बनते जहाँ भरे करूणा जल। '' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – इस पंक्ति में कवि बताता है कि यहाँ भारतीयों की मानवीय संवेदना एवं करूणा भावना के कारण सभी को आश्रय मिलता है। जिस प्रकार बादल आकर सन्तप्त धरती को अपने जल–कणों की वर्षा कर शीतल कर देते हैं, उसी प्रकार भारत के लोग भी पीड़ित –दुःखित मानवता को देखकर संवेदना और करूणा भाव प्रकट करते हैं।

प्र.7 '' उड़ते खग जिस ओर मुँह किए–समझ नीड़ निज प्यारा। '' काव्य–पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – इस पंक्ति का आशय यह है कि प्रत्येक देश का व्यक्ति यहाँ आकर आश्रय पाता है और वह भारतीयों की मानवीय करूणा का पात्र भी बन जाता है। इसीलिए जिसे अपना प्यारा घोंसला समझकर संध्या काल को अनेक पक्षी आश्रय और विश्राम प्राप्ति के लिए आते रहते हैं। यह भारत देश वैसे ही सभी को आश्रय प्रदान करता रहता है।

प्र.8 ' देवसेना का गीत ' का मूल भाव या आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – देवसेना का गीत ' का मूल भाव या आशय यह है कि व्यक्ति अपने द्वारा किये गये कार्यो में निराशा वेदना मिले, तो भी उसे हार नहीं माननी चाहिए और अपनी समस्त दुर्बलताओं का सामना कर
संघर्षपूर्वक जीवन–पथ पर बढ़ना चाहिए। वेदना एवं कष्ट के क्षणों में हार न मानकर सदा अपने निश्चय पर अटल रहना चाहिए।

प्र.9 ' कार्नेलिया का गीत ' का मूल प्रतिपाद्य या आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – ' कार्नेलिया का गीत ' का मूल प्रतिपाद्य भारत की गौरव–गाथा तथा प्राकृतिक सौन्दर्य का चित्रण कर उसकी विशेषताओं का प्रकाशन करना है। भारत प्राचीन काल से मानव–सभ्यता का देश और मानवीय आदर्शो का प्रेरक रहा है। यहाँ पर हर किसी को आश्रय मिलता है। यहाँ पर करूणा, मंगल भावना एवं आत्मीयता का सद्भाव रहता है।

प्र.1 '' मैंने भ्रमवश जीवन संचित, मधुकरियों की भीख लुटाई '' – पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – देवसेना निराश और दुखी होकर जीवन के उस समय को याद करती है, जब उसने स्कन्दगुप्त से प्रेम किया था उन्हीं क्षणों को वह याद करती हुए कहती है कि मैंने स्कन्दगुप्त से प्रेम किया ओर उन्हें पाने की चाह की किन्तु यह मेरा भ्रम ही था। मैंने आज जीवन की आकांक्षा रूपी पूँजी को भीख की तरह लुटा दिया है। मैं चाहते हुए भी स्कन्दगुप्त का प्रेम नहीं पा सकी। आज मुझे अपनी इस भूल पर पश्चाताप होता है।

प्र.2 कवि ने आशा को बावली क्यों कहा हैं ?

उत्तर – आशा व्यक्ति को भ्रमित कर देती है उसे बावला बना देती है। प्रेम में प्रेमी अधिक बावले हो जाते है क्योंकि प्रेम अंधा होता है। देवसेना भी स्कन्दगुप्त के प्रेम में बावली हो गई थी। उसने बिना सोचे–समझे स्कन्दगुप्त से प्रेम किया और अंत में उसे अपनी आशाओं को गवाँना पड़ा। इसलिए कवि ने आशा को बावली कहा है।

प्र.3 '' मैंने निज दुर्बल....होड़ लगाई '' इन पंक्तियों में ''दुर्बल–पद–बल'' और ' हारी होड़ 'में निहित व्यंजना स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – देवसेना जीवनभर संघर्ष करने के कारण दुर्बल हो गई है। दुर्बल पद बल की व्यंजना है कि देवसेना निराशा हो गई है, उसमें संघर्ष करने की शक्ति नहीं रही है, फिर भी वह विषम परिस्थितियों में संघर्ष कर रही है।

' हारी–होड़ ' की व्यंजना है कि देवसेना जानती है कि वह स्कन्दगुप्त से प्रेम में सफल नहीं हो सकती उसकी प्रेमपात्र नहीं बन सकती, फिर भी वह उससे प्रेम करती है, जीतने की कोशिश करने पर भी उसे हार मिली, यही वह कहना चाहती है।

प्र.4 जयशंकर प्रसाद का साहित्यिक परिचय दीजिए।

उत्तर – जयशंकर प्रसाद भारतीय संस्कृति से प्रभावित ऐस महाकवि थे, जिन्होंने अपनी रचनाओं में भारत भूमि की महिमा, भारतीय जीवन–मूल्यों, त्याग–बलिदान एवं राष्ट्रीय जागरण आदि का स्वर व्यक्त किया। प्रसाद बहुमखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने 'झरना', 'लहर', 'कामायनी' आदि काव्य; 'अजातशत्रु', 'स्कन्दगुप्त', 'चन्द्रगुप्त', 'ध्रुवस्वामिनी' आदि नाटक; 'कंकाल', 'तितली', 'इरावती' उपन्यास; 'आँधी', 'इन्द्रजाल', 'आकाशदीप' आदि कहानी–संग्रह तथा 'काव्य और कला तथा अन्य निबन्ध–संगह की रचना कर साहित्य की सभी विधाओं पर लेखनी चलायी।

CBEO BHINDER VALLABHNAGAR

पाठ -6 तुलसीदास

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न :–

प्र01 :– तुलसीदास द्वारा रचित ''भरत राम का प्रेम'' किस काव्य से लिया गया है–
उत्तर : अयोध्या कान्ड से
प्र02 :– ''भरत राम का प्रेम'' पदों में किस प्रसंग का वर्णन है–
उत्तर : ''भरत राम का प्रेम'' पदों में राम द्वारा वन गमन तथा भरत द्वारा चित्रकूट जाकर उन्हें वापस लाने के प्रसंग का वर्णन है।
प्र03 :– भरत ने किन उदाहरणों से माता को कुमाता नहीं माना है–
उत्तर : 1. जंगली घांस से उत्तम धान उत्पन्न नहीं हो सकता।
2. काले घोंघे से मोती नहीं मिल सकता।
प्र04 :– किस की आज्ञा पाकर भरत अपनी बात कहने के लिए सभा में खड़े हुए?
उत्तर : मुनि वशिष्ठ की आज्ञा पाकर।
प्र05 :– राम वियोग में कौशल्या किसे छाती से लगाती है–
उत्तर : राम की जूतियों को।
प्र06 :– राम को वापस लाने भरत कहाँ गए थे?
उत्तर : चित्रकूट
प्र07 :– कवि ने माता कौशल्या के दुःख की तुलना किस से की है–
उत्तर : कवि ने माता कौशल्या के दुःख की तुलना मोर से की है।
प्र08 :– खेलते समय भरत जब हारने वाले होते थे तो राम क्या करते थे?
उत्तर : राम स्वंय हार जाते थे और भरत को जिता देते थे।
प्र09 :– कौशल्या राम से संदेश में क्या कहती है–
उत्तर : कौशल्या संदेश में राम से कहती है कि उसके पाले पोसे घोड़े वियोग में व्याकुल हैं।

प्र010 :– माता कौशल्या राम की किन वस्तुओं को देखकर उनका स्मरण करती है–
उत्तर : माता कौशल्या श्री राम के बचपन के छोटे–छोटे धनुष बाण एवं उनकी छोटी जूतियों को देख कर स्मरण करती है।

प्र011 :– महाकवि तुलसीदास की प्रसिद्ध कृतियों के नाम बताइए?

उत्तरः– राम चरित्र मानस, विनय पत्रिका, कवितावली, दोहावली, कृष्ण गीतावली आदि।

प्र012 :– तुलसीदास जी के गुरु का क्या नाम था?
उत्तरः– तुलसी दास जी के गुरु का नाम नरहरि दास था।

लघुत्तरात्मक प्रश्न :–

प्र0 13 :– ''पुलकि सरीर सभा भए ठाढे'' पंक्ति में जिस सभा का उल्लेख है वह कहाँ हुई?
उत्तरः– इस पंक्ति में जिस सभा का उल्लेख है वह चित्रकूट में हुई। जब भरत को राम के वनवास का पता चला तो वह उन्हें अयोध्या वापस लौटा लाने के लिए चित्रकूट जा पहूँचे वहीं यह सभा आयोजित की गई।
प्र014 :– जननी निरखति बान धनुहियां।
बार बार उर नैयनि लावति प्रभुजु की ललित पनहियाँ।।
पंक्तियों का भावार्थ लिखिए।
उत्तरः– माता कौशल्या श्री राम के खेलने वाले धनुष बाण को देखती है और उनकी सुन्दर छोटी–छोटी जूतियों को अपने हृदय और आंखों से बार–बार लगाती है।

प्र015 :– तुलसी दास के संकलित काव्यांश के आधार पर भरत और राम के प्रेम पर टिप्पणी कीजिए।
उत्तरः– छोटे भाई के रुप में राम भरत को अपना यथोचित स्नेह देते थे। राम भरत के अपराध करने पर भी उन पर क्रोध नहीं करते थे। राम भरत के साथ खेलते हुए स्वंय हार जाते और भरत को जिता देते थे। भरत अपने बडे भाई का सदा सम्मान करते थे। भरत और राम का एक दूसरे के प्रति बहुत प्रेम था।

CBSE BHINDER VALLABHNAGAR

प्र016 :– भरत के आत्म परिताप में तुलसी दास ने उसके चरित्र की किन विशेषताओं को प्रकट किया है।

उत्तरः– भरत का आत्म परिताप इस बात का द्योतक है कि वे साधु स्वभाव के हैं और राम के प्रति अगाध स्नेह रखते हैं उनकी माता कैकई ने जो कुछ किया उसमें उनकी कोई सहभागिता नहीं है और राम का वन गमन में जो भी कष्ट उठाने पड रहे हैं उसके लिए वह स्वंय को दोषी मान रहे हैं।

प्र017 :– ''मैं जानउ निज नाथ सुभाऊ'' इन पंक्तियों के माध्यम से राम की किन विशेषताओं का उल्लेख किया गया है?

उत्तरः– इन पंक्तियों के माध्यम से राम की निम्न विशेषताओं का उल्लेख किया गया है–

1) श्री राम बहुत दयालू व स्नेही हैं।
2) भरत श्री राम के प्रिय अनुज थे उन्होंने हमेशा भरत के हित के लिए कार्य किया।
3) श्री राम ने खेलों में भी अपने प्रिय भरत के प्रति अपना स्नेह प्रदर्शित किया है।
4) श्री राम ने अपराधियों पर भी कभी क्रोध नहीं किया है।

प्र018 :– ''रहि–चकि चित्रलिखी सी'' का अर्थ अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तरः– इस पंक्ति में पुत्र वियोगिनी माता की पीडा दिखाई देती है। माता कौषल्या श्री राम से वियोग के कारण दुःखी और आहत है। वह श्री राम की वस्तुओं से अपना मन बहलाने की कोषिष कर रही है, लेकिन उनका दुःख लगातार बढता जा रहा है। वह अपने बैटे को होने वाली कठिनाइयों के बारे में सोच–सोच कर दुःखी हो जाती है और खुद की परवाह करना भी छोड देती है। वह इतनी दुःखी है कि उनके चहरे पर कोई अभिव्यक्ति नहीं है।

प्र019 :– ''भरत राम का प्रेम'' एवं गीतावली के पदों में व्यक्त भाषा शैली पर प्रकाष डालिए।

उत्तरः– तुलसीदास जी ने भरत राम के प्रेम में अवधी भाषा का प्रयोग किया है तथा गीतावली के पदों में ब्रज भाषा का प्रयोग किया है। इनमें कला पक्ष बहुत सुन्दर है। इनहोनं प्रबन्ध काव्य शैली व मुक्तक काव्य शैली दोनों का प्रयोग किया है। इनके काव्य में छंदों एवं अलंकारों की भी विषिष्ठ छठा देखने योग्य है।

प्र020 :– ''बंधु बोली जेंइय जो भावै गई निछावरी मैया।''
इस पंक्ति में काव्य सोंदर्य पर प्रकाष डालिए।

उत्तरः– **भाव पक्ष–** माता कौषल्या राम के वन गमन के उपरान्त वात्सल्य वियोग से पिडीत होकर भावुक्ता में प्रातः काल श्री राम को जगाते हुए कहती है कि भाइयों को बुला कर उनके साथ भोजन कर लो। इस तरह इस में माता के वियोग वात्सल्य की स्मरण दषा का चित्रण हुआ है।

कला पक्ष– वात्सल्य रस की वियोग वथा एवं स्मरण दषा वर्णित है। अनुप्रास अलंकार

और ब्रज भाषा का प्रयोग हुआ है एवं पद छंद हैं।

पाठ -7 – विष्णु खरे

1 . कवि अपने वर्तमान की जीवन शैली में किस कारण से व्यथित है –
(अ) स्वार्थपरकता का माहौल बनने से (ब) लोगो के धनवान बनने से
(स) लोगो के निर्धन होने से (द) आपसी खीचतान का वातावरण बनने से (अ)

2 . कवि भ्रष्ट लोगो का विरोध नहीं करते है क्योंकि–
(अ) कवि उन्हें अनदेखा करना चाहते है (ब) कवि चुप रहना चाहते है
(स)कवि को उनसे कोई समस्या नहीं हैं (द) कवि स्यवं को व्यवस्था का विरोध करने में अक्षम पाते है
(द)
3 हाथ फैलाने वाले को मानते है–
(अ) ईमानदार (ब) लालची
(स) मतलबी (द) प्रतिद्वंदी (अ)
4 एक कम कविता में किस पर व्यंग्य किया गया है–
(अ) धोखे बाज पर (ब) मेहनतकश मजदूर पर
(स) भ्रष्टाचारी पर (द) ईमानदार पर (स)
5 एक कम कविता भारतीय समाज के किस काल की जीवन शैली को रेखांकित कर रही है–
(अ) स्वतंत्रता पूर्व (ब) स्वतंत्र्योतर
(स) आदिकाल (द) स्वतंत्रता संग्राम के समय (ब)
6 एक कम कविता में कवि किसका वर्णन कर रहा है–

GEO BHINDER VALLABHNAGAR

(अ) टार्च बेचने वाले का (ब) अखबार विक्रेता
(स) मांगने वाला (द) खिलौने वाला (स)
7 कवि ने लोगो के आत्म निर्भर,मालामाल और गतिशील होने के लिए किन तरीकों की ओर संकेत किया है ? अपने शब्दों में लिखिए
उत्तरः– कवि ने लोगो के आत्म निर्भर,मालामाल और गतिशील होने के लिए अनेक तरीकों की ओर संकेत किया है आजादी के बाद आगे बढने की होड में सभी अपना ईमान खो बैठे है। सभी लोग मेहनत कर नहीं अपना ईमान बेचकर , झूठ बोलकर और धोखे से आत्मनिर्भर मालामाल और गतिशील बने हुए है। उन्हें किसी दूसरे के दुखों की कोई परवाह नही है।
8 हाथ फैलाने वाले व्यक्ति को कवि ने ईमानदार क्यों कहा है?
उत्तर :– जो व्यक्ति हाथ फैलाता है वह भ्रष्टाचारी नहीं होता क्योंकि भ्रष्टाचार नहीं करने के कारण ही उसकी यह स्थिति हुई है कि दूसरों के आगे हाथ फैलाने पडे अगर वह भ्रष्टाचारी होता तो उसके पास इतना धन होता कि वह दूसरों के आगे नहीं झूकता ।
9 मैं तुम्हारा विरोधी प्रतिद्वंदी या हिस्सेदार नहीं से कवि का क्या अभिप्राय है?
उत्तर :– कवि उनकों संबोधित करना चाहता है जो भ्रष्टाचार तथा अनैतिकता में लिप्त हैं। कवि कहता है कि तुम्हें मुझसे डरने या प्रतिस्पर्धा करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि मैं तुम्हारा प्रतिद्वंद्वी नहीं हूं।
10 शिल्प सौंदर्य स्पष्ट कीजिए
(क) कि अब जब कोई.....या बच्चा खडा है।
उत्तर :– कवि ने मुक्त छंद में कविता की रचना की है। इसकी भाषा सरल व सहज है। इसमें लाक्षणिकता का गुण है। हाथ फैलाना मुहावरे का प्रयोग किया गया है।
(ख) मैं तुम्हारा विरोधी प्रतिद्वंदी.....निश्चिंत रह सकते है।
उत्तर :– कवि ने मुक्त छंद में कविता की रचना की है। इसकी भाषा सरल व सहज है। इसमें प्रतीकात्मकता का गुण है। इसमें व्यंजना का भी प्रयोग किया गया है।
11 सत्य क्या पुकारने से मिल सकता है? युधिष्ठिर विदुर को क्यों पुकार रहे है– महाभारत के प्रसंग से सत्य के अर्थ खोजे
उत्तर :– सत्य अगर पुकारने से मिला तो आज संसार में असत्य नाम का शब्द होता ही नहीं। युधिष्ठिर सत्य के ज्ञान के लिए विदुर को पुकार रहे है सत्य का ज्ञान करना चाहते थे। उन्हें पता लगा कि विदुर जी के साथ सत्य का ज्ञान है तो वह विदुर जी के पास पहुंच गए।
12 सत्य का दिखना और ओझल होना से कवि का क्या तात्पर्य है?
उत्तर :– सत्य सभी व्यक्ति के अंदर होता है। फर्क सिर्फ इतना है कि हर व्यक्ति सत्य को महसूस नहीं कर सकता। सत्यता ओझल हो जाती है जब झूठ सत्य के सामने भारी हो जाता है। सत्य अगर सही तरीके से बोला जाए तो सत्य सत्य है। अगर सत्य को लोग तोड मरोड कर प्रस्तुत करते है,तो सत्य ओझल हो जाता है। सत्य हमेशा उनकों ही दिखता है, जो सत्य को अपना सब कुछ मान लेते है। अर्थात हमेशा सच्चाई के पथ पर चलते है। इसलिए कवि कहते है कि सत्य का दिखना और ओझल होता है।
13 सत्य और संकल्प के अंतर्संबंध पर अपने विचार व्यक्त किजिए ।
उत्तर :– सत्य और संकल्प एक दूसरे से जुडे हुए है उनके बीच एक अटूट संबंध है, सत्य संकल्प के बिना अधूरा ह,संकल्प के बिना सत्य का ज्ञान नहीं हो सकता सत्य तभी प्राप्त होता है जब मन से सत्य के मार्ग में संकल्प लेकर आगे बढे ।
14 युधिष्ठिर जैसा संकल्प से क्या अभिप्राय है?
उत्तर :– युधिष्ठिर संपूर्ण महाभारत में एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने हमेशा सत्य का साथ दिया। सत्य ही उनके जीवन का महत्तवपूर्ण आधार था। युधिष्ठिर इतने सत्यवादी थे। युधिष्ठिर के जीवन में अनेक कठिनाइयां आई,मगर उन कठिनाई की परिस्थितियों में भी उन्होंने सत्य का साथ नहीं छोडा।
15 कविता में बार–बार प्रयुक्त हम कौन है और उसकी क्या चिंता है?
उत्तर :– कविता में हम शब्द का प्रयोग सत्य की खोज करने वाले लोगों के लिए किया है सत्य की खोज करने वालों लोगों की यह चिंता है कि वह सत्य को अभी तक पहचान नहीं पाए हैं उनको सत्य का मूल रूप समझ नहीं आया है।
16 सत्य की राह पर चल। अगर अपना भला चाहता है तो सच्चाई को पकड ।– इन पंक्तियों के प्रकाश में कविता का मर्म खोलिए ।
उत्तर :– आज जिस समाज में हम सभी रहते है , वह समाज धर्म के पथ पर अग्रसर हो रहा है। आज सच्च्वाई पर झूठ ज्यादा मजबूत हो गया है। आज झूठ बोलने वाले को न्याय मिलता है। सच बोलने वाले को अन्याय।

CEO BHINDER VALLABHNAGAR

अगर समाज में परिवर्तन करना है व न्याय स्थापित करना होगा तो सत्य के मार्ग पर चलना पडेगा। इसलिए कवि लोगों से कहते है समाज तथा अपनी अच्छाई चाहते हो तो सत्य के मार्ग पर अग्रसर रहों ।

पाठ -8 – विद्यापति

प्रश्न. 1 विरहिणी नायिका का प्रेम के विषय में क्या विचार है?
उत्तर – विरहिणी नायिका को प्रेम पल–पल, प्रतिदिन, प्रतिक्षण नूतन स्वरूप को प्राप्त लगता है।
प्रश्न. 2 कवि विद्यापति की प्रमुख रचनाओं के नाम लिखिए–
उत्तर. कीर्तिलता, कीर्तिपताका, पदावली, पुरुष परीक्षा आदि थे ।
प्रश्न. 3 विरह में राधा का शरीर किसके समान क्षीण होता जा रहा है ?
उत्तर. विरह में राधा का शरीर चतुर्दशी के चन्द्रमा के समान क्षीण होता जा रहा है।
प्रश्न. 4 कवि विद्यापति के अनुसार नायक और नायिका कौन है ?
उत्तर. कवि विद्यापति के नायक कृष्ण और नायिका राधा को माना है।
प्रश्न. 5 के पतिआ लए जाएत रे, मोरा पिअतम पास पंक्ति का अभिप्राय है?
उत्तर. वर्षा ऋतु आ गई है, नायिका को अपने नायक की याद सताने लगी है और वह अपने नायक को वापस जाने को संदेश भेजना चाहती है।
प्रश्न. 6 प्रियतमा के दुःख का क्या कारण है?
उत्तर. प्रियतमा इसलिए दुःखी है क्योंकि प्रियतमा (नायक) पास नहीं है। प्रियतमा के दुःख का मूल कारण है प्रियतमका परदेश गमन जिससे उसे विरह दुःख झेलना पड़ रहा है।
प्रश्न. 7 कोकिल–कलख मधुकर धुनि सुनि
कर देई झांपई कान
इन पक्यिों का आशय स्पष्ट कीजिए।
उत्तर. विरहणी नायिका पहले ही व्यथित है, फिर कोयल की मधुर कूक और भौरों की गुंजार उसे और भी व्यथित कर देती है, क्योंकि इससे उसे प्रियतम का स्मरण हो आता है उसकी विरह वेदना उद्दीप्त हो जाती है इसलिए वह अपने कान बन्द कर देती है इससे कवि ने विरहिणी की मनोदशा का मार्मिक चित्रण किया है।
प्रश्न. 8 कोयल और भौंरो के कलख का नायिका पर क्या प्रभाव पड़ता है।
उत्तर. नायिका को तनिक भी नहीं सुहाती क्योंकि उसका प्रियतम परदेश गया है। वह अपने कान बंद कर लेती है।
प्रश्न. 9 कवि विद्यापति के काव्य का मुख्य विषय क्या है?
उत्तर. राधा कृष्ण के प्रेम के माध्यम से लौकिक प्रेम के विभिन्न रूपों का चित्रण विषय है ।
प्रश्न. 10 विद्यापति के काव्य में प्रयुक्त भाषा की पाँच विशेषताएँ बताइए।
उत्तर 1. मैथिली भाषा का प्रयोग किया है। 2. भाषा में कोमलता है। 3. भाषा में सरसता, मधुरता है।
4. पद संगीत्मकता में ढले हैं। 5. पदों में श्रृंगार की प्रधानता है।
प्रश्न. 11 विद्यापति का साहित्यिक परिचय लिखिए।
उत्तर. मैथिल कोकिल के उपनाम स विख्यात कवि विद्यापति मिथिला नरेश शिवसिंह के अभिन्न मित्र, राजकवि सलाहकार थे। बचपन से कुशाग्र बुद्धि, तर्कशील विद्वान थे। साहित्य, संस्कृति, संगीत, ज्योतिष के प्रकाण्ड पण्डित थे। कीर्तिलता तथा कीर्तिपताका अवृद्ध भाषा में तथा पदावली मैथिली भाषा में रची गई। यह प्रेम, सौंदर्य, श्रृंगार तथा कृष्ण भक्ति की श्रेष्ठतम रचना है। यह रचना उनकी लोकप्रियता का पुष्ट प्रमाण है।

प्रश्न - 1 प्रियतमा के दुख के क्या कारण हैं?

उत्तर- प्रियतमा के दुख के ये कारण निहित हैं-

(क) प्रियतमा का प्रियतम कार्यवश परदेश गया हुआ है। वह प्रियतम के साथ को लालयित है परन्तु उसकी अनुपस्थिति उसे पीड़ा दे रही है।

(ख) सावन मास आरंभ हो गया है। ऐसे में अकेले रहना प्रियतमा के लिए संभव नहीं है। वर्षा का आगमन उसे गहन दुख देता है।

CBSE GUNDER VALLABHNAGAR

(ग) वह अकेली है। ऐसे में घर उसे काटने को दौड़ता है।

(घ) प्रियतम उसे परदेश में जाकर भूल गया है। अतः यह स्थिति उसे कष्टप्रद लग रही है।

प्रश्न - 2 कवि 'नयन न तिरपित भेल' के माध्यम से विरहिणी नायिका की किस मनोदशा को व्यक्त करना चाहता है?

उत्तर- कवि के अनुसार नायिका अपने प्रियतम के रूप को निहारते रहना चाहती है। वह जितना प्रियतम को देखती है, उसे कम ही लगता है। इस प्रकार वह अतृप्त बनी रहती है। कवि नायिका की इसी अतृप्त दशा का वर्णन इन पंक्तियों के माध्यम से करता है। वह अपने प्रियतम से इतना प्रेम करती है कि उसकी सूरत को सदैव निहारते रहना चाहती है। उसका सुंदर रूप उसे अपने मोहपाश में बाँधे हुए है। वह जितना उसे देखती है, उतनी ही अधिक इच्छा उसे देखने की होती है। नायिका के अनुसार वह अपनी स्थिति का वर्णन भी नहीं कर सकती। जो वस्तु स्थिर हो उसका तो वर्णन किया जा सकता है परन्तु उसके प्रियतम का सलौना रूप पल-पल बदलता रहता है और हर बार उसका आकर्षण बढ़ जाता है। बस यही कारण है कि नायिका तृप्त नहीं हो पाती।

प्रश्न -3 नायिका के प्राण तृप्त न हो पाने के कारण अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- नायिका अपने प्रेमी से अतुलनीय प्रेम करती है। वह जितना इस प्रेम रूपी सागर में डूबती जाती है, उतना अपने प्रेमी की दीवानी होती जाती है। वह अपने प्रियतम के रूप को निहारते रहना चाहती है। वह जितना उसे देखती है, उसकी तृप्ति शांत होने के स्थान पर बढ़ती चली जाती है। इसका कारण वह प्रेम को मानती है। उसके अनुसार उसका प्रेम जितना पुराना हो रहा है, उसमें नवीनता का समावेश उतना ही अधिक हो रहा है। दोनों में प्रेम के प्रति प्रथम दिवस जैसा ही आकर्षण है। अतः उसे तृप्ति का अनुभव ही नहीं होता है। उसके अनुसार प्रेम ऐसा भाव है, जिसके विषय में वर्णन कर पाना संभव नहीं है। इस संसार में कोई भी प्रेम को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने में समर्थ नहीं है। प्रेमी का साथ उसे कुछ समय के लिए सांत्वना तो देता है परन्तु तृप्ति का भाव नहीं देता। उसके प्राण अतृप्त से प्रेमी के आस-पास ही रहना चाहते हैं

प्रश्न - 4 'सेह फिरत अनुराग बखानिअ तिल-तिल नूतन होए' से लेखक का क्या आशय है?

उत्तर- प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रेम के विषय में वर्णन कर रही हैं। इसके अनुसार प्रेम ऐसा भाव है, जिसके विषय में कुछ कहना या व्यक्त करना संभव नहीं है। प्रेम में पड़ा हुआ व्यक्ति इस प्रकार दीवाना हो जाता है कि वह जितना स्वयं को निकालना चाहता है, उतना ही डूबता चला जाता है। यह पुराना होने पर भी नए के समान लगता है क्योंकि प्रेमियों का एक दूसरे के प्रति आकर्षण तथा प्रेम प्रागढ़ होता जाता है। कवि के अनुसार प्रेम कोई स्थिर चीज़ नहीं है, जिसमें कोई परिवर्तन न हो। स्थिर वस्तु का बखान करना सरल है परन्तु यह ऐसा भाव है, जो समय के साथ-साथ पल-पल बदलता रहता है। यही कारण है कि इसका वर्णन करना कठिन हो जाता है और इसमें नवीनता बनी रहती है।

प्रश्न - 5 कोयल और भौरों के कलरव का नायिका पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर- कोयल और भौरों के कलरव का नायिका पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। कोयल का मधूर स्वर और भौरों का गुंजन नायिका को अपने प्रेमी की याद दिला देती है। वह अपने कानों को बंद कर इनके कलरव सुनने से बचना चाहती है परन्तु ये आवाज़ें उसे फिर भी सता रही हैं। परदेश गए प्रियतम की याद उसे सताने लगती है। विरहग्नि उसे वैसे ही बहुत जलाए हुए हैं। ये कलरव उसे और भी जला रहा है।

प्रश्न - 6 कातर दृष्टि से चारों तरफ़ प्रियतम को ढूँढ़ने की मनोदशा को कवि ने किन शब्दों में व्यक्त किया है?

उत्तर- कवि नायिका की कातर दृष्टि से चारों तरफ़ प्रियतम को ढूँढने की मनोदश को इन पंक्तियों में वर्णित करता है-

कातर दिठि करि, चौदिस हेरि-हेरि नयन गरए जल धारा।

अर्थात कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी जिस प्रकार क्षीण होती है, वैसी ही नायिका का शरीर भी अपने प्रेमी की याद में क्षीण हो रहा है। उसकी आँखों से हर समय जलधारा बहती रहती है। अर्थात वह हर वक्त प्रियतम की याद में रोया करती है। वह इसी प्रयास में इधर-उधर अपने प्रियतम को तलाशती है कि शायद उसे वह कहीं मिल जाए।

प्रश्न - 7 निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए-

(क) एकसरि भवन पिआ बिनु रे मोहि रहलो न जाए।

CBEO BHINDER VALABHNAGAR

सखि अनकर दुख दारुन रे जग के पतिआए।
(ख) जनम अवधि हम रूप निहारल नयन न तिरपित भेल।।
सेहो मधुर बोल स्रवनहि सूनल स्रुति पथ परस न गेल।।

उत्तर- (क) प्रस्तुत पद में नायिका का पति परदेश गया हुआ है। वह घर में अकेली है। पति से अलग होने का विरह उसे इतना सताता है कि वह अपनी सखी से कहती है कि हे सखी! पति के बिना मुझसे घर में अकेला नहीं रहा जाता है। वह आगे कहती है कि हे सखी! इस संसार में ऐसा कौन-सा मनुष्य विद्यमान है, जो किसी अन्य के कठोर दुःख पर विश्वास करे। अर्थात कोई अन्य किसी दूसरे के दुख को गहनता से नहीं समझ पाता है।

(ख) प्रस्तुत पंक्तियों में कवि प्रेमिका की अतुप्ति का वर्णन करते हैं। अपने प्रेमी के साथ उसे बहुत समय हो गया है। परन्तु अब तक वह तृप्त नहीं हो पायी है। वह जन्मों से अपने प्रियतम को निहारती रही है परन्तु हर बार उसे और देखने का ही मन करता है। नेत्रों में अतृप्ति का भाव विद्यमान है। इसी तरह वह उसकी मधुर वाणी को लंबी अवधी से सुनती आ रही है। उसके बाद भी उसके बोल नए से ही लगते हैं। उसके रूप तथा वाणी के अंदर नवीनता का समावेश है, जिस कारण मैं तृप्त ही नहीं हो पाती हूँ।

पाठ -9 रघुवीर सहाय

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न –

प्रश्न 1. रघुवीर सहाय की कौनसी कृति पर उन्हे साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया?
उत्तर – रघुवीर सहाय की ''लोग भुल गए है'' कृति पर उन्हे साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।
प्रश्न 2. तोड़ो कविता में खेत किसका प्रतीक है?
उत्तर – तोड़ो कविता में खेत व्यक्ति के मन का प्रतीक है ।
प्रश्न 3. तोड़ो कविता किस प्रकार कि है ?
उत्तर – तोड़ो कविता उद्‌बोधनपरक कविता है।

प्रश्न 4. वसंत आया कविता की विशेषताएँ लिखिए ?
उत्तर – इस कविता में कवि ने वसंत आगमन का सजीव वर्णन किया है। इसमें अलंकार का सुन्दर प्रयोग है। यह कविता छन्दमुक्त है।

प्रश्न 5 कविता तोड़ो से कवि हमें क्या संदेश देते है ?
उत्तर – इस कविता में कवि मन में व्याप्त रूढ़ियों को समाप्त करने का संदेश देता है। कवि सृजन हेतु भूमि को तैयार करने के लिए चट्टान को तोड़ने के लिए कहता है।

प्रश्न 6. वसन्त के महीने में आम के वृक्षों पर क्या आता है ?
उत्तर – वसन्त के महीने में आम के वृक्षों पर बौर आता है।

प्रश्न 7. रघुवीर सहाय का जन्म कब और कहा हुआ?
उत्तर – रघुवीर सहाय का जन्म– 1929 ई0 में लखनऊ (उत्तर प्रदेश) में हुआ था।

प्रश्न 8. रघुवीर सहाय ने किन किन पत्र–पत्रिकाओ का संपादन किया?
उत्तर – रघुवीर सहाय ने इन पत्र–पत्रिकाओ का संपादन किया – 1 प्रतीक

CBEO BHINDER VALLABHNAGAR

2 दिनमान
3 कल्पना

प्रश्न 8. रघुवीर सहाय को समकालीन हिन्दी कविता का कौनसा चेहरा कहा गया?
उत्तर – रघुवीर सहाय को समकालीन हिन्दी कविता का ' 'नागर '' चेहरा कहा गया।

प्रश्न 9. रघुवीर सहाय की कविता की विशेषताए लिखिए?
उत्तर – रघुवीर सहाय की कविता की विशेषताए – 1 छोटे व लघु की महत्ता को स्वीकारना
2 मानवीय पीड़ा की अभिव्यक्ति करना।
प्रश्न 10. रघुवीर सहाय किस तार सप्तक के कवि थे?
उत्तर – रघुवीर सहाय दूसरे तार सप्तक के कवि थे।

लघुत्तरात्मक प्रश्न –

प्रश्न 11. कवि के अनुसार आज के लोगो को वसन्त के आगमन का पता कैसे चलता है?
उत्तर – कवि के अनुसार आज के लोगो को वसन्त के आगमन का पता पंचांग (कैलेण्डर) देखकर चलता है।

प्रश्न 12. रघुवीर सहाय की प्रमुख काव्य कृतियाँ के नाम लिखिए?
उत्तर – रघुवीर सहाय की प्रमुख काव्य कृतियाँ – 1 सीढियो पर धूप में
2 आत्महत्या के विरूद्ध
3 हँसो हँसो जल्दी हँसो
4 लोग भूल गए हैं – सा0 अ0 पुरस्कार
प्रश्न 13 '' वसंत आया '' कविता में कवि चिंतित क्यों है?
उत्तर – कवि के अनुसार आज का मानवीय व्यवहार प्रकृति के लिए अच्छा नहीं है। लोग अपने स्वार्थ और तरक्की के लिए प्रकृति का बहुत नुकसान कर रहे है। महानगर में प्रकृति का दर्शन नहीं हैं। चारो तरफ इमारतें हैं। मनुष्य को ऋतुओ की सुन्दरता और उसमें होने वाले परिवर्तनों के बारे में जानकारी नहीं हैं। कवि के लिए यह बहुत बड़ी चिंता का विषय हैं।
प्रश्न 14. कवि को वंसत के आने की सूचना कैसे मिल जाती हैं?
उत्तर – कवि एक प्रकृति प्रेमी है। कवि को मौसम में आये परिवर्तन, पेड़ो से गिरते पत्ते, गुनगुनी ताजी हवा और चिड़िया के चहचहाने आदि का देखकर वसंत आने की सूचना मिल जाती हैं। कवि इस बात की पुष्टि अपने घर जाकर कैलेण्ड़र को देखते हैं और वसंत आने का निश्चय करते है।
प्रश्न 15 . मदनमहीने का तात्पर्य क्या है ?
उत्तर – मदनमहीने का तात्पर्य है – ऐसा महीना जो मन में काम भाव उत्पन्न करता है। कवि यहाँ वसन्त ऋतु और फाल्गुन होली महीने का उल्लेख कर रहा है। वसन्त ऋतु को कामदेव की ऋतु या मदन महीना कहा जाता है।
प्रश्न 16. आधे आधे गाने से कवि का क्या अभिप्राय है?
उत्तर – आधे – आधे गाने के माध्यम से कवि यह कहना चाहता है कि उसने जो गीत लिखा है, वह अभी भी अधूरा है। यह गीत तब पूरा होगा जब कोई व्यक्ति उत्साह और उल्लास से अपने दिल में इस गीत को भरेगा और अपने भीतर के क्रोध व उब को बाहर निकाल देगा ।
प्रश्न 17. तोड़ो कविता में कवि मनुष्यों से क्या कहता है ?
उत्तर – तोड़ो कविता के माध्यम से कवि लोगों को एक अच्छा इंसान बनाने की बात कहता है और लोगों को अपने मन के द्वेष को तोड़ने की बात कहता है।
प्रश्न18.' मिट्टी में रस होगा ही जब वह पोसेगी बीज को ' का भाव – सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए ।
उत्तर –जब भुरभुरी मिट्टी में बीज बोया जाता है तो वह अपने भीतर व्याप्त रस (सृजन शक्ति) से उस बीज को पोसकर (पाल – पोसकर) अंकुरित कर देती है। इसी प्रकार मन द्रवित होता है, संवेदनशील होता है त बवह कविता को जन्म देता ही है। यही इस पंक्ति में कवि व्यक्त करना चाहता है।

CEO BHINDER VALLABHNAGAR

प्रश्न 19. 'पत्थर' और 'चट्टान' शब्द से कवि का क्या अभिप्राय हैं?
उत्तर – कवि के अनुसार 'पत्थर' और 'चट्टान' शब्द हमारे जीवन के बंधन और बाधाओ के प्रतीक हैं। कवि चाहता हैं कि लोग इनको अपने जीवन से निकाल फेंकें, क्योंकि बंधन और बाधाएँ मनुष्य की तरक्की में बाधा है। कवि चाहता हैं कि अगर आपको विकास करना है तो
इन्हें तोड़ना होगा, नही तो आप अपने जीवन में आगे नहीं बढ़ सकते।

निबन्धात्मक प्रश्न –

प्रश्न 20. रघुवीर सहाय का जीवन परिचय एवं साहित्यिक परिचय लिखिए?
उत्तर –जीवन परिचय–1रघुवीर सहाय का जन्म– 1929 ई0 में लखनऊ (उतर प्रदेश) में हुआ था
2 इन्होने निम्न पत्र–पत्रिकाओ का संपादन किया –
1 प्रतीक – सहायक संपादन
2 दिनमान
3 कल्पना
4 दैनिक नवभारत टाइम्स
3 इनकी कविता की विशेषताए– 1 छोटे व लघु की महत्ता को स्वीकारना
2 मानवीय पीड़ा की अभिव्यक्ति करना।
4 प्रमुख काव्य कृतियाँ – 1 सीढियो पर धूप में
2 आत्महत्या के विरूद्ध
3 हँसो हँसो जल्दी हँसो
4 लोग भूल गए हैं – सा0 अ0 पुरस्कार
5 रघुवीर सहाय की ''लोग भुल गए है'' कृति पर उन्हे साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।
6 कविता के अलावा इन्होनें रचनात्मक और विवेचनात्मक गद्य भी लिखा।
7 रघुवीर सहाय का निधन– 1990 ई0 में दिल्ली में हुआ था।

पाठ -10 जायसी

बारहमासा

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न -

प्रश्न .1रानी नागमती किसके वियोग में व्याकुल थी?

उत्तर : रानी नागमती राजा रत्नसेन के वियोग में व्याकुल थी।

प्रश्न .2'बारहमासा' में नागमती का वियोग-वर्णन किस माह से प्रारंभ हुआ है?

उत्तर :बारहमासा' में नागमती का वियोग-वर्णन अगहन माह से प्रारंभ हुआ है।

प्रश्न .3अगहन मास में नागमती अपने प्रिय को संदेश किसके माध्यम से भिजवाती है ?

उत्तर अगहन मास में नागमती अपने प्रिय को संदेश भौरे और कौए के माध् :यम से भिजवाती है।

प्रश्न 4.फागुन महीने में सखियाँ क्या कर रही हैं ?

उत्तर फागुन महीने में सखियाँ चाँचरि नृत्य कर रही हैं। :

प्रश्न 5 ?कविता 'बारहमासा' में नागमती के कितने माह के वियोग का वर्णन है.

उत्तर कविता 'बारहमासा' में नागमती के चार माह के वियोग क :ा वर्णन किया गया है।

प्रश्न 6.बारहमासा कविता कहाँ से ली गई है ?

उत्तर :'बारहमासा' कविता मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा रचित महाकाव्य 'पद्मावत' के 'नागमती वियोग खंड' से ली गयी है।

CDLO BHINDER VALLABHNAGAR

प्रश्न 7 ?इस कविता में किसका वर्णन किया गया है .

उत्तर इस कविता में राजा रत्नसेन के वियोग में संतृप्त रानी नागमती की विरह व्यथा का वर्णन किया गया है। :

प्रश्न 8. कविता बारहमासा' में नागमती के जिन चार महीनों के वियोग का वर्णन है, उनके नाम लिखो।'

उत्तर अगहन, पूस, माघ और फागुन आदि चार माह का वर्णन है। :

प्रश्न 9 ?नागमती रूपी. वियोगी पक्षी के लिए शीतकाल कैसा बन गया है .

उत्तर नागमती रूपी वियोगी पक्षी के लिए शीतकाल शिकारी पक्षी बाज बन गया है। :

प्रश्न .10"ज्यों दीपक बाती" से कवि का क्या अभिप्राय है?

उत्तर कवि नागमती के वियोग को बताते हुए कहता है कि नाग :मती विरह के आग में दीपक की भाँति जल रही हैअर्थात् पल. जला रहा है।-उसका वियोग उसको पल

लघूत्तरात्मक प्रश्न -

प्रश्न 11. 'अब धनि देवस बिरह भा राती' का क्या तात्पर्य है?

उत्तर शीत ऋतु में दिन छोटे हो जाते हैं और रातें लम्बी हो जाती हैं। अगहन का महीना आ :जाने से शीत ऋतु का प्रारम्भ हो गया है और दिन छोटे तथा रातें बड़ी होने लगी हैं। विरहिणी नागमती भी विरह के कारण दुर्बल होती जा रही है किन्तु उसका विरह बढ़ता जा रहा है। इसीलिए वह कहती है कि अब यह स्त्री नागमती) तो दिन की तरह छोटी (अर्थात् दुर्बल)) होती जा रही है किन्तु इसका विरह सर्दी की रातों की तरह लम्बा हो रहा है अर्थात् बढ़ता जा रहा है।

प्रश्न 12 .अबहूँ फिरै फिरै रँग सोई का कथ्य स्पष्ट कीजिए। '

उत्तर रंग तो प्रियतम राजा रत्नसेन के चले जाने से उसके साथ ही चला गया किन्तु उसे पूरा -विरहिणी नागमती का रूप : विश्वास है कि प्रिय के लौट आने पर वह पहले की तरह खिल उठेगी और उसका रूपरंग भी वापस आ जाएगा। पत्नी अपने रंग भी जाता रहता है। यही कवि कहना चाहता है।-संवरती है और उसके वियोग में उसका रूप-पति के लिए ही सजती

प्रश्न 13 .'रातिहु देवस इहै मन मोरें। लागौं कंत छार जेउँ तोरें' का अभिप्राय स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'बारहमासा' की नायिका 'छार' क्यों बन जाना चाहती है? पवन से वह क्या प्रार्थना करती है और क्यों?

उत्तर विरहिणी नागमती के मन में केवल एक ही इच्छा है कि वह विरह में भले ही जलकर नष्ट हो जाए पर मरने के बाद भी उसे प्रिय के हृदय से लगने का अवसर मिल जाए। उसका शरीर तो विरह की आग में जलकर राख हो जायेगा। उस राख के रूप में भी वह पति के वक्षस्थल से लगने की आकांक्षी है। विरहिणी नागमती का पति प्रेम यहाँ साफ झलकता है।

प्रश्न 15. जायसी द्वारा रचित प्त टिप्पणी लिखिए।सौन्दर्य पर संक्षि-बारहमासा' के काव्य'

उत्तर जायसी ने अपने महाकाव्य 'पद्मावत' में रानी नागमती के विरह का वर्ण :न किया है। उसके विरह की प्रबलता तथा व्यापकता को प्रकट करने के लिए कवि ने वर्ष के बारह महीनों में उसका वर्णन किया है। श्रृंगार रस के वर्णन में वर्ष के बारह महीनों के वर्णन को बारहमासा कहते हैं। इस अंश में कवि ने नागमती के विरह के वर्णन के लिए अतिशयोक्ति .. अलंकार की सहायता ली है। यत्रतत्र यह वर्णन ऊहात्मक भी है। कवि ने दोहा तथा चौपाई छन्दों को अपनाया है और अवधी वशाली भागों में गिना जाता है।भाषा का प्रयोग किया है। प्रस्तुत अंश 'पद्मावत' के प्रभा

प्रश्न 16 अगहन देवस घटा निसि बाढ़ी। दूभर दुख सो जाड़ मिमि काढ .ी।। पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए। -

उत्तर कवि नागमती के वियोग का वर्णन करते हुए कह रहे हैं कि अगहन आते ही दिन छोटा होने लगता है, जिसके कारण जाती है। यह लंबी रात काटना और भी मुश्किल हो जाता है और नागमती को बहुत कष्ट देता है। रात और भी लंबी हो

प्रश्न 17.अब धनि देवस बिरह भा राती।

जरै बिरह ज्यों दीपक बाती।। पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर होने की वजह से उसे काटना मुश्किल कवि नागमती के वियोग के कष्ट को बता रहे हैं और कहते हैं कि रात बड़ी : हो गया था। लेकिन ऐसा लगता है कि अब यह छोटा दिन भी काटना मुश्किल हो जायेगा। नागमती के विरह की अग्नि अब भी दीपक की भाँति जल रही है।

CEO BHINDER VALLABHNAGAR

प्रश्न :18. मलिक मुहम्मद जायसी का साहित्यिक परिचय लिखिए।

उत्तर 1492 -जन्म :ईउत्तर प्रदेश) के निकट 'जायस' ना) में अमेठी .मक कस्बे में। अपने समय के पहुँचे हुए सूफी फकीर। सैयद अशरफ और शेख बुरहान का उल्लेख उन्होंने अपने गुरुओं के रूप में किया है। हिन्दू संस्कृति और लोककथाओं के - 1542 -ज्ञाता। निधन ई ।.

कृतियाँ (पद्मावत, (2 (1) -अखरावट (3) ,आखिरी कलाम।

साहित्यिक परिचय पक्-भाव -ष- जायसी सूफी काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं। भक्तिकाल की निर्गुणधारा काव्यधारा को प्रेमाख्यानक काव्य परम्परा या प्रेममार्गी काव्यधाराभी कहा जाता है। जायसी का 'पद्मावत' इसी काव्यधारा के अन्तर्गत ' । लौकिक कथा के माध्यम से जायसी नआने वाला श्रेष्ठतम महाकाव्य हैे अलौकिक प्रेम का आभास इस काव्यग्रन्थ में - कराया है। रत्नसेन जीवात्मा का तथा. द्मावती परमात्मा का प्रतीक है अतः रत्नसेन का पद्मावती के प्रति प्रेम वस्तुतःजीवात्मा का परमात्मा के प्रति प्रेम प्रतीत होने लगा है।

कलासी की मसनवी शैली में रचित 'पद्माफार -पक्ष -वतकी रचना दोहा चौपाई शैली में तथा अवधी भाषा में हुई है। इस ' ' कथा का पूर्वार्द्ध काल्पनिक और उत्तरार्द्ध ऐतिहासिक घटनाओं से युक्त है। उनकी काव्य शैली प्रौढ़ और गम्भीर है।

पाठ -11 घनानन्द

<u>अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न–</u>

प्रश्न–1 घनानन्द किस काल के कवि माने जाते है?

उत्तर– घनानन्द रीतिकाल की रीतिमुक्त काव्यधारा के प्रमुख कवि माने जाते है।

प्रश्न–2 घनानन्द की रचनाओं में सुजान कौन है?

उत्तर– 1. प्रेमी घनानन्द के लिए उनकी प्रेमिका
2. भक्त घनानन्द के लिए श्रीकृष्ण

प्रश्न–3 घनानन्द किस सम्प्रदाय में दीक्षित थे?

उत्तर– घनानन्द निम्बार्क सम्प्रदाय में दीक्षित थे।

प्रश्न–4 घनानन्द ने प्रेम की किन दशाओं का वर्णन है?

उत्तर– घनानन्द ने अपने पदों में प्रेम के संयोग एवं वियोग दोनों दशाओं का वर्णन किया है।

<u>लघुत्तरात्मक प्रश्न–</u>

प्रश्न.1 कवि घनानन्द का साहित्यिक परिचय लिखिए ?

उत्तर– घनानन्द रीतिकाल की रीतिमुक्त काव्यधारा के प्रमुख कवि थे। इनका जन्म सन् 1673 ई. के आसपास हुआ माना जाता है। वे दिल्ली के बादशाह मुहम्मद शाह के मीर मुंशी थे। ये प्रेम की पीर के कवि थे तथा इनके काव्य में शृंगार रस के वियोग पक्ष का मार्मिक चित्रण हुआ है।

सुजान से प्रेम की विफलता के कारण विरक्त होकर वृन्दावन चले गए और निम्बार्क सम्प्रदाय में दीक्षित होकर भक्त के रूप में जीवन–निर्वाह करने लगे। उनकी रचनाओं में प्रेम का अत्यन्त गम्भीर, निर्मल, आवेगमय और व्याकुल कर देने वाला उदात्त रूप व्यक्त हुआ है, इसलिए घनानन्द को साक्षात रसमुर्ति कहा गया है। सन् 1760 ई. में उनकी मृत्यु हो गई। इनकी प्रुमुख रचनाए इस प्रकार है– सुजान सागर, सुजानहित, सुजानहित–प्रबन्ध, सुजानविनोद, विरहलीला, कृपाकंड निबन्ध एवं रसकेलि वल्ली है।

प्रश्न–2 कवि ने 'चाहत चलन य सँदेसो लै सुजान को' क्यों कहा है?

उत्तर– कवि ने यह इसलिए कहा है कि विरह के बाद मिलन भारतीय परम्परा है। विरह की प्रबलता होने पर भी नायिका से मिलन की आशा समाप्त नहीं होती है।इसी से उसके प्राण नायिका के सन्देश के इन्तजार में ही रुके हुए है।

प्रश्न– 3 कवि मौन होकर प्रेमिका के कौनसे प्रण पालन को देखना चाहता है?

CEO BHINDER VALLABHNAGAR

उत्तर– कवि मौन होकर प्रेमिका के उपेक्षा के प्रण को देखना चाहता है। प्रेमिका शीशा या अँगूठी के नगीने को देखकर प्रियतम की तरफ देखना ही नहीं चाहती। वह कानों में रुई डालकर नायक की उपक्षा कर रही है। कवि यह देखना चाहता है कि इस तरह बहाना बनाकर कब तक उसकी उपेक्षा करती है।

प्रश्न– 4 घनानन्द की रचनाओं की भाषिक विशेषताओं को अपने शब्दों में लिखिए? उत्तर– घनानन्द की भाषा परिष्कृत और साहित्यिक ब्रजभाषा है। उसमें कोमलता आर मधुरता का सुन्दर समावेश हुआ है। भाषा की व्यंजकता बढ़ाने के लिए घनानन्द ने स्वर एवं मात्राओ का यथावसर प्रयोग किया है। साथ ही उसमें मुहावरों एवं लोकोक्तियों का समावेश कर उसकी भाव–गम्भीरता बढ़ाई है। इन्ही विशेषताओं के कारण घनानन्द को 'ब्रजभाषा प्रवीण' कहा जाता है।

प्रश्न–5 तब तो छबि पीवत है, अब सोचन लोचन जात जरै'। उपर्युक्त काव्य पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए?

उत्तर– इसमें मिलन एवं वियोग दशा की तुलना करते हुए कवि कहते है कि जीवन के वे क्या सुन्दर और सुखद क्षण थे जब प्रिय का सुखद सामीप्य पाकर उसके रूप–सौन्दर्य का पान करते हुए ये नैत्र जीवित रहते थे। लेकिन अब परिस्थिति में ऐसा बदलाव आया कि विरह अवस्था में सोचते–सोचते मेरे नेत्र विरह की ज्वाला से जल रहे थे।

प्रश्न– 6 'घनआनँद मीत सुजान' अथवा 'घनआनँद जान' या 'जान घनआनँद' शब्दों से क्या आशय है?

उत्तर– इन शब्दों में श्लेष अलंकार है। घनआनँद का अर्थ अत्यधिक आनन्द देने वाला होता है तथा यह नायक या कवि का नाम भी है। इसी प्रकार जान या सुजान का अर्थ चतुर होता है और यही नाम कवि की प्रेमिका का भी है। यहाँ सुजान के प्रति कथन कवि की व्यक्तिगत पीड़ा बनकर ही आया है। यहाँ ये शब्द नायिका एवं नायक के विशेषण रूप में आये हैं।

प्रश्न–7 निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य–सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए?

अधर लगे हैं आनि करि कै पयान प्रान,
चाहत चलन ये सँदेसों लै सुजान को।

उत्तर– भाव सौन्दर्य– कवि यह कहता है कि अब तो प्रेम विरह में मेरे प्राण शरीर से निकल कर होंठों तक आ गए हैं। ये प्राण अधरों से आगे इसलिए नहीं बढ़े, क्योकि ये निकलने से पूर्व चतुर सुजान का सन्देश लेकर ही जाना चाहते है।

शिल्प सौन्दर्य– शिल्प की दृष्टि से 'पयान प्रान' और 'चाहत चलन' में अनुप्रास अलंकार है। 'सुजान' शब्द में श्लेष अलंकार है। भाषा ब्रज तथा रस वियोग शृंगार है।

प्रश्न–8 'तब हार पहार से लागत है, अब आनि के बीच पहार परे '। उक्त सवैये में व्यक्त कवि घनानन्द की विरह–दशा का वर्णन किजिए?

उत्तर– कवि घनानन्द विरह दशा के अनुपम चितेरे माने जाते हैं। प्रस्तुत सवैये में उन्होनें अपनी प्रेमिका सुजान के साथ के दिनों को याद करते हुए अपनी विरह दशा व्यक्त करते है। वे कहते हैं कि जो आँखे सुजान के सौन्दर्य का रसपान करके आनन्दित होती थीं, वे ही आँखे अब उनके बिना विरह में आँसू बहा रही हैं। प्रियतमा सुजान के बिना गहरे दुःख से व्यथित है। उन्हें संसार के सभी सुख साधन अर्थहीन लगते हैं। मिलन के समय सुजान के गले में पड़ा हार पहाड़ के समान भारी लगता है मानो समय रूपी पहाड़ ही उनके मिलने में बाधा उत्पन्न कर रहा है। उक्त चेष्टाओं द्वारा कवि संयोग–वियोग दोनों स्थितियों का सुन्दरतम चित्रण अंकित करते हैं

अंतराल

पाठ -1 'सूरदास की झोंपड़ी'

प्रश्न 1.'सूरदास की झोंपड़ी' पाठ के लेखक कौन है?

CBEO BHINDER VALLABHNAGAR

(अ)प्रेमचंद
(ब)संजीव
(स)विश्वनाथ त्रिपाठीss
(द)प्रभाष जोशी
उत्तर - (अ)प्रेमचंद
प्रश्न 2.भैरों की पत्नी का नाम है?
(अ)कैलाशी
(ब)सोहनी
(स)सुभागी
(द)हीना
उत्तर - (स)सुभागी
प्रश्न 3.भैरों की पत्नी किसकी झोंपड़ी में छिपती है?
(अ)सूरदास की झोंपड़ी
(ब)कबीर की झोंपड़ी
(स)मीरा की झोंपड़ी
(द)रहीम की झोंपड़ी
उत्तर - (अ) सूरदास की झोंपड़ी
प्रश्न 4.किसकी झोंपड़ी जलाई गयी थी?
(अ)प्रेमचंद की
(ब)रामानंद की
(स)मीरा की
(द)सूरदास की
उत्तर - (द)सूरदास की
प्रश्न 5.सूरदास की पोटली में कितने रुपये थे?
(अ)दो सौ रुपये
(ब)तीन सौ रुपये
(स)पांच सौ रुपये
(द)सौ रुपये
उत्तर - (स)पांच सौ रुपये
प्रश्न 6.अदावत शब्द का अर्थ है -
(अ)दोस्ती
(ब)मेहरबानी
(स)शत्रुता
(द)संदेह
उत्तर - (स)शत्रुता

CBEO BHINDER VALLABHNAGAR

प्रश्न 7.भैरों ने सूरदास की झोंपड़ी क्यों जलाई ?
उत्तर - भैरों की पत्नी सुभागी अपने पति की मार के डर से सूरदास की झोंपड़ी में छिप गई। भैरों उसे वहाँ भी मारने आया पर सूरदास के हस्तक्षेप के कारण मार नहीं पाया। सुभागी और सूरदास के चरित्र पर मोहल्ले वालों ने बातें बनाई,जिसका बदला लेने के लिए भैरों ने आग लगाई।
प्रश्न 8."यह फुसकी राख न थी, उसकी अभिलाषाओं की राख थी" सूरदास की क्या अभिलाषाएं थी और उसकी राख किसने की?

उत्तर - झोंपड़ी में लगी आग ने सूरदास की अभिलाषाओं को राख कर दिया था। जिसमें गया जाकर पिण्डदान करना, मिठुआ का विवाह करना, कुआं बनवाना आदि इच्छाएँ थी। भैरों ने आपसी दुश्मनी के कारण झोंपड़ी में आग लगाकर उसका सब कुछ राख कर दिया।

प्रश्न 9.जगधर के मन में किस तरह का ईर्ष्या भाव जगा और क्यों ?

उत्तर - जगधर के मन में भैरों द्वारा सूरदास के हथियाये रुपयों में से आधे रुपये पाने की इच्छा बलवती हुई। वह नहीं चाहता था कि भैरों अकेले ही उन रुपयों से मौज उड़ावे। इसी ईर्ष्या भाव के चलते उसने सूरदास और भैरों की पत्नी को भी रुपयों का सच बता दिया, जिससे भैरों से वह रुपये वापस ले लिये जाए।

प्रश्न 10.सूरदास जगधर से अपनी आर्थिक हानि को गुप्त क्यों रखना चाहता था?

उत्तर - सूरदास जगधर से अपनी आर्थिक हानि को इसलिए गुप्त रखना चाहता था क्योंकि वह नहीं चाहता था कि लोग प्रश्न करते कि इस अंधे भिखारी के पास इतना धन कहाँ से आया और यदि इतने रुपये उसके पास थे तो वह भीख क्यों मांगता था?भिखारियों के लिए धन संचय पाप संचय से कम अपमान की बात नहीं है।

प्रश्न 11."तो हम सौ लाख बार बनाएँगे" इस कथन के संदर्भ में सूरदास के चरित्र का विवेचन कीजिए।

उत्तर - इस कथन के आधार पर सूरदास के चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएं व्यंजित होती है -

(1)बदले की भावना की अपेक्षा पुनर्निर्माण पर आस्था - बालक मिठुआ के इस प्रश्न पर कि कोई सौ लाख बार आग दे तो हम क्या करेंगे ? के उत्तर में सूरदास कहता है कि हम सौ लाख बार ही उसे फिर बनाएंगे। यह कथन उसके बदले के भाव से मुक्त पुनर्निर्माण में विश्वास को व्यक्त करता है। वह जो नष्ट हो गया है,उसे भूलकर नये सिरे से जीना चाहता है।

(2)कर्मठ व्यक्तित्व - सूरदास अंधा होते हुए भी अपने कर्म के आधार पर विपत्तियों का सामना करने का साहस रखता है।

(3)सहनशील - सबकुछ जल जाने के बाद भी वह जीवन को एक खेल मानते हुए सहनशील बना रहता है।

(4)संकल्प का धनी - वह संकल्प का धनी है। इसलिये वह सौ लाख बार बनाने की बात को अति सहजता से कह देता है।

(5)आशावादी - सूरदास सौ लाख बार बनाने की बात बाल सुलभ ढंग से जिस सरलता से कहता है, वह सरलता व सहजता ही उसके आशावादी व्यक्तित्व को उजागर कर देती है।

प्रश्न 12.सूरदास की झोंपड़ी पाठ की वर्तमान समय में प्रासंगिकता क्या है?

उत्तर - वर्तमान काल में भी सत्ता और पूँजी के गठजोड़ से सूरदास जैसे लोगों की झोंपड़ियां जला दी जाती है। दलित एवं गरीब व्यक्ति सब और से पीड़ित-व्यथित रहता है,फिर भी वह जिजीविषा रखता है और संघर्ष कर भविष्य के प्रति आशावान बना रहता है। यही इस पाठ की सामयिक प्रासंगिकता है।

प्रश्न 13."चूल्हा ठंडा किया होता तो दुश्मनों का कलेजा कैसे ठंडा होता?" इस कथन के आधार पर सूरदास की मनःस्तिथि का वर्णन कीजिए।

उत्तर -उस समय सूरदास की मनःस्थिति अत्यंत विचलित थी।उसे झोंपड़ी के जल जाने का दुःख नहीं था। दुःख था पैसों की पोटली के जल जाने का जो उसके उम्र भर की कमाई और जीवन की आशाओं का आधार थी।

प्रश्न 14.सच्चे खिलाड़ी कभी रोते नहीं, बाज़ी पर बाज़ी हारते है, चोट पर चोट खाते है,धक्के पर धक्के सहते है पर मैदान में डटे रहते हैं? इस कथन के आधार पर सूरदास की मनःस्थिति में आए बदलाव को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - बच्चों द्वारा खेल में रोने को गलत मानना सुनकर सूरदास ने भी सोचा कि यह जीवन भी एक खेल है। इसकी हार जीत पर दुःख न मनाकर फिर से नयी उर्जा और स्फूर्ति से खेलना चाहिए। रुपये मैने ही कमाए थे फिर कमा लूँगा। मुझे अपने मन को मलिन न करके नए साहस के साथ फिर खेलना है।

प्रश्न 15. आशा से ज्यादा दीर्घजीवी कोई वस्तु नहीं होती। ऐसा क्यों कहा गया है, स्पष्ट करें।

उत्तर - भैरों ने शत्रुतावश सूरदास की झोंपड़ी में आग लगा दी, रुपये चोरी कर दिये। तब सूरदास रातभर जली हुई झोंपड़ी की राख में रुपयों की पोटली टटोलता रहा। वह आशा कर रहा था कि रुपये पिघलकर चांदी बन गई होगी, वह तो जरूर ही मिल जायेगी। इसी आशा से वह राख की ढेरी को बटोर रहा था।इसलिए ऐसा कहा गया।

प्रश्न 16.'सूरदास की झोंपड़ी' प्रेमचंद के किस उपन्यास का अंश है?

उत्तर - प्रेमचंद के 'रंगभूमि' नामक उपन्यास का अंश है।

CBEO BHINDER VALLABHNAGAR

प्रश्न 17.सूरदास की झोंपड़ी में आग किस समय लगी और जलती झोंपड़ी को देखकर गांव के लोगों ने क्या किया?
उत्तर - सूरदास की झोंपड़ी में आग रात के समय लगभग दो बजे लगी थी।जलती हुई झोंपड़ी को देखकर गांव के कुछ लोग आग बुझाने में लग गये। लेकिन अधिकांश गांव वाले निराशा भरी नजरों से अग्निदाह को देख रहे थे,मानो किसी मित्र की चिताग्नि हो।
प्रश्न 18. सूरदास ने रुपये किस प्रयोजन से इकट्ठे किये थे?
उत्तर - सूरदास इकट्ठे किये गये रुपयों से गया जी जाकर पितरों के निमित्त पिण्डदान करना चाहता था। फिर वह मिठुआ का विवाह भी करना चाहता था। इन रुपयों को इकट्ठा करने के पीछे सूरदास का तीसरा प्रयोजन गांव में एक कुआं बनवाना भी था।
प्रश्न 19. सूरदास को किस बात का अधिक दुःख था और क्यों था?
उत्तर - सूरदास को अपनी झोंपड़ी जलने का दुःख नहीं था, उसे अपनी रुपयों की पोटली जल जाने का अधिक दुःख था।जिसमें उसकी उम्रभर की कमाई रखी थी।उसने बड़े कष्ट से भीख मांगकर वह धनराशि एकत्र की थी और उससे पूण्य कर्म तथा बेटे का विवाह करना चाहता था।
प्रश्न 20. जगधर ने सुभागी को भैरों के विषय में क्या बताया और क्यों?
उत्तर - जगधर नहीं चाहता था कि भैरों सूरदास के सारे पैसे अकेले हज़म कर ले। वह उनमें आधा हिस्सा चाहता था। इसलिए वह भैरों की बुराई करता है कि मैं उसे भला आदमी समझता था,साथ उठता,हँसता,बोलता था। लेकिन जो दूसरों के घर में आग लगाए,गरीब के रुपये चुराए उससे मेरा कोई वास्ता नहीं है।

पाठ -2 अपना मालवा -खाऊ-उजाडू सभ्यता में

प्रश्न 1-प्रभाष जोशी का जन्म कब और कहां हुआ?
उत्तर -प्रभाष जोशी का जन्म सन् 1937 में इंदौर मध्यप्रदेश में हुआ था।
प्रश्न 2-जोशी जी ने कौन-कौन से अखबारों का संपादन किया?
उत्तर-इंडियन एक्सप्रेस (अहमदाबाद,चंडीगढ़ संस्करण)प्रजापति,सर्वोदय संदेश ,जनसत्ता।
प्रश्न 3"-जनसत्ता "अखबार का संपादन जोशी जी ने कौन से वर्ष में किया?
उत्तर-सन 1983 में।
कृष 4-प्रभाष जोशी के लेखों का संग्रह किस नाम से प्रकाशित हुआ?
उत्तर- "कागद कारे"
प्रश्न 5-जनसत्ता में लिखे लेखों व संपादकों का प्रकाशन किस नाम से हुआ?
उत्तर-सन 2005 में "हिंदू होने का धर्म "नामक शीर्षक से प्रकाशित हुआ।
प्रश्न 6-लेखक ने पत्रकारिता की शुरुआत किस के सानिध्य में की?
उत्तर-"नई दुनिया "अखबार के संपादक राजेंद्र माथुर के सानिध्य में की।
प्रश्न 7-लोक में" छप्पन का काल" कौन सा माना जाता है?
उत्तर- सन 1899 का काल लोक में' छप्पन का काल' माना जाता है।
प्रश्न 8-"पग-पग नीर वाला मालवा सूखा हो गया"- कैसे?अथवा
अब मालवा में वैसा पानी नहीं गिरता जैसा गिरा करता था उसके क्या कारण है?
उत्तर-लेखक ने इसके निम्न कारण बताए हैं-
1-औद्योगिक विकास ने पर्यावरण को प्रदूषित कर दिया।
2-प्रदूषित गैसों ने वातावरण को गर्म कर दिया।
3-मालवा के लोगों ने पश्चिमी सभ्यता का अंधानुकरण करना प्रारंभ कर दिया।
प्रश्न 9-"मालवा में विक्रमादित्य, भोज और मुंज रिनेसां के बहुत पहले हो गए ।"पानी के रखरखाव के लिए इन्होंने क्या प्रबंध किए.?
उत्तर-रिनेसां अर्थात पुनर्जागरण काल यूरोप में बीसवीं शताब्दी में आया जिसके कारण ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति हुई और यूरोप में तकनीकी ज्ञान बढ़ा।विदेशियों को यह भ्रम सदा रहा है कि भारत को सभ्यता उन्होंने ही सिखाई किंतु सत्य यह है कि भारत की सभ्यता तथा संस्कृति प्राचीन काल से ही अत्यंत विकसित थी। मालवा के राजा विक्रमादित्य ,भोज और मूंज ने पश्चिम के रिनेसां से बहुत पहले ही पानी के रखरखाव के महत्व को समझा और पठार पर पानी को रोकर रखने के उपाय किए उन सभी राजा

CBSE BHINDER VALLABHNAGAR

महाराजाओं ने अनेक तालाब बनवाएं बड़ी-बड़ी बावड़िया बनाई ताकि बरसात का पानी रुका रहे और धरती के गर्भ के पानी को सुरक्षित रखा जा सके।

प्रश्न 10-लेखक ने पर्यावरणीय सरोकारों को आम जनता से जोड़ दिया है कैसे स्पष्ट करें?

अथवा

"अपना मालवा- खाऊ ऊजाड़ू सभ्यता" पाठ में लेखक की पर्यावरण संबंधी चिंता का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करता है पाठ के आधार पर लिखिए?

अथवा

हमारे मौसमों का चक्र क्यों बिगड़ रहा है पाठ के आधार पर बताइए?

उत्तर-उक्त अध्याय में लेखक ने मालवा के नागदा ,इंदौर , ओंकारेश्वर, नेमावर आदि स्थानों का यात्रा विवरण देते हुए बताया है कि अब वहां पर कुए ,तालाब आदि सूख गए हैं ।नर्मदा पर विशालकाय बांध बनने से औद्योगिक विकास को भले ही गति मिली है परंतु वहां का पर्यावरण में नष्ट हो गया है। विकसित देशों के उद्योगों से इतनी अधिक कार्बन डाइऑक्साइड तथा अन्य विषैली गैसें निकलती है कि पर्यावरण काफी गर्म हो गया है उत्तरी दक्षिणी ध्रुव से बर्फ पिघल रही है और समुद्र का पानी गर्म हो रहा है ।

प्रश्न 11-लेखक ने वर्तमान सभ्यता को खाऊ उजाड़ू क्यों कहा है?

उत्तर-खाऊ उजाड़ू का आशय है खूब खाओ और स्वार्थ की खातिर दूसरों को उजाड़ दो ।वर्तमान में बड़े औद्योगिक क्षेत्रों, बांधों आदि के लिए प्रकृति का विदोहन तेजी से किया जा रहा है ।आर्थिक प्रगति एवं विकास के नाम पर सारे पर्यावरण को नष्ट किया जा रहा है।वर्तमान सभ्यता के स्वार्थी आचरण के कारण लेखक ने ऐसा कहा।

प्रश्न 12 अपना मालवा पाठ में लेखक को ऐसा क्यों लगता है कि आज की विकासशील और औद्योगिक सभ्यता उजाड़ की अपसभ्यता है?

अथवा

धरती का वातावरण गर्म क्यों हो रहा है? इसमें यूरोप और अमेरिका की क्या भूमिका है टिप्पणी कीजिए?

उत्तर - इस औद्योगिक सभ्यता के कारण होने वाला विकास वास्तविक विकास नहीं है ।इससे पर्यावरण प्रदूषित होता है। समस्त विश्व को आज जलवायु तथा ध्वनि प्रदूषण झेलना पड़ रहा है ।मौसम का चक्र बिगड़ रहा है ।खाने की वस्तुओं तथा पीने के पानी का संकट है ।समुद्रों का जलस्तर बढ़ रहा है ।ध्रुवों की बर्फ पिघल रही है ।लद्दाख में बर्फ़ की जगह पानी गिर रहा है ।बाड़मेर के गांव जलमग्न हो रहे हैं ।यूरोप और अमेरिका में गर्मी पड़ रही है । इन देशों के बड़े -बड़े कारखानों से निकलने वाली कार्बन डाइऑक्साइड गैस ने मिलकर धरती के तापमान को 3 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ा दिया है। सारी गड़बड़ी पृथ्वी का तापमान बढ़ने से हो रही है यह संकट पाश्चात्य सभ्यता के कारण हुआ यह सभ्यता नहीं खाऊ -उजाड़ू अपसभ्यता है।

प्रश्न 13-मालवा में जब सब जगह बरसात की झड़ी लगी रहती है तब मालवा के जनजीवन पर इसका क्या असर पड़ता है?

उत्तर- अत्यधिक वर्षा के कारण बाढ़ आ जाती है और नदी नालों का पानी घरों में घुस जाता है इससे लोगों को काफी परेशानी होती है।जब बाढ़ आती है तब फसलों की हानि होती है तथा खाने-पीने की चीजों का अभाव पैदा हो जाता है ।ऐसा भी होता है कि सोयाबीन की फसल खराब हो जाती है तो गेहूं और चने की फसल अच्छी होती है ।तालाबों ,नदियों तथा बावड़ियों के भर जाने के कारण गर्मी की ऋतु में सूखे से बचाव भी होता है बरसात में सभी हुए बावड़ी ,ताल तलैया पानी से लबालब भर जाते हैं। इससे आश्वासन मिलता है कि मालवा जल से खूब संपन्न और समृद्ध हो गया।

प्रश्न 14-हमारी आज की सभ्यता इन नदियों को गंदे पानी के नाले बना रही है क्यों और कैसे?

उत्तर -1-दूषित रसायनों से युक्त गंदा पानी नदियों में बहाकर उसको प्रदूषित किया जा रहा है।

2-बड़े बड़े नगरों और महानगरों के गंदे नालों का पानी इन नदियों में डाला जा रहा है।

3-नदियों की प्रति पवित्रता और मातृत्व का भाव औद्योगिक विकास के कारण बढ़ता जा रहा है।

अध्याय 3 – आरोहण

अतिलघुतरात्मक प्रश्न

1. रूपसिंह अपने गांव कितने समय बाद लौटा था ?

उत्तरः– ग्यारह वर्ष बाद

2. देवकुंड के स्टॉप से रूपसिंह का गांव माही कितना दूर था?

उत्तरः– पन्द्रह किमी

CEO BHINDER VALLABHNAGAR

3. पहाड़ के नीचे बह रही नदी का नाम था ?
उत्तरः– सूपिन
4. भूपसिंह अपने छोटे भाई को क्या कहकर पुकारता था ?
उत्तरः– भुइला
5. कौनसा प्रसंग छिड़ जाने के बाद रूपसिंह को बाकी चीज की कोई सूधि नहीं रह जाती थी?
उत्तरः– पर्वतारोहण
6. पहाड़ के रोए किसके लिए कहा गया है?
उत्तरः– देवदार के वृक्ष के लिए
7. रूपसिंह व शेखर का पर्वतारोहण का अध्याय क्यों समाप्त करना पड़ा ? ? ?
उत्तरः– महीप ने उकताकर टोक दिया 'साब जल्दी करो न'।
8. रूपसिंह शैला के लिए किस के फूल तोड़कर लाया करता था ?
उत्तरः– बुकस।
9. शेखर और रूपसिंह को घोड़े से क्यों उतरना पड़ा ?
उत्तरः–जब सामने भेड़ें आ गई और भेड़ों के साथ भेटिया कुत्ता भी आ गया था इसलिए उन दोनों का नीचे उतरना पड़ा।
10. शैला स्वेटर किसके लिए बुन रही थी ?
उत्तरः–भूपसिंह
11. रूपसिंह और भूपसिंह के पिता का नाम क्या था ?
उत्तरः– रामसिंह
12. ''धूंध के परदे के पीछे किसी बच्चें की तरह झांक रहा था लाल–लाल सूरज'' पंक्ति में अलंकार है ?
उत्तरः–मानवीकरण अलंकार।
13. भूपसिंह बैलों को पहाड़ी पर कैसे लाया था ?
उत्तरः– कंधों पर लादकर।
14. ''कौण केता है अकेला हूं'' भूपसिंह के इस कथन के अनुसार उसके साथ पहाड़ पर कौन कौन था ?
उत्तरः– मां,बाबा, शैला, ये सब सोए हुए है अर्थात् सब की याद है और अन्य में महीप है, बैल है, और घरवाली है।
15. '' तुझे बचपन में बाबा की सुनाई कहानी याद है न'' भूपसिंह किस कहानी के बारें में कहता है?
उत्तरः– नन्हीं चिड़िया की कहानी ।

लघुतरात्मक प्रश्न

1. रूपसिंह अपनी और अपने गांव की तौहिन किसमें बता रहा था?
उत्तरः– ग्यारह वर्ष बाद भी कोई मुकम्मिल सड़क नही बन पाई और अपने गॉड फादर के पुत्र आई ए एस ट्रेनी शेखर कपूर को पैदल पांव ही अपने गांव ले जाना अपनी और अपने गांव की ताहिन समझ रहा था।
2. माही जाने वाले रास्तें के बारे में रूपसिंह ने क्या पौराणिक तथ्य बताएं?
उत्तरः– ' पांडव इसी रास्ते से स्वर्ग गए थे और इधर का सबसे आखिरी गांव सुरगी है यानी स्वर्ग और उसके कुछ आगे स्वर्गारोहिणी अर्थात् स्वर्ग जाने का रास्ता।
3. रूपसिंह गांव से मसुरी किस प्रकार पहुचा?
उत्तरः– शेखर के पिताजी किसी पर्वतारोहण की ट्रेनिंग के लिए रूपसिंह के गांव आए हुए थे जो रास्ता भटक गए थे। तब रूपसिंह ने उन्हें रास्ता बताया और पर्वतारोहण की अपनी कला कौशन का प्रदर्शन किया। इस पर प्रसन्न होकर शेखर के पिताजी रूपसिंह को अपने साथ मसुरी ले आए।
4. रूपसिंह शेखर के सामने क्यों खिसिया गया?
उत्तरः– जब रूपसिंह ने बूढ़े तिरलोक सिंह को बताया कि वही रूपसिंह है और सरकार उसे पहाड़ों पर चढ़ने के लिए महिना चार हजार रूपया देती है तब तिरलोक सिंह इस बात का सभी के सामने मजाक बनाते है और रूपसिंह की किरकिरी होती है। इस बात पर रूपसिंह शेखर के सामने खिंसिया गया।
5. भूपसिंह का व्यक्तित्व वर्णन कैसा दर्शाया गया?
उत्तरः– गोरा चिट्टा चितीदार चेहरा मानो ग्रेनाइट पत्थर को तराशकर गढ़ा गया सख्त लंबोतरा चेहरा, उसकी अजीब की स्थितप्रज्ञ आंखें मद्दिम मद्दिम जलती हुई भौहों पर कटों के निशान । ग्यारह सालों में और भी ठोस और भी सख्त हो आए थे ।
6. भूपसिंह ने खुद का पहाड़ी पर आने का क्या कारण बताया?
उत्तरः– भूपसिंह ने रूपसिंह को बताया कि ' तेरे जाने के बाद बहुत बरफ गिरी हिमांग पहाड़ उसका बोझ न उठा सका और वह नीचे धसक गया। इस कारण उनके पुस्तैनी तीस नाली खेत, मां–बाप, सब कुछ दफन हो गए तब भूपसिंह उस स्थान को छोड़कर पहाड़ पर आ गए।

CREO BHINDER VALLABHNAGAR

7. महीप सिंह अपने बारें में बात पूछे जाने पर उसे टाल क्यों देता था?
उत्तरः– महीप गांव का एक शर्मिला और संकोची स्वभाव का लड़का था। बातों ही बातों में उसे ज्ञात हों गया की रूपसिंह ही उसका चाचा है और उसकी मां शैला से रूपसिंह मन ही मन प्रेम करता था। जबकि उसकी मां शैला भूपसिंह से प्रेम करती थी। वह किसी बात से नाराज होकर सूपिन नदीं में कूद कर आत्महत्या कर लेती है। इन सब बातों पर परदा डाले रहने के लिए महीप हर बात पर चुप ही रहता है ।

पाठ - 4 बिस्कोहर की माटी

1- कोइयाँ किसे कहते हैं? उसकी विशेषताएँ बताइए।
उत्तरः– कोइयाँ जल में उत्पन्न होने वाला पुष्प है। इसे 'कुमुद' तथा 'कोकाबेली-' के नामों से भी जाना जाता है। इसकी विशेषताएँ इस प्रकार हैं-
कोइयाँ पानी से भरे गड्ढे में भी सरलता से पनप जाती (है।
यह भारत में अधिकतर स्थानों में पाई जाती है। (
(य लगने वाली होती है।इसकी खुशबू मन को प्रि (
(शरद ऋतु की चाँदनी में तालाबों में चाँदनी की जो छाया बनती है (, वह कोइयों की पत्तियों के समान लगती है। दोनों एक समान लगती हैं।
2-'बच्चे का माँ का दूध पीना सिर्फ़ दूध पीना नहीं, माँ से बच्चे के सारे संबंधों का जीवनचरित होता है-'- टिप्पणी कीजिए।
उत्तरः– बच्चे का अपनी माँ से बहुत गहरा संबंध होता है। यह संबंध माँ की कोख में आने के साथ ही जुड़ जाता है। जब वह जन्म लेता है, तो माँ के दूध पर ही 6 महीने तक निर्भर रहता है। इस दूध को वह आगे 3 वर्षों तक और ग्रहण करता है। माँ अपने बच्चे को दूध पिलाते समय अपने आँचल की छाँव में रखती है। इससे माँ-बच्चे के मध्य संबंध सजीव हो उठता है। इस तरह दोनों एक-दूसरे के साथ जीवन के कई वर्ष बिताते हैं। बच्चा माँ के साथ ही रोता, हँसता, खेलता, खाता, पीता बड़ा होता है। माँ इन क्रियाओं से सुखी होती है। वह बच्चे पर अपनी ममता लुटाती है। वह बच्चे को अपनी ममता की छाँव के तले रखती है। बच्चा माँ के आँचल में दूध पीता हुआ अपनी माँ के स्पर्श तथा गरमाहट को महसूस करता है। वह बच्चे के लिए उसका पोषण करने वाली, मित्र तथा एक स्त्री होती है। माँ का दूध पीकर बच्चा मानव जीवन की सार्थकता को पूर्ण कर देता है। 3-बिसनाथ पर क्या अत्याचार हो गया?
उत्तरः– बिसनाथ अभी छोटे थे। माँ के दूध का सेवन ही कर रहे थे कि उनके छोटे भाई का जन्म हो गया। छोटे भाई के जन्म के कारण उन्हें माँ का दूध पिलाना बंद कर दिया गया। अब माँ का दूध छोटा भाई पीता था। बिसनाथ इसे स्वयं पर अत्याचार कहते हैं। माँ का दूध कट जाना उनके लिए अत्याचार के समान ही है। छोटा भाई माँ का दूध पिता और बिसनाथ को गाय के दूध पर निर्भर रहना पड़ा।
3-गर्मी और लू से बचने के उपायों का विवरण दीजिए। क्या आप भी उन उपायों से परिचित हैं?
उत्तरः– गर्मी और लू से बचने के लिए निम्नलिखित उपाए किए जाते हैं-
(क) धोती तथा कमीज़ में गाँठ लगाकर प्याज़ बाँध दिया जाता था।
(ख) लू से बचने के लिए कच्चे आम का पन्ना पिया जाता था।
(ग) कच्चे आम को भूना जाता था। गुड़ तथा चीनी के साथ उसका शरबत पीया जाता था। उसे शरीर पर लगाया जाता था तथा उससे नहाया भी जाता था।
(घ) कच्चे आम को भूनकर या उबालकर सिर भी धोया जाता था।
हम केवल प्याज़ के प्रयोग तथा आम पन्ना पीने वाले उपाय से परिचित हैं। अन्य विवरण हमारे द्वारा सुना नहीं गया है।
4-लेखक बिसनाथ ने किन आधारों पर अपनी माँ की तुलना बत्तख से की है?
उत्तरः– बत्तख अंडे देने के बाद पानी में नहीं जाती है। जब तक उसके अंडों से बच्चे नहीं निकल जाते हैं, तब तक वह उन्हें सेती है। वे अंडों को अपने पंखों के मध्य रखती है। इस तरह वह बच्चों को सबसे बचाकर रखती है। वह अपने अंडों तथा बच्चों की सुरक्षा के लिए बहुत सतर्कता के साथ-साथ कोमलता से काम लेती है। एक तरफ जहाँ वह सतर्क होती है, वहीं दूसरी ओर वह प्रयास करती है कि उसके अंडों तथा उनसे निकलने वाले बच्चों को कोई नुकसान न हो। ऐसे ही बिसनाथ की माँ भी करती है। वह अपने बच्चे की बहुत अच्छे से देखभाल करती है। वह उसे दूध पिलाती है। अपने साथ सुलाती है। उसका हर कार्य करती है। इसी कारण लेखक बिसनाथ ने अपनी माँ की तुलना बत्तख से की है।

CBEO BHINDER VALABHNAGAR

5-बिस्कोहर में हुई बरसात का जो वर्णन बिसनाथ ने किया है उसे अपने शब्दों में लिखिए?

उत्तरः– बिस्कोहर की बरसात सीधे नहीं होती है। पहले आकाश में बादल घिर जाते हैं। उसके बाद वह गड़गड़ाहते हैं। दिन में यदि बादल आकाश में छा जाए तो लगता है मानो रात हो गई है। तेज़ बारिश होने लगती है। बारिश होने का स्वर तबला, मृदंग तथा सितार जैसा लगता है। लेकिन जब तेज़ होती है, तो लगता है मानो दूर से घोड़े भागे चले आ रहे हों। प्रत्येक स्थान को वर्षा भीगा देती है। एक दिन होकर वर्षा बंद नहीं होती है। कई-कई दिन तक होती रहती है। इसके कारण किसी मकान की छत उड़ जाती है, तो कभी जमीन धंस जाती है। नदी में बाढ़ तक आ जाती है। गाँव के सभी पशु-पक्षी बरसात का आनंद उठाते हुए यहाँ से वहाँ भागते दिखाई देते हैं। नदी-नाले भर जाते हैं। चारों तरफ पानी ही पानी हो जाता है। पहली बरसात से चर्म रोग दूर हो जाते हैं।

6-'फूल केवल गंध ही नहीं देते दवा भी करते हैं', कैसे?

उत्तरः– लोगों का मानना है कि फूल अपने रंग तथा गंध के कारण पहचाने जाते हैं। लेखक इस बात को नकारता है। वह गंध की महत्व को स्वीकार करता है लेकिन वह यह भी कहता है कि फूल केवल गंध नहीं देते, वह दवा भी करते हैं। वह भरभंडा नामक फूल का वर्णन करता है। इस फूल से निकलने वाला दूध आँखे आने पर दवा का काम करता है। इसे आँख में निचोड़ देने से आँख की बीमारी सही हो जाती है। नीम के फूल चेचक के मरीज को ठीक कर सकते हैं। बेर के फूलों को सूँघने मात्र से ही बर्रे-ततैये का डंक अपने आप झड़ जाता है।

7-'प्रकृति सजीव नारी बन गई'- इस कथन के संदर्भ में लेखक की प्रकृति, नारी और सौंदर्य संबंधी मान्यताएँ सपष्ट कीजिए।

उत्तरः– लेखक की प्रकृति, नारी और सौंदर्य संबंधी कुछ मान्यताएँ हैं। ये मान्यताएँ आपस में गुथी हुई हैं। जब लेखक दस बरस का था, तो उसने एक स्त्री को देखा था। वह उससे दस वर्ष बड़ी थी। उसका सौंदर्य अद्भुत था। संतोषी भाई के घर के बाहर आँगन में एक जूही की लता लगी थी। उससे आने वाली सुंगध लेखक के प्राणों तक को महका गई थी। लेखक चाँदनी रात में लता पर खिले फूलों में चाँदनी को देखता है। उसे प्रतीत होता है मानो चाँदनी जूही के फूलों के रूप में लता में उग आई हो। यहाँ लेखक प्रकृति को जूही, खुशबू, लता तथा स्त्री के रूप में देखता है। उसके लिए ये अलग-अलग नहीं हैं। ये सब आपस में जुड़े हुए ही हैं। अतः वह औरत को चाँदनी के रूप में जूही की लता सी प्रतीत होती है। वह प्रकृति में उस औरत को और औरत को प्रकृति के रूप में देखता है।

8-ऐसी कौन सी स्मृति है जिसके साथ लेखक को मृत्यु का बोध अजीब तौर से जुड़ा मिलता है?

उत्तरः– लेखक ने एक बार गाँव में ठुमरी सुनी थी। उस ठुमरी को सुनकर लेखक का रोने का मन करने लगा था। लेखक कहते हैं कि उस ठुमरी को सुनते समय उस स्त्री की याद हो जाती है, जिसे अपनी मृत्यु की गोद में गए पति की याद आती है। उसे बस प्रियतम से मिलने का इतंज़ार है। उसका प्रियतम हर रूप में उसके साथ है। इसी स्मृति को याद करके लेखक को मृत्यु का बोध अजीब तौर से जुड़ा मिलता है।

CBEO BHINDER VALLABHNAGAR

"अलंकार"

प्रश्न 1. अलंकार शब्द का क्या अर्थ है?

उत्तर अलंकार शब्द का अर्थ आभूषण है।

प्रश्न 2. 'अलंकार' शब्द कितने शब्दों से मिलकर बना हैं?

उत्तर (अलं+कार) इन दो शब्दों से मिलकर बना हैं।

प्रश्न 3. अलं+कार शब्दों का शाब्दिक अर्थ बताइये।

उत्तर अलं –– भूषण

कार –– करने वाला

अर्थात् जो भूषित करे वह अलंकार हैं।

प्रश्न 4. अलंकार की परिभाषा लिखिए।

उत्तर जिस प्रकार स्त्रियाँ अपने साज श्रृंगार के लिए आभूषणों का प्रयोग करती है ठीक उसी प्रकार कविता कामिनी अपने श्रृंगार और सजावट के लिए जिन तत्वों का उपयोग करती हैं वे अलंकार कहलाते है। अर्थात् काव्य के शोभा कारक धर्म अलंकार है।

प्रश्न 5. अलंकार के कितने प्रकार हैं?

उत्तर अलंकार दो प्रकार के होते है।

प्रश्न 6. अलंकार के दो प्रकारों के नाम बताइये।

उत्तर (1) शब्दालंकार (2) अर्थालंकार

प्रश्न 7. शब्दालंकार की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए।

उत्तर जहाँ किसी कथन में विशिष्ट शब्द प्रयोग के कारण चमत्कार अथवा सौन्दर्य आ जाता है वहाँ शब्दालंकार होता हैं। वह बाँसुरी की धुनि कानि पैर, कूल कानि हियो तजि भाजति हैं। ''कानि'' के दो अर्थ – कान और मर्यादा है।

इस प्रकार का शब्द प्रयोग शब्दालंकार कहलाता है।

प्रश्न 8 अन्योक्ति अलंकार की परिभाषा (लक्षण) बताइये।

उत्तर कवि अप्रस्तुत का वर्णन करके प्रस्तुत का बोध कराता हैं तो वहाँ अन्योक्ति अलंकार होता हैं।

अन्योक्ति में बात किसी प्रस्तुत पर रखकर कही जाती हैं लेकिन कथन का लक्ष्य कोई दूसरा प्रस्तुत होता है।

प्रश्न 9 अन्योक्ति अलंकार का उदाहरण दीजिए।

उत्तर स्वारथ सुकृत न श्रम वृथा, देखि विहंग विचारि।

बाज पराये पानि पर, तू पंछीन न मारि।।

कविवर बिहारी ने इस अन्योक्ति द्वारा मिर्जा राजा जयसिहं को सावधान किया हैं कि वह बादशाह के लिए स्वधर्मी राजाओं के साथ युद्ध ना करे

प्रश्न 15 विभावना अलंकार तथा विशेषोक्ति अलंकार का अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर **विभावना अलंकार** –– जहाँ कारण के अभाव में कार्य होने का वर्णन किया जाता हैं वहाँ विभावना अलंकार होता हैं। विभावना में बिना कारण के कार्य सम्पन्न होता हैं।

उदाहरण –– बिनु पद चलै सुनै बिनु काना।

कर बिन करम करे विधि नाना।।

आनन रहित सकल रस भोगी।

बिनु बानी वक्ता बड़ जोगी।।

विशेषोक्ति अलंकार–जहाँ कारण उपस्थित होने पर भी कार्य नहीं होता, वहाँ विशेषोक्ति अलंकार होता है। कारण होने पर कार्य अवश्य होना प्रकृति प्रसिद्ध नियम हैं।

इसके विपरीत विशेषोक्ति में कारण होने पर भी कार्य सम्पन्न नहीं होता।

उदाहरण ––देखो दो–दो मेघ बरसते
मैं प्यासी की प्यासी।

CBEO BHINDER VALLABHNAGAR

जल होने पर भी उसकी (वियागिनी) प्रिय के दर्शन की प्यास नहीं बुझ रही।

प्रश्न 16. विभावना अलंकार की परिभाषा लिखिए।

उत्तर जहाँ कारण के अभाव में कार्य होने का वर्णन किया जाता हैं वहाँ विभावना अलंकार होता हैं। विभावना में बिना कारण के कार्य सम्पन्न होता हैं।

प्रश्न 17. विभावना अलंकार का उदाहरण दीजिए।

उत्तर उदाहरण –– बिनु पद चलै सुनै बिनु काना।
कर बिन करम करे विधि नाना।।
आनन रहित सकल रस भोगी।
बिनु बानी वक्ता बड़ जोगी।।

प्रश्न 18. . विभावना अलंकार की परिभाषा लिखिए ?

उत्तर–जहां कारण का अभाव होने पर भी कार्य संपन्न होना प्रदर्शित होता है। कहीं कही अपर्याप्त कारण होने पर भी कार्य का होना, रूकावट होने पर भी कार्य हो जाए तथा विपरित कारण से कार्य हो वहां विभावना अलंकार होता है।

प्रश्न 19. . विभावना अलंकार के अन्य उदाहरण–

उत्तर– 1. मुनितापस जिनतें दुख लहहीं ।
तेन रेस बिनु पावक दहहीं ।।
2.बिन घनश्याम धाम– धामब्रज–मंडल में,
ऊधो! नित बसति बहार बरसा की है।
3.कारे घन उमडि अँगारे बरसत हैं।

प्रश्न -20 अन्योक्ति अलंकार का लक्षण एवं उदाहरण लिखिए।

उत्तर - जहाँ अप्रस्तुत (उपमान) के वर्णन के माध्यम से प्रस्तुत (उपमेय) का ज्ञान होता है वहाँ अन्योक्ति अलंकार होता है। यह अर्थालंकार है। इसको अन्योक्ति इसलिए कहा जाता है कि जिससे कुछ कहना होता है उससे न कहकर अन्य से कहा जाता है तथा इस प्रकार उसको सूचित किया जाता है। इसमें किसी वस्तु का सीधा वर्णन न करके उसी के समान किसी वस्तु का वर्णन करके उस वस्तु का ज्ञान कराया जाता है।

उदाहरण –

(क) नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहि काल।
अली कली ही सों बंध्यौ, आगे कौन हवाल॥

यहाँ अलि को कली पर मंडराने से मना किया गया है क्योंकि अभी वह अविकसित है, फूल नहीं बनी। अलि के माध्यम से राजा जयसिंह को अपनी नवोढ़ा रानी के प्रेम-बन्धन में बँधकर राज्यषालन के कर्तव्य से विमुख होने के प्रति सतर्क किया गया है।

प्रश्न -21 अन्योक्ति अलंकार का लक्षण एवं उदाहरण लिखिए।

उत्तर – जहाँ किसी उक्ति के माध्यम से किसी अन्य को कोई बात कही जाए, वहाँ अन्योक्ति अलंकार होता है।

करि फुलेल को आचमन मीठौ कहत सिहाइ)
ऐ गंधी मतिमंद तू इतर दिखावत काहि । ।

स्पष्टीकरण-यहाँ इत्र बेचने वाले के माध्यम से अयोग्य, अरसिक और कलाशून्य लोगों पर व्यंग्य किया गया है।

प्रश्न -22 विभावना अलंकार का लक्षण एवं उदाहरण लिखिए।

उत्तर - जहाँ कारण के न होते हुए भी कार्य का होना पाया जाता है, वहाँ **विभावना अलंकार** होता है। उदाहरण -

निंदक नियरे राखिए , आँगन कुटी छबाय।
बिन पानी साबुन निरमल करे स्वभाव।।

प्रश्न -23. दृष्टांत - दृष्टांत उस अलंकार को कहते हैं जिसमें उपमेय और उपमान वाक्य दोनों में, उपमान, उपमेय और साधारण धर्म का बिम्ब -प्रतिबिम्ब भाव दिखाई देता है. पहले एक बात कही जाती है, फिर उससे मिलती-जुलती दूसरी बात कही जाती है.इस प्रकार उपमेय वाक्य की उपमान वाक्य से बिम्बात्मक समानता प्रकट की जाती है|

उदाहरण- पापी मनुज भी आज मुख से राम नाम निकालते|

देखो भंयकर भेड़िये भी, आज आंसू डालते ||

प्रथम पंक्ति में पापीजनों की दुष्ट प्रवृत्ति को भेड़िये के दृष्टांत द्वारा व्यक्त किया गया है |

प्रश्न -24. मानवीकरण - जब अमूर्त भावों अथवा जड़ वस्तुओं में मानवीय गुणों का आरोपण कर दिया जाता है तो मानवीकरण अलंकार होता है.मानवीकरण में प्रकृति को मानवीकरण रुप दिया जाता है तथा निर्जीव पदार्थों को मनुष्य की तरह काम करते या सुख - दुःख आदि भावों से पूरित और प्रभावित दिखाया जाता है|

उदाहरण - दिवसावसान का समय,

मेघमय आसमान से उतर रही |

व संध्या - सुन्दरी परी -सी,

धीरे -धीरे -धीरे ||

यहाँ संध्या काल को एक - एक कदम रखकर आसमान से धरती पर उतरती हुई सुन्दरी बताने के कारण मानवीकरण अलंकार है|

प्रश्न -25 रूपक अलंकार_उपमेय पर उपमान का आरोप या उपमान और उपमेय का अभेद ही 'रूपक' है।

जब उपमेय पर उपमान का निषेध-रहित आरोप करते हैं, तब रूपक अलंकार होता है। उपमेय में उपमान के आरोप का अर्थ है- दोनों में अभिन्नता या अभेद दिखाना। इस आरोप में निषेध नहीं होता है।

जैसे- यह जीवन क्या है ? निर्झर है।"

इस उदाहरण में जीवन को निर्झर के समान न बताकर जीवन को ही निर्झर कहा गया है। अतएव, यहाँ रूपक अलंकार हुआ।

दूसरा उदाहरण- बीती विभावरी जागरी !

अम्बर-पनघट में डुबो रही

तारा-घट ऊषा नागरी।

यहाँ, ऊषा में नागरी का, अम्बर में पनघट का और तारा में घट का निषेध-रहित आरोप हुआ है। अतः यहाँ रूपक अलंकार है।

कुछ अन्य उदाहरण :

(a) मैया ! मैं तो चन्द्र-खिलौना लैहों।

(b) चरण-कमल बन्दौं हरिराई।

(c) राम कृपा भव-निसा सिरानी।

(d) प्रेम-सलिल से द्वेष का सारा मल धूल जाएगा।

(e) चरण-सरोज पखारन लागा।

(f) पायो जी मैंने नाम-रतन धन पायो।

(g) एक राम घनश्याम हित चातक तुलसीदास

प्रश्न -26 **<u>उत्प्रेक्षा अलंकार</u>** उपमेय (प्रस्तुत) में कल्पित उपमान (अप्रस्तुत) की सम्भावना को 'उत्प्रेक्षा' कहते है।

दूसरे अर्थ में- उपमेय में उपमान को प्रबल रूप में कल्पना की आँखों से देखने की प्रक्रिया को उत्प्रेक्षा कहते है।

जहाँ उपमेय में उपमान की संभावना का वर्णन हो, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। उत्प्रेक्षा का अर्थ है, किसी वस्तु को सम्भावित रूप में देखना। सम्भावना सन्देह से कुछ ऊपर और निश्चय से कुछ निचे होती है। इसमें न तो पूरा सन्देह होता है और न पूरा निश्चय। उसमें कवि की कल्पना साधारण कोटि की न होकर विलक्षण होती है। अर्थ में चमत्कार लाने के लिए ऐसा किया जाता है। इसमें वाचक पदों का प्रयोग होता है।

BHNAGAR

उदाहरणार्थ- फूले कास सकल महि छाई।
जनु बरसा रितु प्रकट बुढ़ाई।।
यहाँ वर्षाऋतु के बाद शरद् के आगमन का वर्णन हुआ है। शरद् में कास के खिले हुए फूल ऐसे मालूम होते है जैसे वर्षाऋतु का बुढ़ापा प्रकट हो गया हो। यहाँ 'कास के फूल' (उपमेय) में 'वर्षाऋतु के बुढ़ापे' (उपमान) की सम्भावित कल्पना की गयी है। इस कल्पना से अर्थ का चमत्कार प्रकट होता है। वस्तुतः अन्त में वर्षाऋतु की गति और शक्ति बुढ़ापे की तरह शिथिल पड़ जाती है।
उपमा में जहाँ 'सा' 'तरह' आदि वाचक पद रहते है, वहाँ उत्प्रेक्षा में 'मानों' 'जानो' आदि शब्दों द्वारा सम्भावना पर जोर दिया जाता है। जैसे- 'आकाश मानो अंजन बरसा रहा है' (उत्प्रेक्षा) 'अंजन-सा अँधेरा' (उपमा) से अधिक जोरदार है।
उत्प्रेक्षा के वाचक पद (लक्षण): यदि पंक्ति में ज्यों, मानो, जानो, इव, मनु, जनु, जान पड़ता है- इत्यादि हो तो मानना चाहिए कि वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार का प्रयोग हुआ है। जैसे-
सखि ! सोहत गोपाल के उर गुंजन की माल।
बाहर लसत मनो पिए दावानल की ज्वाल।।
यहाँ उपमेय 'गुंजन की माल' में उपमान 'ज्वाला' की संभावना प्रकट की गई है।
कुछ अन्य उदाहरण :
(a) पदमावती सब सखी बुलायी। जनु फुलवारी सबै चली आई।।
(b) लता भवन ते प्रकट भे, तेहि अवसर दोउ भाय।
मनु निकसे जुग बिमल बिधु, जलद पटल बिलगाय।।
(c) जान पड़ता है नेत्र देख बड़े-बड़े
हीरकों में गोल नीलम हैं जड़े।
प्रश्न -27 **विरोधाभास अलंकार** जहाँ विरोध न होते हुए भी विरोध का आभास दिया जाय, वहाँ 'विरोधाभास अलंकार' होता है।
दूसरे शब्दों में- जहाँ बाहर से तो विरोध जान पड़े, किन्तु यथार्थ से विरोध न हो। उसे विरोधाभास अलंकार कहते हैं।
जैसे- बैन सुन्या जबतें मधुर, तबतें सुनत न बैन।
यहाँ 'बैन सुन्यों' और 'सुनत न बैन' में विरोध दिखाई पड़ता है। सच तो यह है कि दोनों में वास्तविक विरोध नहीं है। यह विरोध तो प्रेम की तन्मयता का सूचक है।
अन्य उदाहरण-
(a) जब से है आँख लगी तबसे न आँख लगी।
(b) प्रियतम को समक्ष पा कामिनी
न जा सकी न ठहर सकी।
(c) ना खुदा ही मिला ना बिसाले सनम
ना इधर के रहे ना उधर के रहे।

प्रश्न -28. उपमा अलंकार
उप का अर्थ है समीप से और पा का अर्थ है तोलना या देखना । अतः जब दो भिन्न वस्तुओं में समानता दिखाई जाती है, तब वहाँ उपमा अलंकार होता है । **जैसे:**

- **कर कमल-सा कोमल है ।**

यहाँ पैरों को कमल के समान कोमल बताया गया है । अतः यहाँ उपमा अलंकार होगा।

- **पीपर पात सरिस मन ड़ोला।**

ऊपर दिए गए उदाहरण में मन को पीपल के पत्ते कि तरह हिलता हुआ बताया जा रहा है। इस उदाहरण में **'मन' – उपमेय** है, **'पीपर पात' – उपमान** है, **'डोला' – साधारण धर्म** है एवं **'सरिस'** अर्थात **'के सामान' – वाचक शब्द** है। जैसा की हम जानते हैं की जब किन्ही दो वस्तुओं की उनके एक सामान धर्म की वजह से तुलना की जाती है तब वहां उपमा अलंकार होता है।
अतः यह उदाहरण उपमा अलंकार के अंतर्गत आएगा।

- **मुख चन्द्रमा-सा सुन्दर है।**

ऊपर दिए गए उदाहरण में चेहरे की तुलना चाँद से की गयी है। इस वाक्य में **'मुख' – उपमेय** है, **'चन्द्रमा' – उपमान** है, **'सुन्दर' – साधारण धर्म** है एवं **'सा' – वाचक शब्द** है।जैसा की हम जानते हैं की जब किन्ही दो वस्तुओं की उनके एक सामान धर्म की वजह से तुलना की जाती है तब वहां उपमा अलंकार होता है।
अतः यह उदाहरण उपमा अलंकार के अंतर्गत आएगा।

- **नील गगन-सा शांत हृदय था रो रहा।**

जैसा की आप ऊपर दिए गए उदाहरण में देख सकते हैं यहां हृदय की नील गगन से तुलना की गयी है। इस वाक्य में **हृदय – उपमेय** है एवं **नील गगन – उपमान** है **शांत – साधारण धर्म** है एवं **सा – वाचक शब्द** है। जैसा की हम जानते हैं की जब किन्ही दो वस्तुओं की उनके एक सामान धर्म की वजह से तुलना की जाती है तब वहां उपमा अलंकार होता है।
अतः यह उदारण उपमा अलंकार के अंतर्गत आएगा।

प्रश्न -29 **विरोधाभास अलंकार की परिभाषा**

'विरोधाभास' शब्द **'विरोध+आभास'** के योग से बना है, अर्थात् जब किसी पद में वास्तविकता में तो विरोध वाली कोई बात नहीं होती है, परन्तु सामान्य बुद्धि से विचार करने पर वहाँ कोई भी **पाठक** विरोध कर सकता है तो वहाँ **विरोधाभास अलंकार** माना जाता है। जैसे-

''या अनुरागी चित्त की, गति समुझै नहि कोय।
ज्यौं ज्यौं बूडै स्याम रंग, त्यौं त्यौं उजलो होय।।'

प्रस्तुत पद में कवि यह कहना चाहता है कि हमारे अनुरागी मन की गति को कोई भी समझ नहीं सकता है, क्योंकि यह जैसे-जैसे कृष्ण भक्ति के रंग में डूबता जाता है, वैसे-वैसे ही उसके विकार दूर होते चले जाते है यहाँ कोई भी सामान्य बुद्धि का पाठक यह विरोध कर सकता है कि जो काले रंग में डूबता है, वह उज्जवल कैसे हो सकता है। अर्थात कृष्ण तो काले रंग के है तो उनके पास जाने से उज्ज्वल कैसे हो सकते है। इस प्रकार विरोध का आभास होने के कारण यहाँ **विरोधाभास अलंकार** माना जाता है।

''अवध को अपनाकार त्याग से, वन तपोवन सा प्रभु ने किया।
भरत ने उनके अनुराग से, भवन में वन का व्रत ले लिया।।''

प्रस्तुत पद में राम के द्वारा वन को तपोवन सा बनाना एवं भरत के द्वारा राजभवन में ही वन का व्रत ले लेना विरोध का सा आभास कराता है।

''तंत्री नाद कवित्त रस, सरस राग रति रंग।
अनबूडे बूडे तिरे, जे बूडे सब अंग।।''

तंत्री के नाद में जो व्यक्ति नहीं डूबा व डूब गया और जो इसमें डूब गया वह तिर गया, यह **विरोधाभास** का कथन प्रतीत होता है।

''विषमय यह गोदावरी अमृतन को फल देत।
केसव जीवन हार को, असेस दुख हर लेत।।

—:छन्द:—

प्रश्न : 1. छन्द की परिभाषा बताइए।

उत्तर : — जब किसी कविता को मात्राओं की संख्या में मात्राओं अथवा नियमित वर्णों के अनुसार लिखा जाता है तथा उसमें यथा स्थान विराम, यति तथा गति का पालन किया जाता है तो उसको छन्द कहते हैं।

प्रश्न : 2. छन्द के प्रमुख भेद कौन—कौन से माने जाते हैं ? वर्णन कीजिए।

उत्तर : —छन्द के प्रमुख दो भेद माने जाते हैं।

1. मात्रिक छन्द 2. वर्णिक छन्द

प्रश्न : 3 मात्रिक छन्द किसे कहते हैं।

उत्तर : — जिन छन्दों में केवल मात्राओं का विधान रहता है, मात्रिक छन्द कहलाते हैं।

प्रश्न : 4 वर्णिक छन्द किसे कहते हैं ?

उत्तर : —जिन छन्दों में केवल वर्णों की गणना की जाती है, वर्णिक छन्द कहलाते हैं।

प्रश्न : 5. मात्रिक एवं वर्णिक छन्द में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : —मात्रिक छन्द—(1) मात्रिक छन्द मात्राओं की संख्याओं के आधार पर होते हैं।

(2) इस छन्द के लिए दो मात्राएं निर्धारित हैं— लघु (।), गुरु (ऽ)

(3) इसमें ह्रस्व स्वर को एक मात्रा तथा दीर्घ स्वर को दो मात्रा गिना जाता है।

—वर्णिक छन्द—(1) वर्णिक छन्द वर्णों की संख्याओं के आधार पर होते है।

(2) इसमें सिर्फ वर्णों का ही महत्व होता है।

(3) इसमें ह्रस्व व दीर्घ स्वर के वर्णों को केवल एक गिना जाता है।

प्रश्न : 06. हरिगीतिका छन्द की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए?

उत्तर :— परिभाषाः— हरिगीतिका छन्द एक मात्रिक छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में 16 और 12 के विराम/यति के कुल 28 मात्राएँ होती है। अंत में लघु गुरू (।ऽ) आते हैं।

उदाहरणः—**हम कौन थे, क्या हो गये हैं, और क्या होंगे अभी।**
आओ विचारें आज मिलकर, ये समस्याएँ सभी।
देखें कहीं पूर्वज हमारे, स्वर्ग से आकर हमें।
आँसू बहावें शेक से, इस वेश में पाकर हमें।

प्रश्न : 07. हरिगीतिका छन्द किस प्रकार का छन्द है?

उत्तर :— हरिगीतिका छन्द एक मात्रिक सम छन्द है।

प्रश्न : 08. गण किसे कहते हैं। तथा छन्दों में इसका क्या उपयोग है?

उत्तर :— गण का सामान्य अर्थ है समूह। छन्दशास्त्र में तीन अक्षरों के समूह को ''गण'' कहते हैं वर्णिक छन्दों के लिए गणों का ज्ञान आवश्यक है क्योंकि उनके लक्षण और उदाहरण गणों के आधार पर ही चलते हैं। गणों में लघु और गुरु के विचार का एक नियत क्रम रहता है और प्रत्येक गण में केवल तीन ही वर्ण होते हैं।

प्रश्न :09 गणों के कितने भेद होते हैं, उनके नाम व लक्षण बताइए?

उत्तर :— गणों के मुख्यत आठ भेद होते हैं—

क्र.सं.	गणों के नाम	चिह्न	मात्राओं का क्रम	उदाहरण
1	यगण	।ऽऽ	लघु , गुरू, गुरू	यमाता, यशोदा
2	मगण	ऽऽऽ	गुरू, गुरू, गुरू	मातारा,अंबाला
3	तगण	ऽऽ।	गुरू,गुरू,लघु	ताराज,मैदान
4	रगण	ऽ।ऽ	गुरू, लघु ,गुरू	राजभ, कामना
5	जगण	।ऽ।	लघु ,गुरू,लघु	जभान, खदान

CEO BHINDER VALLABHNAGAR

6	भगण	ऽ।।	गुरू, लघू, लघू	भानस, मानस
7	नगण	।।।	लघु ,लघु ,लघु ,	कमल, अमर
8	सगण	।।ऽ	लघु ,लघु ,गुरू	सलगा, कमला

प्रश्न : 10. यति, गति और तुक किसे कहते हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :–**यति–** छन्द के प्रत्येक चरण में लय की रक्षा निमित्त उच्चारण का प्रवाह कुछ काल के लिए रुक जाता है। .. इसी विश्राम को 'यति' कहा जाता है।

गति– काव्य में केवल वर्णों, मात्राओं या गणों की निश्चित संख्या ही पर्याप्त नहीं है, उसके लिए 'गति' भी आवश्यक तत्व है। 'गति' का अर्थ 'प्रवाह' होता है।

तुक– पदांत में भिन्न–भिन्न चरणों में ध्वनि की समानता को ''तुक'' या 'अन्त्यानुप्रास' कहते हैं।

प्रश्न : 11. छन्द की परिभाषा बताइए।

उत्तर – जब किसी कविता को मात्राओं की संख्या में मात्राओं अथवा नियमित वर्णों के अनुसार लिखा जाता है तथा उसमें यथा स्थान विराम, यति तथा गति का पालन किया जाता है तो उसको छन्द कहते हैं।

प्रश्न : 12. छन्द के प्रमुख भेद कौन–कौन से माने जाते हैं?

उत्तर – छन्द के दो प्रमुख भेद माने जाते हैं –

1. मात्रिक छन्द 2. वर्णिक छन्द

प्रश्न : 13. मात्रिक छन्द किसे कहते हैं?

उत्तर – जिन छन्दों में केवल मात्राओं को विधान रहता है, मात्रिक छन्द कहलाते हैं।

प्रश्न : 14. वर्णिक छन्द किसे कहते हैं?

उत्तर– जिन छन्दों में केवल वर्णों की गणना की जाती है, वर्णिक छन्द कहलाते हैं।

प्रश्न : 15. चौपाई छंद के लक्षण उदाहरण लिखिए ।

उत्तर -1. यह मात्रिक सम छंद होता है।

2. इसके प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती है।

3. प्रत्येक चरण के अन्त में जगण या तगण आना वर्जित माना जाता है।

4. यति प्रत्येक चरण के अन्त में होती है।

5. तुक सदैव पहले चरण की दूसरे चरण के साथ व तीसरे की चैथे चरण के साथ मिलती है।

चौपाई छंद के उदाहरण –

उदाहरण –

धीरज धरम मित्र अरु नारी।

ऽ।। ।।। ऽ। ।। ऽ ऽ

आपद काल परखिए चारी।।

ऽ।। ऽ। ।।।ऽ ऽ ऽ

रघुकुल रीति सदा चलि आई

।।।। ऽ। ।ऽ ।। ऽऽ

प्राण जाय पर वचन न जाई

ऽ। ऽ। ।। ।।। । ऽऽ

प्रश्न 16- दोहा छंद के लक्षण उदाहरण लिखिए

उत्तर **- लक्षण**

VALLABHNAGAR

1. यह अर्द्धसम मात्रिक छंद होता है।
2. इसमें विषम (पहले व तीसरे) चरणों में 13-13 मात्राएँ तथा सम (दूसरे व चैथे) चरणों में 11-11 मात्राएँ होती है।
3. इसके विषम चरणों के आरम्भ में जगण आना वर्जित माना जाता है, जबकि सम चरणों के अंत में एक लघु वर्ण आना आवश्यक है।
4. यति प्रत्येक चरण के अन्त में होती है।
5. तुक प्रायः सम चरणों में मिलती है।

दोहा छंद के उदाहरण

उदाहरण –

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोङो छिटकाय।
।।।। ss s। s ।। ss ।।s।
टूटे से फिर ना जुङे, जुङे गाँठ पङ जाय।।
ss s ।। s ।s ।s s। ।। s।
छाया माया एक सी, बिरला जाने कोय।
भगता के पीछे फिरे, सन्मुख भागे सोय।।

प्रश्न-17 मालिनी छंद के लक्षण उदाहरण लिखिए-

उत्तर –1. यह अतिशक्करी जाति का वर्णिक सम छंद होता है।
2. इसके प्रत्येक चरण में 15 वर्ण होते है, जो क्रमशः नगण, नगण, मगण, यगण, यगण के रूप में लिखे जाते है।
3. इसमें यति क्रमशः आठ व सात वर्णों पर होती है।

मालिनी छंद **उदाहरण -**

प्रिययति वह मेरा प्राण प्यारा कहाँ है?
।।।। ।। s s s। s s ।s s
दुख जलनिधि डूबी का सहारा कहाँ है?
।। ।। ।। s s s । s s । s s
लख मुख जिसका मैं आज लौं जी सकी हूँ,
।। ।। ।।s s s। s s ।। s
वह हृदय हमारा नैन तारा कहाँ है?
।। ।।। ।ss s। ss ।s s

प्रश्न 18- वसन्ततिलका छंद के लक्षण उदाहरण लिखिए-

उत्तर –1. यह शक्वरी जाति का वर्णिक सम छंद होता है।
2. इसके प्रत्येक चरण में 14 वर्ण होते हैं, जो क्रमशः तगण, भगण, जगण, जगण व गुरु – गुरु के रूप में लिखे जाते है।
3. इसमें यति प्रत्येक चरण के अन्त में होती है।

वसन्ततिलका छंद उदाहरण –

थे दीखते परम वृद्ध नितान्त रोगी
s s।s ।।। s। ।s। ss
या थी नवागत वधू गृह में दिखाती
s s ।s।। ।s ।। s ।ss
कोई न और इनको तज के कहीं था

ss । s। ।।s ।। s ।s s

सूने सभी सदन गोकुल के हुए थे।

बातें बडी सरस थे कहते बिहारी,

ss ।s ।।। s ।।s ।ss

छोटे बडे सकल का हित चाहते थे।

ss ।s ।।। s ।। s।s s

अत्यन्त प्यार सँग थे मिलते सबों से,

s s। s। ।। s ।।s ।s s

वे थे सहायक बडे दुख के दिनों में ।।

s s ।s।। ।s ।। s ।s s

प्रश्न -19 गीतिका छंद के लक्षण उदाहरण लिखिए-**लक्षण –**

उत्तर –

1. यह मात्रिक सम छंद होता है।
2. इसके प्रत्येक चरण में 26 मात्राएँ होती है।
3. प्रत्येक चरण में अन्त में क्रमशः एक लघु व एक गुरु वर्ण आना आवश्यक है।
4. इसमें यति क्रमशः चौदह व बारह मात्राओं पर होती है।
5. इसमें तुक पहले चरण की दूसरे चरण के साथ व तीसरे चरण की चैथे चरण के साथ मिलती है।

हे प्रभो आनंददाता, ज्ञान हमको दीजिए,

s ।s ss।ss s। ।।s s।s

शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हमसे कीजिए।

s। ss ।ss s s। ।।s s।s

लीजिए हमको शरण में हम सदाचारी बनें,

s।s ।।s ।।। s ।। ।sss ।s

ब्रह्मचारी धर्मरक्षक वीर वृतधारी बनें।।

ss।s s।।।। s। ।।ss ।s

प्रश्न 20 छंद के लक्षण उदाहरण लिखिए-

उत्तर –

1. यह मात्रिक सम छंद होता है।
2. इसके प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती हैं।
3. इसमें यति क्रमशः 11 व 13 मात्राओं पर होती है।
4. इसमें तुक प्रायः दो-दो चरणों में मिलती है।

रोला छंद उदाहरण

नीलाम्बर परिधान, हरित पट पर सुन्दर है।

ss।। ।।s। ।।। ।। ।। s।। s

सूर्य चन्द्र युग मुकुट, मेखला रत्नाकर है।

s। s। ।। ।।। s।s ss।। s

नदियां प्रेम-प्रवाह, फूल-तारा-मण्डल है।
।।s s। ।s। s। ss s।। s
बन्दीजन खगवृंद, शेष फन सिंहासन हैं।।
ss।। ।।s। s। ।। ss।। s

प्रश्न 21 उल्लाला छंद के लक्षण एवं उदाहरण लिखिए -

लक्षण –

1. यह अर्द्धसम मात्रिक छंद होता है।
2. इसमें यति प्रत्येक चरण के अंत में होती है।
3. इसमें यति प्रत्येक चरण के अंत में होती है।
4. इसमें तुक सदैव सम चरणों में मिलती है।

उल्लाला छंद उदाहरण –

करते अभिषेक पयोद हैं, बलिहारी इस वेष की
।।s ।।s। ।s। s ।।ss ।। s। s
हे मातृभूमि तू सत्य ही, सगुण मूर्ति सर्वेश की
s s।s। s s। s ।।। s। ss। s
हे शरणदायिनी देवि! तू, करती सबका त्राण है।
s । ।।s।s s। s ।।s ।।s s। s
हे मातृभूमि संतान हम, तू जननी तू प्राण है।।
s s।s। ss। ।। s ।।s s s। s
उसकी विचार धारा, धरा के धर्मों में है वही-
सब सार्वभौम सिद्धान्त, का आदि प्रवर्तक है वही
निर्मल अति मन में सदा, उठता यह उद्गार है
सुगति स्वर्ग-अपवर्ग का, गुरु प्रसाद ही द्वार है

काव्य–गुण

प्रश्न 1.“होगी जय, होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन”-में काव्य-गुण कौन-सा है?

उत्तर:“होगी जय, होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन में” ओज काव्य-गुण है।:

प्रश्न 2.काव्य-गुण किसको कहते हैं? काव्य-गुण कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर:काव्य की सरस पदावली में स्थित रहकर काव्य की शोभा बढ़ाने वाले धर्म को काव्यगुण कहते हैं। ये माधुर्य, प्रसाद तथा ओज नामक तीन प्रकार के होते हैं।

प्रश्न 3.माधुर्य गुण का एक उदाहरण लिखिए।

उत्तर:माधुर्य गुण का उदाहरण –

नील परिधान बीच सुकुमार।
खुल रहा मृदुल अधखुला अंग।

खिला हो ज्यों बिजली का फल।
मेघ बन बीच गुलाबी रंग।
प्रश्न 4.ओज गुण का एक उदाहरण लिखिए।
उत्तर:ओज गुण का उदाहरण –
जब तक हैं लक्ष्मण महावाहिनी के नायक
मध्य मार्ग में अंगद, दक्षिण श्वेत सहायक।
मैं, भल्ल सैन्य है वाम पार्श्व में हनुमान।
नल् नील और छोटे कपिगण उनके प्रधान।

प्रश्न 5.प्रसाद गुण का एक उदाहरण लिखिए।
उत्तर:प्रसाद गुण का उदाहरण –
प्रजा मूल अन्न सब अन्नन को मूल मेघ,
मेघन को मूल एक जज्ञ अनुसरिवौ।
जज्ञन को मूल धन, धन मूल धर्म अरु
धर्म मूल गंगाजल बिन्दु पान करिबौ।
प्रश्न 6.माधुर्य गुण की उदाहरण सहित परिभाषा लिखिए।
उत्तर:**परिभाषा** – जिससे चित्त आह्लाद से द्रवित हो जाय, उस काव्य गुण को माधुर्य कहते हैं।**उदाहरण** –
प्रीतम छवि नैनन बसी, परछबि कहाँ समाय।
भरी सराय रहीम लखि आपु पथिक फिरि जाय।
प्रश्न 7.प्रसाद गुण की सोदाहरण परिभाषा दीजिए।
उत्तर:**परिभाषा** – जिस रचना का अर्थ सुनते ही सुनने वाले की समझ में आ जाय वहाँ प्रसाद गुण होता है। जिस प्रकार सूखे ईंधन में अग्नि तुरन्त व्याप्त हो जाती है, उसी प्रकार चित्त में प्रसाद गुण शीघ्र व्याप्त हो जाता है।

उदाहरण –
इसमें मानव समता के दाने बोने हैं।
जिससे उगल सके फिर धूलि सुनहरी फसलें।
मानवता के जोवन श्रम से हँसे दिशाएँ।

प्रश्न 8.ओज गुण की परिभाषा लिखकर एक उदाहरण दीजिए।
उत्तर:**परिभाषा** – जिस काव्य-रचना के पढ़ने अथवा सुनने से पाठक अथवा श्रोता का मन उत्साह से भर उठे, उसमें ओज नामक काव्य-गुण होता है।
उदाहरण –
यह पुण्य भूमि प्रसिद्ध है इसके निवासी आर्य हैं
विद्या, कला-कौशल सभी के जो प्रथम आचार्य हैं।
सन्तान उनकी आज यद्यपि हम अधोगति में पड़े।
पर चिहन अभी उच्चता के आज भी कुछ हैं खड़े।
प्रश्न 9.प्रसाद गुण किन-किन रसों में प्रयुक्त होता है? कोई एक उदाहरण दीजिए।
उत्तर:प्रसाद गुण सभी रसों में प्रयुक्त होता है किन्तु करुण रस, हास्य रस, शान्त रस तथा वात्सल्य रस में अधिक प्रयुक्त होता है।

उदाहरण –

जान्यो मनुज करि दनुज कानन दहन पावक हरि स्वयं ।
जेहि नमत शिव ब्रह्मादि सुर पिय भजेहु नहिं करुनामयं ॥
आजन्म ते पर द्रोह रत पापौघमय तब तनु अयं ।
तुम्हहूँ दियो निज धाम राम नमामि ब्रह्म निरामयं ॥

प्रश्न 10.प्रसाद गुण की परिभाषा एवं एक उदाहरण लिखिए।

उत्तर- **प्रसाद का शाब्दिकार्थ है -निर्मलता, प्रसन्नता।**

जिस काव्य को पढ़ने या सुनने से हृदय या मन खिल जाए , हृदयगत शांति का बोध हो, उसे प्रसाद गुण कहते हैं। इस गुण से युक्त काव्य सरल, सुबोध एवं सुग्राह्य होता है। जैसे अग्नि सूखे ईंधन में तत्काल व्याप्त हो जाती है, वैसे ही प्रसाद गुण युक्त रचना भी चित्त में तुरन्त समा जाती है।

यह सभी रसों में पाया जा सकता है।

हे प्रभो ज्ञान दाता !ज्ञान हमको दीजिए।
शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हमसे कीजिए।

प्रश्न 11.माधुर्य गुण की परिभाषा एवं एक उदाहरण लिखिए।

उत्तर **किसी काव्य को पढने या सुनने से हृदय में जहाँ मधुरता का संचार होता है, वहाँ माधुर्य गुण होता है। यह गुण विशेष रूप से श्रृंगार, शांत, एवं करुण रस में पाया जाता है।**

बसों मोरे नैनन में नंदलाल,
मोहिनी मूरत सांवरी सूरत नैना बने बिसाल।

प्रश्न 12.ओज गुण की परिभाषा एवं एक उदाहरण लिखिए।

उत्तर - **ओज का शाब्दिक अर्थ है-तेज, प्रताप या दीप्ति ।**

जिस काव्य को पढने या सुनने से हृदय में ओज, उमंग और उत्साह का संचार होता है, उसे ओज गुण प्रधान काव्य कहा जाता हैं ।

बुंदेले हर बोलों के मुख से हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी।

प्रश्न 13.प्रसाद गुण की परिभाषा एवं एक उदाहरण लिखिए।

उत्तर - ऐसी काव्य रचना जिसको पढ़ते ही अर्थ ग्रहण हो जाता है, वह प्रसाद गुण से युक्त मानी जाती है। अर्थात् जब बिना किसी विशेष प्रयास के काव्य का अर्थ स्वतः ही स्पष्ट हो जाता है, उसे प्रसाद गुण युक्त काव्य कहते है। 'स्वच्छता' एवं 'स्पष्टता' प्रसाद गुण की प्रमुख विशेषताएँ मानी जाती है।

नर हो न निराश करो मन को।
काम करो, कुछ काम करो।
जग में रहकर कुछ नाम करो।।

प्रश्न 14.ओज गुण की परिभाषा एवं एक उदाहरण लिखिए।

उत्तर - ऐसी काव्य रचना जिसको पढ़ने से चित्त में जोश, वीरता, उल्लास आदि की भावना उत्पन्न हो जाती है, वह ओजगुणयुक्त काव्य रचना मानी जाती है।

देशभक्त वीरों मरने से नेक नहीं डरना होगा।

प्राणों का बलिदान देश की वेदी पर करना होगा।।

प्रश्न 15.माधुर्य गुण की परिभाषा एवं एक उदाहरण लिखिए।

उत्तर - हृदय को आनन्द उल्लास से द्रवित करने वाली कोमल कांत पदावली से युक्त रचना माधुर्य गुण सम्पन्न होती है। अर्थात् ऐसी काव्य रचना जिसको पढ़कर चित्त में श्रृंगार, करुणा या शांति के भाव उत्पन्न होते हैं, वह माधुर्य गुणयुक्त रचना मानी जाती है।

मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरों न कोई

जाके सर पर मोर मुकुट मेरो पति सोई

प्रश्न–16 काव्य गुण कितने प्रकार के होते है? नाम लिखिए।

उत्तर– काव्य गुण तीन प्रकार के होते हैं–

1. माधुर्य गुण 2. प्रसाद गुण 3. ओज गुण

प्रश्न–17 काव्य गुण किसे कहते है? परिभाषा लिखिए।

उत्तर– काव्य की शोभा बढ़ाने वाले धर्म को काव्य गुण कहते है।

अथवा

रस का उत्कर्ष करने वाली बातों को काव्य गुण कहते है।

प्रश्न–18 माधुर्य गुण की उदाहरण सहित परिभाषा लिखिए ?

उत्तर– परिभाषा – माधुर्य का अर्थ है– मिठास। अन्तः करण को आनन्द –उल्लास से द्रवित करने वाली कोमल–मधुर वर्णों से युक्त रचना माधुर्य गुण से युक्त होती है।

उदाहरण–

1. मन्द–मन्द मुरली बजावत अधर धरे,
   मन्द–मन्द निकस्यो मुकुन्द मधु–बन ते।
2. प्रीतम छवि नैनन बसी, परछवि कहाँ समाय।
   भरी सराय रहीम लखि, आपु पथिक फिरि जाय।।

प्रश्न–19 प्रसाद गुण की उदाहरण सहित परिभाषा लिखिए ?

उत्तर– परिभाषा– प्रसाद का अर्थ है–स्वच्छता या निर्मलता। जिस रचना का अर्थ सुनते ही सुनने वाले की समझ में आ जाए वहाँ प्रसाद गुण होता है।

उदाहरण–

1. देखि सुदामा का दीन दसा करुना करि कै करुनानिधि रोये।
   पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सों पग धोये।।

2 प्रजा मूल अन्न सब अन्नन को मूल मेघ,
मेघन को मूल एक जज्ञ अनुसरिवौ ।
जज्ञन को मूल धन, धन मूल धर्म अरु,
धर्म मूल गंगाजल बिन्दु पान करिबौ।।

प्रश्न–20 ओज गुण की उदाहरण सहित परिभाषा लिखिए ?

उत्तर– परिभाषा– ओज का अर्थ है–तेजस्विता। जिस काव्य रचना के पढ़ने अथवा सुनने से पाठक अथवा श्रोता का मन उत्साह से भर उठे, उसमें ओज नामक काव्य गुण होता है।

उदाहरण–

1. बढ़ो, करो वीर! स्व–जाति का भला
   अपार दोनों विधि लाभ है हमें।

CEO BHINDER VALLABHNAGAR

किया स्व–कर्तव्य उबार जो लिया
सु–कीर्ति पायी यदि भस्म हो गये।।

2. सांस चलती है किसकी
कहता है कौन उँची छाती कर, मैं हूँ–
मैं हूँ मेवाड़ मैं।

प्रश्न–21 माधुर्य गुण किन–किन रसों में प्रयुक्त होता हैं ?

उत्तर– माधुर्य गुण श्रृंगार रस, शान्त रस तथा करुण रस में प्रयुक्त होता है। वैसे आचार्यो ने माधुर्य गुण को सभी रसों के लिए उपयुक्त माना है।

प्रश्न–22 प्रसाद गुण किन–किन रसों में प्रयुक्त होता हैं ?

उत्तर– प्रसाद गुण सभी रसों में प्रयुक्त होता हैं किन्तु करुण रस, हास्य रस, शान्त रस तथा वात्सल्य रस में अधिक प्रयुक्त होता है।

प्रश्न–23 आचार्य विश्वनाथ ने काव्य की क्या परिभाषा दी है?

उत्तर– आचार्य विश्वनाथ ने काव्य की निम्न परिभाषा दी है–
वाक्यं रसात्मकं काव्यं।

प्रश्न–24 काव्य–गुण कितने हैं ? आचार्यों का इस विषय में क्या मत है?

उत्तर– 1. आचार्य दण्डी ने दस काव्य गुण बताये है।
2 आचार्य वामन ने बीस काव्य गुण माने है।
3 आचार्य मम्मट ने ओज, प्रसाद तथा माधुर्य नामक तीन काव्य गुण माने है।

प्रश्न–25 काव्य–गुण किसके धर्म कहे जाते है तथा क्यों ?

उत्तर– काव्य–गुण रस के धर्म कहे जाते है क्योकि ये सरस काव्य में रहकर काव्य की श्रीवृद्धि करते है। गुणों के कारण काव्य की सरसता बढ़ती है तथा श्रोता या पाठक आह्लादित हो उठता है।

प्रश्न–26 काव्य–गुणों से सम्बन्धित रीतियों तथा वृत्तियों के नाम लिखिए ?

उत्तर– 1 माधुर्य गुण – वैदर्भी रीति तथा उपनागरिका वृत्ति
2 प्रसाद गुण – पांचाली रीति तथा कोमल वृत्ति
3 ओज गुण – गौड़ी रीति तथा परुष वृत्ति

UNDER VALLABHNAGAR

काव्य दोष

दोष शब्द का सामान्य अर्थ गलती, भूल, त्रुटि, रोग और हानि आदि है। काव्य में दूसरों को लेकर अनेक आचार्यों ने अलग-अलग परिभाषाएं दी हैं भरतमुनि ने दोषों की परिभाषा तो नहीं दी है परंतु गुण की परिभाषा में दोषों का विपर्यय या अभाव गुण बताया है।

इस प्रकार भरतमुनि की मान्यता के अनुसार काव्य में गुणों का अभाव दोष होता है

इसी प्रकार साहित्य दर्पण में आचार्य विश्वनाथ ने दोष उस तत्व को बताया है जो मुख्य अर्थ का अपकर्ष अर्थात् रस की हानि करता है।

काव्य में रस की हानि तीन प्रकार की होती है रस की अनुभूति(प्रतीति) में विलंब के द्वारा दूसरी रस के अवरोध द्वारा तीसरी रस अनुभूति में विघ्न के द्वारा।

आचार्य मम्मट- काव्यप्रकाश के रचयिता मम्मट ने दोष की परिभाषा सबसे स्पष्ट रूप में दी है-

काव्य दोष कितने प्रकार के होते हैं

काव्य दोषों की संख्या के विषय में आचार्य में मतभेद रहे हैं भरत मुनि ने अपने नाट्यशास्त्र में दूसरों की संख्या 10 मानी है तथा आचार्य भामह ने दूसरों की संख्या 11 मानी है और दंडी ने काव्य दोष10 बताए हैं आचार्य मम्मट के समय दोषों की संख्या 60 से भी अधिक थी।

तथा आचार्य वामन ने काव्य दूसरों का वैज्ञानिक रूप से वर्गीकरण करते हुए 4 वर्ग बताए हैं-

1. **शब्दगत दोष**
2. **अर्थगत दोष**
3. **रसगत दोष**
4. **पदगत दोष**

आचार्य मम्मट ने भी दूसरों को 4 वर्गों में विभाजित किया है परंतु दोषों के नाम भिन्न बताये हैं-

1. **पदगत दोष**
2. **वाक्यगत दोष**
3. **अर्थगत दोष**
4. **रसगत दोष**

कुलपति मिश्र तथा चिंतामणि आदि रीतिकालीन आचार्य ने पद और वाक्य का समावेश शब्द में करते हुए दूसरों के 3 वर्ग स्वीकार किए हैं-

1. **शब्दगत दोष**
2. **अर्थगत दोष**
3. **रसगत दोष**

काव्य में दोषों का प्रभाव

काव्य में दोषों का प्रभाव- निश्चय ही दोष काव्य पर व्यापक प्रभाव डालते हैं इसी कारण आचार्य दंडी ने दोषों को त्याज्य माना है, क्योंकि इनसे काव्य में विकृतियां प्राप्त होती हैं। अग्नि पुराण के दोषों के कारण काव्य की हानि होती है। मम्मट ने दोषों के कारण मुख्य अर्थ रसायनुभूति में बाधा पडना स्वीकार किया है

रसवादी आचार्य विश्वनाथ भी दोषों को रसायनुभूति में बाधक मानते हैं रीतिकाल के प्रवर्तक आचार्य केशवदास ने तो दोषयुक्त काव्य को हेय अर्थात त्याज्य बताया है। डॉ. रामदास भारद्वाज दूसरों के कारण रसास्वादन में अवरोधन काव्य उत्कर्ष का नाश तथा काव्य स्वाद में विलंब स्वीकार करते है।

शब्द दोष

शब्द दोष के प्रकार

1.श्रुतिकटुत्व दोष

- **श्रुतिकटुत्व दोष-** इसका अर्थ है कानों को कटु लगने वाले कठोर वर्णों का प्रयोग। काव्य में करण कटु वर्णों के प्रयोग के कारण यह दोष उत्पन्न होता है करण कटु शब्द श्रंगार वात्सल्य आदि कोमल रसों में ही रस अनुभूति के लिए घातक होते हैं, वहीं दूसरी ओर वीर रस, रौद्र रस, वीभत्स रस और भयानक रस आदि में ये कर्णकटु शब्द उनके गुण बन जाते हैं।

जैसे- **कवि के कठिनतर कर्म की कहते नहीं हम धृष्टता।**
पर क्या न विषयोत्कृष्टता करती विचारोत्कृष्टता ।।

यहां कठिनता, धृष्टता, विषयोत्कृष्टता, विचारोत्कृष्टता जैसे शब्द कानों को कटु लगने वाले शब्द हैं इस कारण यह श्रुतिकटुत्व दोष को उत्पन्न करते हैं।

सब जात फटी दुख की दुपटी-कपटी न रहे जहां एक घटी।
निघटी रुचि मीच घटीहू घटी जगजीव जतीन की छूटी तटी।
अघ ओघ की बेड़ी कटी विकटी प्रगटी निकटी गुरु ज्ञान गटी।
चहुं ओरन नाचति मुक्ति नटी गुन घूरजटी वन पंचवटी।

इस उदाहरण में भी प्रकृति का वर्णन श्रंगार रस का विषय है परंतु इसमें श्रुति कर दो तवरण की बार-बार आवृत्ति से श्रुतिकटुत्व दोष आ गया है।

अन्य उदाहरण

कटर-कटर तण्डुल चबात हरि हंसि-हंसि के।
हियरा चटकात हरि रुकमिन महारानी के।।

यहां 'कटर-कटर' और 'हियरा चटकात' में **श्रुतिकटुत्व दोष** है।

2.च्युतसंस्कृति दोष

2- **च्युतसंस्कृति दोष-** संस्कृति शब्द का अर्थ है संस्कार और भाषा में संस्कार व्याकरण से आता है। जहां काव्य में भाषा अथवा व्याकरण के नियमों के विरुद्ध शब्द अथवा पदों का प्रयोग किया जाता है। वहां च्युत संस्कृति दोष होता है।

गत जब रजनी हो पूर्व संध्या बनी हो,
उडुगण क्षय भी हों दीखते भी कहीं हो।
मृदुल मधुर निद्रा चाहता चित्त मेरा,
तब पिक करती तू शब्द प्रारंभ 'तेरा'

यहां 'तेरा' शब्द अशुद्ध होने के कारण होने से **च्युतसंस्कृति दोष** है।

इसी प्रकार अन्य उदाहरण-

पुष्पों की लावण्यता देती है आनन्द।

इस उदाहरण में लवण शब्द से भाववाचक ष्यञ् प्रत्यय होने से लावण्य शब्द बनता है जिसका अर्थ है सुंदरता। इससे भाववाचक ता प्रत्यय करना व्याकरण के नियम के विरुद्ध होने से 'च्युतसंस्कृति दोष' है।

3.ग्रामत्व दोष- साहित्य में जहां ग्रामीण लोगों में प्रचलित गंवारू शब्दों का प्रयोग किया जाता है। वहां ग्रामत्व दोष होता है काव्य से आनंद उठाने वाले लोग शिक्षित एवं सुसंस्कृत होते हैं गंवारु शब्दों का प्रयोग उन्हें अरुचिकर लगता है जैसे-

सृष्टि के आरंभ में मैंने उषा के गाल चूमे।

यहां 'गाल' शब्द गँवारू होने से **ग्रामत्व दोष** है।

अन्य उदाहरण-

मूड पै मुकुट धरे सोहत हैं गोपाल।

यहॉ पर शीश के लिए 'मूड़' शब्द का प्रयोग गंवारू होने से **ग्रामत्व दोष** है।

4.क्लिष्टत्व दोष- क्लिष्टत्व शब्द का अर्थ है कठिन अथवा दुर्बोध होना । काव्य में जहां सरल एवं सुबोध शब्दों का प्रयोग ना करके कठिन और दुर्बोध शब्दों का प्रयोग किया जाता है वहां **क्लिष्टतत्व दोष** होता है।

कहत कत परदेशी की बात।
मन्दिर अरध अवधि हरि बदि गये हरि अहार चलि
नखत वेद ग्रह जोरि अरधकरि को बरजै हम खात।

"इस उदाहरण में 'मंदिर अरध' का आशय घर का आधा पाख या पक्ष अथवा भाग है, और और महीने का आधा भाग भी है इसी तरह 'हरि-अहार' का आशय सिंह का भोजन मांस अर्थात मास है। 27 नखत(नक्षत्र) 4 वेद, एवं 9 ग्रह को जोड़ने पर 40 होते हैं और 40 के आधे 20 होते हैं। बीस से आशय विष अर्थात जहर है इन शब्दों का अर्थ सहज सुबोध नहीं है और यह अर्थ बहुत मुश्किल से समझ में आता है इसीलिए यहां पर **क्लिष्टत्व दोष** है।

अन्य उदाहरण-

मन्दोदरि पति को जो भ्राता तासु प्रिया नंहि आवति।

इसका आशय यह है- नींद नहीं आती है। इसके लिए मंदोदरी रावण की पत्नी। मंदोदरी का पति रावण। रावण का भ्राता कुंभकरण। कुंभकरण की प्रिया नींद, क्योंकि कुंभकरण 6 महीने सोता था और एक दिन जागता था। नींद के लिए मंदोदरि को भ्राता तासु प्रिया' का प्रयोग किया गया है इसका अर्थ बड़ी कठिनाई से तथा देर में समझ में आता है इसलिए यहां **क्लिष्टत्व दोष** है।

5.अप्रतीतत्व दोष- जो शब्द किसी अर्थ विशेष में कोर्स अथवा अन्य ग्रंथों में अथवा विषय में सुरक्षित है, सर लोक में उस अर्थ में उसका व्यवहार या प्रयोग न होता हो। लोक में प्रचलित अर्थ में किसी शब्द का प्रयोग काव्य में करना है अप्रतीतत्व दोष कहलाता है। जैसे-

विषमय यह गोदावरी अमृतन को फल देत।

केशव जीवन हार को दुख अशेष हरिलेत।।

इस उदाहरण में आचार्य केशवदास ने विष एवं जीवन शब्दों का प्रयोग जल के अर्थ में किया है कुश के अनुसार इन दोनों शब्दों का अर्थ जल होता है, परंतु लोक व्यवहार में यह शब्द इस अर्थ में प्राकृत नहीं है। इस लोक में विष का अर्थ जहर तथा जीवन का अर्थ जिंदगी के रूप में प्रचलित है इसीलिए इस उदाहरण में **अप्रतीतत्व दोष** है।

अन्य उदाहरण-

मानिक के पीछे दौड़ दौड़ कर हम संसारी खिन्न।

आशय दलित योग से करके मुनिजन परम प्रसन्न।।

लोक व्यवहार में 'आशय' से शब्द का अर्थ 'तात्पर्य' होता है परंतु इस उदाहरण में 'आशय' शब्द का प्रयोग 'मन की चंचलता' के लिए हुआ है। 'आशय' शब्द का यह अर्थ केवल योग दर्शन में ही प्रचलित हुआ है। लोक व्यवहार में बिल्कुल नहीं इसीलिए इस उदाहरण में भी **अप्रतीतत्व दोष** है

6.न्यूनपदत्व दोष- काव्य में अपनी ओर से एक शब्द अथवा अधिक शब्दों का प्रयोग करके वांछित अर्थ को प्राप्त किया जाता हो वहां **न्यून पदत्व दोष** होता है या जहां काव्य में अपनी ओर से कोई एक शब्द जोड़कर ही किसी वाक्य या पद का पूर्ण अर्थ प्राप्त होता हो वहां **न्यून पद दोष** होता है।

जैसे- **आज आगमन से हुए धन्य हमारे भाग्य।**

इस पंक्ति का अर्थ है आज आपके आगमन से हमारे भाग्य धन्य हो गए हैं यहां आपके शब्द अपनी तरफ से जोड़कर वांछित अर्थ को प्राप्त किया गया है इसीलिए इसमें न्यून पद दोष है।

अन्य उदाहरण

कृपा दृष्टि करती सदा पतितों का उद्धार।

इसका वंचित अर्थ प्राप्त करने के लिए पाठकों को प्रभु या ईश्वर शब्द जोड़कर वांछित अर्थ को प्राप्त किया जाएगा अत: इसमें ईश्वर शब्द या प्रभु शब्द अपनी तरफ से जोड़ा गया है।

7.अधिक पदत्व दोष- काव्य में जहां एक या अधिक ऐसे शब्दों का प्रयोग हो जिन को निकाल देने पर अर्थ में कोई बाधा उत्पन्न नहीं होती अथवा अर्थ में कोई अंतर नहीं आता वहां **अधिक पद दोष** होता है।

"प्रथम पुत्र अर्जुन ने रण में किए पराजित शत्रु सभी"

इस पंक्ति में प्रथा पुत्र शब्द निकाल देने से अर्थ में कोई बाधा उत्पन्न नहीं होती इसीलिए यहां **अधिक पदत्व दोष** है।

इसी प्रकार अन्य उदाहरण

"लिपटे पुष्प पराग से सने कुसुम मकरंद"

इस पंक्ति में पुष्प और कुसुम शब्दों को निकाल देने से अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं होता क्योंकि पराग और मकरंद फूलों का ही होता है। पुष्प और कुसुम शब्दों फूलों के पर्यायवाची शब्द हैं।

8.अक्रमत्व दोष- जब काव्य में शब्दों का प्रयोग उचित क्रम से ना हो तो वहां **'अक्रमत्व दोष'** होता है।

जैसे- **अब तो मिलते नहीं वीर जन अर्जुन-भीम सामान के।**

यहां शब्दों का उचित क्रम 'अर्जुन भीम के समान' होना चाहिए परंतु इस पंक्ति में ऐसा नहीं है इसीलिए इस पंक्ति में **अक्रमत्व दोष** है।

अन्य उदाहरण

थी करुणा प्रभु ने जब-जब की तभी पतित उद्धार हुआ।

यहां शब्दों का क्रम जब जब प्रभु ने करुणा की थी होना चाहिए था लेकिन ऐसा न होने के कारण इस पंक्ति में भी '**अक्रमत्व दोष**' है।

अर्थ दोष- श्रोता अथवा पाठक को काव्य का आनंद शब्दों का अर्थ समझने पर ही मिलता है। परंतु यहां श्रोता या पाठकों को अर्थ को समझने में कठिनाई पड़े वहां अर्थ दोष माना जाता है। प्रमुख अर्थ दोष निम्नलिखित हैं-

9.दुष्क्रमत्व दोष- जब काव्य में शब्दों का प्रयोग लोक अथवा शास्त्र में प्रसिद्ध क्रम के विरुद्ध किया जाता है वहां **दुष्क्रमत्व दोष** होता है।

मारुत नंदन मारुत को, मन को खगराज को वेग लजायो।

लुक और शास्त्र दोनों के अनुसार सबसे तीव्र वेग मन का है इसीलिए मनु को प्रथम स्थान पर रखना चाहिए था इस कारण यहां पर **दुष्क्रमत्व दोष** है।

अन्य उदाहरण

नृप मोको हय दीजिए अथ्वा मत्त गजेन्द्र।

इस उदाहरण में भी दुष्क्रमत्व दोष है क्योंकि हय(घोडा) की अपेक्षा गज अधिक मूल्यवान होता है जो व्यक्ति घोड़ा नहीं दे सकता वह गज अर्थात हाथी कैसे दे सकता है? यहां लोग प्रसिद्ध क्रम के अनुसार 'गजेंद्र' शब्द का प्रयोग 'हय' से पहले होना चाहिए। यह क्रम में ना होने के कारण **दुष्क्रमत्व दोष** है।

10.पुनरुक्ति काव्य दोष-जब काव्य में किसी शब्द अथवा बाग के द्वारा वांछित अर्थ की प्राप्ति हो जाती है। वही उसी अर्थ वाले शब्द अथवा वाक्य का पुनः प्रयोग करना **पुनरुक्ति दोष** होता है।

अर्थात एक ही अर्थ को प्रकट करने वाले शब्द या वाक्य का दो या दो से अधिक बार प्रयोग करना **पुनरुक्ति** दोष कहलाता है। जैसे-

योद्धा रण में विजयी होते, वीर युद्ध में पाते जय।

इस उदाहरण में 'योद्धा रण में विजयी होते' से इच्छित अर्थ स्पष्ट हो रहा है। उसी को प्रकट करने के लिए 'वीर युद्ध में पाते जय' यह वाक्य का प्रयोग होने से **पुनरुक्ति** दोष है।

इसी प्रकार अन्य उदाहरण

मधुमेह वाक्य ह्रदय हर लेते,

मन को लूटें सरस वचन।

यहां पर भी 'मधुमय वाक्य ह्रदय हर लेते' काजू अर्थ है उसी अर्थ को प्रकट करने के लिए पुनः 'मन को लुटे सरस वचन' वाक्य का प्रयोग होने से **पुनरुक्ति दोष** है।

पत्रकारीय लेखन

प्रश्न :–1 पत्रकार लेखन का जाना – पहचाना रुप कौन सा लेखन है ?

उत्तर :– समाचार लेखन पत्रकार लेखन का जाना–पहचाना रुप है।

प्रश्न :–2 पत्रकारीय लेखन के लिए सबसे पहले क्या समझना बहुत जरुरी है ?

उत्तरः– पत्रकारीय लेखन के लिए सबसे पहले यह समझना बहुत जरुरी है कि पत्रकारीय लेखन क्या है, समाज में उसकी भूमिका क्या है, और वह अपनी भूमिका को कैसे पूरा करता है।

प्रश्न :–3 पत्रकारीय लेखन एवं साहित्यिक लेखन में अन्तर स्पष्ट कीजिए ?

उत्तर :– पत्रकारीय लेखन एवं साहित्यिक लेखन में निम्न अन्तर होते हैः–

पत्रकारीय लेखन :– इसमें तथ्य होते हैं, कल्पना नहीं। यह वास्तविकता और अपने पाठको की रुचियों और आवश्यक्ताओं को ध्यान में रखकर किया जाने वाला लेखन है।

साहित्यिक लेखन :– इसमें लेखक को सृजनात्मक लेखन में काफी छूट होती है।

प्रश्न :–4 पत्रकारीय साक्षातकार एवं सामान्य बातचीत में क्या अन्तर है ?

उत्तर :– पत्रकारीय साक्षात्कार में एक पत्रकार किसी अन्य व्यक्ति से विषय विशेष पर तथ्य, उसकी राय और भावनाओं को जानने के लिए प्रश्न करता है जबकि आपसी बातचीत उद्देश्यहीन संवाद है जिसका कोई उद्देश्य और ढाँचा नहीं होता है।

प्रश्न :–5 फीचर और समाचार – लेखन में क्या अन्तर है ?

उत्तर :–1. समाचार– लेखन में तथ्यों पर आधारित विवरण होता है, फीचर लेखन में यह आवश्यक नहीं होता ।

2. समाचार–लेखन में सूचना देना आवश्यक होता है, फीचर लेखन में सूचना के साथ मनोरंजन भी जुड़ जाता है।

3. समाचार लेखन की भाषा सरल और जनता में प्रचलित होती है तथा भाषा शैली विवरणात्मक होती है। फीचर की भाषा तथा शैली साहित्यिक होती है।

पत्रकारीय लेखन

प्र.1 पत्रकारीय लेखन किसे कहते हैं?

उत्तर किसी अखबार या अन्य समाचार माध्यम में काम करने वाले पत्रकार अपने पाठकों दर्शकों या श्रौताओं तक सूचनाएँ पहुँचाने के लिए लेखन के विभिन्न स्वरूपों का प्रयोग करते हैं। इसी को पत्रकारीय लेखन कहते हैं।

प्र.2 उल्टा पिरामिड शैली की किन्हीं दो विशेषताओं को लिखिए।

उत्तर उल्टा पिरामिड शैली की दो विशेषाताएँ निम्नलिखित हैं –

1. सबसे पहले समाचार का सबसे महत्वपूर्ण तथ्य लिखा जाता है।
2. उसके बाद घटते क्रम में अन्य तथ्यों और सूचनाओं को लिखा जाता है।

प्र.3 समाचार लेखन के प्रकार कौन–कौन से हैं?

उत्तर छः ककार निम्नलिखित है–

(1) क्या (2) कौन (3) कहाँ (4) कब (5) कैसे (6) क्यों

प्र.4 छः ककार मुख्यतः किस पर आधारित होते हैं?

उत्तर छः ककारों में पहले चार ककार – क्यो, कौन, कब और कहाँ सूचनात्मक और तथ्यों पर आधारित होते हैं। अन्तिम दो ककार कैसे और क्यों–पहलू पर आधारित होते हैं।

प्र.5 पत्रकार कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर पत्रकार तीन प्रकार के होते हैं–

(1) पूर्णकालिक पत्रकार (2) अंशकालीन पत्रकार (3) फ्रीलांसर पत्रकार

प्र.6 फ्रीलांसर पत्रकार किसे कहते हैं?

उत्तर फ्रीलांसर पत्रकार किसी खास अखबार का वेतन भोगी कर्मचारी नहीं होता। वह किसी अखबार से जुड़ा न रहकर स्वतंत्र रूप से अनेक समाचार पत्रों के लिए लिखता रहकर स्वतंत्र रूप से अनेक समाचार पत्रों के लिए लिखता है तथा अपनी तयशुदा दरों से भुगतान लेता है।

प्र.7 इंट्रो से आप क्या समझते हैं?

उत्तर समाचार के मुखड़े को ही इंट्रो कहते हैं। समाचार की प्रथम दो या तीन पंक्तियाँ मुख्य रूप से क्या, कौन, कब और कहाँ नामक चार ककारों पर आधारित होती है। ये सभी चारों ककार सृजनात्मक एवं तथ्यों पर आधारित होते हैं।

CEC BHINDER VALLABHNAGAR

प्र.8 फीचर किसे कहते हैं तथा इसका उद्देश्य क्या हैं?

उत्तर फीचर एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है जो सामाजिक विषयों से लेकर गम्भीर विषयों और मुद्दों पर भी लिखा जा सकता है। फीचर का उद्देश्य पाठकों को सूचना देने, शिक्षित करने के साथ मुख्य रूप से उनका मनोरंजन करना भी होता है।

प्र.9 फीचर लिखते समय किन बातों पर ध्यान देना चाहिए?

उत्तर फीचर लिखते समय निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए–

1. फीचर को सजीव बनाने के लिए उसमें उस विषय से जुड़े लोगों यानी पात्रों की मौजूदगी जरूरी है।
2. पात्रों के माध्यम से उस विषय या कहानी के विभिन्न पहलुओं को सामने लाना चाहिए।
3. फीचर या कहानी को कहने का ढंग सजीव होना चाहिए जिससे पाठक महसूस करें कि वह खुद सब देख या सुन रहे हैं।
4. फीचर तथ्यों, सूचनाओं और विचारों पर आधारित होना चाहिए।
5. फीचर मनोरंजक होने के साथ सूचनापरक होना चाहिए।

प्र.10 अच्छा लेख लिखते समय ध्यान रखने योग्य कोई चार शर्ते लिखिए।

उत्तर

1. लेखक के विचार तथ्यों एवं सूचनाओं पर आधारित हों।
2. लेख लिखने के लिए विषय की पूरी जानकारी आवश्यक है।
3. किसी भी विषय पर लेख लिखने से पहले उसकी पृष्ठभूमि सामग्री जुटानी चाहिए।
4. लेख लिखने की शुरूआत ऐसे विषय से करनी चाहिए जिस पर अच्छी पकड़ और जानकारी हो।

प्र.11 विशेष रिपोर्ट क्या होती हैं?

उत्तर जब कोई रिपोर्ट (संवाददाता) किसी विशेष घटना, समस्या या मुद्दे से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्यों को इकट्ठा करके उनके विश्लेषण के माध्यम से परिणाम प्रभाव और कारणों को स्पष्ट करता है तब उस लेखन को विशेष रिपोर्ट कहते है।

प्र.12 इनडेप्थ रिपोर्ट क्या हैं?

उत्तर इनडेप्थ रिपोर्ट में सार्वजनिक रूप से उपलब्ध तथ्यों, सूचनाओं और आँकड़ों की बहुत ही गहराई से छान बीन की जाती है। छानबीन के आधार पर किसी घटना समस्या अथवा मुद्दे से संबंधित अत्यंत महत्वपूर्ण बातों को सामने लाया जाता है।

प्र.13 संपादकीय लेखन से आप क्या समझते हैं?

उत्तर संपादकीय पृष्ठ पर जो आलेख छपता है वह वास्तव में उस अखबार की अपनी आवाज माना जाता है। संपादकीय किसी घटना या समस्या के प्रति अपनी राय प्रकट करता है। संपादकीय लिखने का दायित्व पत्र के संपादक और उसके सहयोगियों का होता है। सम्पादकीय को सम्पादक का मत नहीं माना जाता बल्कि वह समाचार पत्र का विचार होता है।

प्र.14 स्तम्भ लेखन से क्या आशय है? इसका क्या महत्व हैं?

उत्तर विचारपरक लेखन का एक प्रमुख रूप स्तम्भ लेखन भी है। कुछ विशेष विषयों को लेकर कई लेखक प्रसिद्ध हो जाते है। उनकी एक खास लेखन शैली भी विकसित हो जाती है। अतः ऐसे लोकप्रिय लेखकों से अखबार में नियमित स्तम्भ लिखवाने की परम्परा है। स्तम्भ में लेखक अपने विचार स्वतन्त्र रूप से अभिव्यक्त कर सकता है। कुछ अखबार अपने स्तम्भ विशेष के कारण लोकप्रिय हो जाते है। कुछ लेखक अपने स्तम्भ के कारण लोकप्रिय हो जाते है।

प्र.15 अच्छे साक्षात्कार के लिए क्या गुण अपेक्षित हैं?

उत्तर एक अच्छे व सफल साक्षात्कार के लिए साक्षात्कारकर्ता को अपने साक्षात्कार के विषय और साक्षात्कार किए जाने वाले व्यक्ति के बारे में सम्यक और पर्याप्त जानकारी होनी चाहिए। इसके साथ ही साक्षात्कार कर्ता को अपने उद्देश्य का भी भली भाँति ज्ञान होना चाहिए। उसे ऐसे प्रश्न पूछने चाहिए जो किसी अखबार के सामान्य पाठक के मन में होने सम्भावित हो।

प्रश्न :–1 पत्रकार लेखन का जाना – पहचाना रुप कौन सा लेखन है ?

उत्तर :– समाचार लेखन पत्रकार लेखन का जाना–पहचाना रुप है।

प्रश्न :–2 पत्रकारिय लेखन के लिए सबसे पहले क्या समझना बहुत जरुरी है ?

उत्तरः– पत्रकारिय लेखन के लिए सबसे पहले यह समझना बहुत जरुरी है कि पत्रकारिय लेखन क्या है, समाज में उसकी भूमिका क्या है, और वह अपनी भूमिका को कैसे पूरा करता है।

प्रश्न :–3 पत्रकारीय लेखन एवं साहित्यिक लेखन में अन्तर स्पष्ट कीजिए ?

CBEC BHINDER VALLABHNAGAR

उत्तर :– पत्रकारीय लेखन एवं साहित्यिक लेखन में निम्न अन्तर होते है:–

पत्रकारीय लेखन :– इसमें तथ्य होते हैं, कल्पना नहीं। यह वास्तविकता और अपने पाठको की रुचियों और आवश्यक्ताओं को ध्यान में रखकर किया जाने वाला लेखन है।

साहित्यिक लेखन :– इसमें लेखक को सृजनात्मक लेखन में काफी छूट होती है।

प्रश्न :–4 पत्रकारीय साक्षातकार एवं सामान्य बातचीत में क्या अन्तर है ?

उत्तर :– पत्रकारीय साक्षात्कार में एक पत्रकार किसी अन्य व्यक्ति से विषय विशेष पर तथ्य, उसकी राय और भावनाओं को जानने के लिए प्रश्न करता है जबकि आपसी बातचीत उद्देश्यहीन संवाद है जिसका कोई उद्देश्य और ढाँचा नहीं होता है।

प्रश्न :–5 फीचर और समाचार – लेखन में क्या अन्तर है ?

उत्तर :– 1. समाचार– लेखन में तथ्यों पर आधारित विवरण होता है, फीचर लेखन में यह आवश्यक नहीं होता ।

2. समाचार–लेखन में सूचना देना आवश्यक होता है, फीचर लेखन में सूचना के साथ मनोरंजन भी जुड़ जाता है।

3. समाचार लेखन की भाषा सरल और जनता में प्रचलित होती है तथा भाषा शैली विवरणात्मक होती है। फीचर की भाषा तथा शैली साहित्यिक होती है।

विशेष लेखन – स्वरूप और प्रकार

प्रश्न–1. विशेष लेखन से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर– किसी खास विषय पर सामान्य लेखन से हटकर किया गया लेखन ही विशेष लेखन है। अधिकतर समाचार पत्रो, पत्रिकाओ, टी.वी. और रेडियो चैनलो में विशेष लेखन के लिए अलग डेस्क होता है।

प्रश्न–2. विशेष लेखन की भाषा शैली के दो महत्वपूर्ण बिन्दु लिखिए ?

उत्तर– विशेष लेखन की भाषा शैली के दो महत्वपूर्ण बिन्दु–

1. विशेष लेखन की भाषा सरल व समझ में आने वाली हो।
2. विशेष लेखन के अधिकांश विषय और क्षेत्र तकनीकी रूप से जटिल होते हैं। इस तकनीकी शब्दावली को भी सरल करके या प्रचलित शब्दों में ही लिखना चाहिए।

प्रश्न–3. समाचार–पत्रों में किन विषयों पर विशेष लेख लिखे जा रहे है ?

उत्तर– समाचार–पत्रों में खेल, कारोबार, सिनेमा, मनोरंजन, फैशन, स्वास्थ्य, विज्ञान, पर्यावरण, शिक्षा, रक्षा, विदेश नीति और राष्ट्रीय सुरक्षा जैसे विषयों पर विशेष लेख लिखें जाते है।

प्रश्न–4. समाचार–पत्र की सबसे बड़ी विशेषता क्या है ?

उत्तर– एक समाचार–पत्र या पत्रिका तभी सम्पूर्ण लगती है जब उसमें विभिन्न विषयो और क्षैत्रों, घटित घटनाओं, समस्याओं और मुद्दों आदि के बारे में नियमित रूप से जानकारी दी जाए।

प्रश्न–5. विशेष लेखन की जरूरत किन क्षेत्रों में अधिक पड़ती है ?

उत्तर– तकनीकी रूप से जटिल क्षैत्र और उनसे जुड़ी घटनाओं और मुद्दों को समझाने के लिए विशेष लेखन की जरूरत पड़ती है।

प्रश्न–6. खेल कैसा क्षेत्र हैं ?

उत्तर– खेल एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें अधिकांश लोगो की रुचि होती है। प्रत्येक व्यक्ति अच्छा खिलाड़ी नही होता परन्तु किसी खेल आयोजन का देखकर लोगो को ऊर्जा मिलती है तथा उनकी सोई हुई रुचि जाग जाती है।.....

प्रश्न–7. किसी भी लेखन को विशिष्टता प्रदान करने वाली बातें कौन–सी हैं ?

उत्तर– जब कोई लेखक किसी विशेष विषय पर लिखता है तो उसे दो बातों का ध्यान रखना अत्यंत आवश्यक है कि उसकी बात पाठक की समझ में आ रही है या नहीं। उसके लिखे तथ्य और तर्क में एकरूपता है या नहीं।

CEO BHINDER VALLABHNAGAR

प्रश्न–8. मीडिया की भाषा में विशेष लेखन क्या कहलाता हैं ?
उत्तर– विषय विशेष में लेखन का दायित्व सौंपा जाता है। मीडिया की भाषा में विशेष लेखन को बीट कहा जाता है।
प्रश्न–9. बीट रिपोर्टिंग हेतु दो आवश्यक बातें बताइये ?
उत्तर– बीट रिपोर्टिंग हेतु दो आवश्यक बातें –
(1) बीट रिपोर्टर को प्रायः अपनी बीट से जुड़ी सामान्य खबरें ही लिखनी होती हैं।
(2) बीट के बारे में जानकारी और दिलचस्पी होनी चाहिए।
प्रश्न–10. कोई भी समाचार पत्र या पत्रिका कब संपूर्ण लगती है ?
उत्तर– जब समाचार पत्र या पत्रिका में विभिन्न विषयों और क्षेत्रों में घटने वाली घटनाओ, समस्याओं और मुद्दों के बारे में नियमित जानकारी हो।
प्रश्न–11. विशेषीकृत रिपोर्टिंग के लिए क्या आवश्यक हैं ?
उत्तर– (1) सम्बंधित विषय की गहरी जानकारी होना।
(2) रिपोर्टिंग से सम्बंधित भाषा और शैली पर पूरा अधिकार होना।
प्रश्न–12. पत्र–पत्रिकाओं में खेलो के बारे में लिखने वालो के लिए क्या आवश्यक है ?
उत्तर– पत्र–पत्रिकाओं में खेलो के बारे में लिखने वालो के लिए यह आवश्यक है कि वे खेल की तकनीकियों को, उसके नियमों को, उसकी बारीकियो को तथा उससे संबंधित सभी बातों को भली–भांति जानतें हों।
प्रश्न–13. विशेष रिपोर्ट कितने प्रकार की होती है ? संक्षेप में लिखिए।
उत्तर– विशेष रिपोर्ट अनेक प्रकार की होती है, जैसे– खोजी रिपोर्ट, इन डैप्थ रिपोर्ट, विश्लेषणात्मक रिपोर्ट और विवरणात्मक रिपोर्ट।
प्रश्न–14. 'इन डैप्थ रिपोर्ट' में क्या होता है ?
उत्तर– किसी सार्वजनिक तौर पर उपलब्ध तथ्य को, उससे सम्बंधित आंकडों, घटनाओं आदि की गहराई से जांच पड़ताल के बाद सामने लाने का काम 'इन डैप्थ रिपोर्ट' करती है।

प्रश्न–15. अखबारों और पत्र–पत्रिकाओं में किसी विशेष विषय पर लेख या स्तंभ लिखने वाले पत्रकार कैसे होते है ?
उत्तर– अखबारों और पत्र–पत्रिकाओं में किसी विशेष विषय पर लेख या स्तंभ लिखने वाले पत्रकार पेशेवर न होकर उस विषय के विशेषज्ञ होते हैं।

कविता, कहानी व नाटक

प्रश्न 1 कविता क्या है ?
उत्तर : कविता हमारी संवेदनाओं के बहुत निकट होती है व हमारे मन को छू लेती है एवं कभी कभी वह हमें झकझोर देती है। कविता के मूल में संवेदना है, राग तत्व है व संवेदना सम्पूर्ण सृष्टि से जुड़ने व अपना बना लेने का बोध है।
प्रश्न 2 एक अच्छी कविता की संरचना किस प्रकार होती है ?
उत्तर : कविता की संरचना के लिए आवश्यक है वैयक्तिक सोच, दृष्टि और दुनिया को देखने का उसका अपना नजरिया।
प्रश्न 3 कविता लेखन एक कला है। कैसे ?
उत्तर : कविता लेखन एक ऐसी कला है जिसमे किसी बाह्य उपकरण की मदद नहीं ली जा सकती है। कविता कवि के आंतरिक भावो की वह अभिव्यक्ति है जिसे वह शब्दों में पिरोता है। कविता में शब्दों की तुकबंदी, रिदम, लय और व्यवस्था को पूरा ध्यान में रखकर कविता की रचना की जाती है।

प्रश्न 4 कविता के प्रमुख घटकों को संक्षेप में बताइये।

CEO BHINDER VALLABHNAGAR

उत्तर : 1 -कविता में भाषा का पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है।

2 -कविता की संरचना ऐसी हो जो पाठक को नई लगे।

3 -कविता में बिम्ब और छंदों की बुनयादी जानकारी होनी चाहिये।

4 -कविता का स्वरूप समय के साथ बदलता रहता है अतः उस समय की प्रचलित प्रवृतियों को ज्ञान हो।

5 -कम से कम शब्दों में अपनी बात कह देना।

6 -कविता रचने के लिए नवीन दृष्टिकोण होना भी जरुरी है।

प्रश्न 5 कविता कोने में घात लगाए बैठी है, यह हमारे जीवन में किसी भी क्षण बसंत की तरह आ सकती हैं। इन पंक्तियों से क्या तात्पर्य हैं ?

उत्तर : ये पंक्तियाँ जार्जलुईस बोर्गेस की है। उनका मानना है कि प्रत्येक व्यक्ति के मन में रचना करने की प्रवृति होती है एवं प्रत्येक व्यक्ति के मन में भाव होते हैं जो किसी भी समय शब्दों के रूप में फुटकर कविता की रचना कर सकते हैं। उनका कोई निश्चित समय नहीं होता, निश्चित काल नहीं होता है। कभी भी वे मानव मन से स्फुटित हो सकती हैं।

प्रश्न 6 नाटक साहित्य की अन्य विधाओ से अलग है। कैसे ? स्पष्ट करे।

उत्तर : क्योकि जहाँ साहित्य की अन्य विधाएँ अपने लिखित रूप में एक निश्चित ओर अंतिम रूप को प्राप्त कर लेती है वही नाटक अपने लिखित रूप में सिर्फ एक आयामी ही होता है जब उस नाटक का मंचन होता है तब वह पूर्ण रूप प्राप्त करता है। जहाँ साहित्य की दूसरी विधाएँ पढ़ने या सुनने तक सीमित होती है वहीं नाटक पढने सुनने के साथ देखा भी जाता है।

प्रश्न 7 नाटक में भाषा किस प्रकार की होनी चाहिए ?

उत्तर : नाटक में भाषा सहज, स्वाभाविक, प्रसंग के अनुकूल होनी चाहिए। नाटक में काल, समय, परिवेश के अनुरूप भाषा का प्रयोग करना चाहिए व ध्यान रखना चाहिए कि भाषा क्लिष्ट न हो। नाटक का मंचन सदैव वर्तमान काल में ही होता है।

प्रश्न 8 'समय का बन्धन' नाटक की एक मूल विशेषता है समझाइए।

उत्तर : समय का बंधन एक अच्छे नाटक के लिए आवश्यक तत्व है, नाटक लिखते समय नाटककार को नाटक की मूल विशेषताओं को सदैव याद रखना होता है। वह है समय का बन्धन, एक नाटक को शुरू से अन्त तक तय समय सीमा के भीतर पूरा होना होता है। एक नाटक में यदि समय सीमा का ध्यान नहीं रखा गया तो वह बहुत छोटा या बहुत बड़ा बन जायेगा। नाटक के प्रत्येक अंक की अवधि कम से कम 48 मिनट होनी चाहिए।

प्रश्न 9 कहानी क्या है ?

उत्तर : साधारण भाषा में हम कह सकते है कि किसी घटना, पात्र या समस्या का क्रमबध्द ब्यौरा जिसमे परिवेश हो, कथा का क्रमिक विकास हो, चरम उत्कर्ष का बिंदु हो उसे कहानी कहा जाता है।

प्रश्न 10 नई कहानी किसे कहा गया है ?

उत्तर : मार्कण्डेय के अनुसार "नई कहानी का अर्थ उन कहानियो से है जो सच्चे अर्थो में कलात्मक निर्माण है, जो जीवन के लिए उपयोगी है।

प्रश्न 11 हिंदी कहानी के आरंभिक लेखक कौन कौन थे ?

उत्तर : किशोरी लाल गोस्वामी, माधव प्रसाद मिश्र, बंग महिला, राम चन्द्र शुक्ल, जय शंकर प्रसाद, वंदावन लाल वर्मा आदि।

प्रश्न 12 हिन्दी कहानी का जन्म कब हुआ ?

उत्तर : हिन्दी कहानी का जन्म 1900 के आस पास हुआ और 1918 तक वह पुर्णतः प्रतिष्ठित हो गई।

प्रश्न 13 कहानियां किन किन विषयों पर लिखी जा सकती है ?

उत्तर : कहानियां लिखने के अनेक विषय है जिन पर लेखक कहानी लिख सकता है ये वास्तविक घटनाए या किस्से भी हो सकते है और काल्पनिक घटनाएँ भी हो सकती हैं जिसका हमारे वास्तविक जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं होता है। सामान्यतः कहानी किसी घटना, युद्ध, प्रतिशोध के किस्से अथवा पौराणिक और ऐतिहासिक घटनाएँ भी हो सकती हैं।

प्रश्न 14 लेखक कहानी का उद्धेश्य किस प्रकार निर्धारित करता है ?

उत्तर : लेखक को एक समस्या की जानकारी का सूत्र मिलने पर लेखक का ध्यान उसके पात्र, परिवेश, व्यवस्थाओं पर केन्द्रित हो जाता है। तत्पश्चात वह सोचता है कि कहानी उसे समस्या ग्रस्त पर लिखनी है, परिवेश पर लिखनी हैं या व्यवस्था पर लिखनी है। इस प्रकार कहानीकार कहानी का उद्देश्य तय करता है।

प्रश्न 15 कहानी को किस प्रकार प्रामाणिक बनाया जाता है ?

उत्तर : कहानी को प्रमाणिक बनाने के लिए कहानीकार को समसामयिक समस्या, जानकारी व घटना का चयन करना होता है तथा चयनित घटना को रोचक बनाने के लिए घटना से संबंधित उपघटनाएँ, चरित्र व पात्र, परिवेश का विकास करना होता है।

CEO BHINDER VALABHNAGAR

जैसे 'बूढी काकी' कहानी में गाँव का परिवेश लेना होगा, बूढी औरत का किरदार होगा। इसमें कहानी अपनी प्रमाणिकता सिद्ध करती है।

कविता

प्र.1 निम्न मे ं से नई कविता की विशेषता हैं –

(अ) जीवन के प्रति आस्था

(ब) अनुभूति की सच्चाई

(स) लाके –सम्पृक्ति

(द) उपर्युक्त सभी (द)

प्र.2 सन् 1960 के बाद की कविता को किस नाम से जाना जाता हैं?

(अ) प्रगतिवादी

(ब) छायावादी

(स) प्रयोगवादी

(द) समकालीन कविता/साठोतरी कविता

प्र.3 नई कविता की आरम्भिक अवस्था को किस नाम से जाना जाता हैं?

(अ) प्रयोगवाद

(ब) छायावाद

(स) रीतिकाल

(द) कोई नही (अ)

प्र.4 नई कविता के प्रमुख कवि कौन हैं?

(अ) सच्चिदानन्द हिरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय

(ब) गिरिजा कुमार माथुर

(स) गजानन माधव मुक्ति बोध

(द) उपर्युक्त सभी (द)

प्र.5 नई कविता की प्रमुख विशेषता क्या हैं?

(अ) नई कविता में नवीनता

(ब) बौद्धिकता

(स) आधुनिक युग बोध

(द) उपर्युक्त सभी (द)

प्र.1 कविता किसे कहते हैं?

उत्तर कविता भावो या संवेदनाओ ं की भाषिक अभिव्यक्ति है जिससे शब्दो के साथ–साथ आंतरिक लय विद्यमान होती है।

CBEO BHINDER VALLABHNAGAR

प्र.2 कविता के प्रमुख तत्व लिखिए।

उत्तर 1. भाव या संवेदना 2. रस 3. छंद 4. भाषा 5. शब्द 6. बिंब 7. अलकं ार 8. कल्पना इसके प्रमुख तत्व है।

प्र.3 कविता का महत्व लिखिए।

उत्तर कविता का महत्व (1) अधिक असरदार एव ं प्रभावोत्पादक (2) अधिक समय तक याद रहने वाली
(3) मनोरंजक गीत, गज़ल, फिल्मी धुन, नज़्म, शेर आदि कविता के ही रूप है।
प्र.4 नई कविता का प्रारम्भ कब हुआ?
उत्तर नई कविता का प्रारम्भ 1953 मे ं हुआ।
प्र.5 नई कविता (पत्रिका) का प्रकाश किसके द्वारा हुआ?
उत्तर नई कविता पत्रिका का प्रकाशन :– धर्मवीर भारती, डॉ. रघुवशं, ब्रजेश्वर वर्मा विजयदेव नारायण साही के द्वारा हआु।

नाटक

प्र.1 नाटक का दुसरा अगं क्या हैं?

(अ) भाषा

(ब) शब्द

(स) व्याकरण

(द) मोखिक (ब)

प्र.2 नाटक का सबसे जरूरी और सशक्त माध्यम हैं?

(अ) संवाद

(ब) लखे ान

(स) सम्पादक

(द) उपर्युक्त मे ं से कोई नही (अ)

प्र.3 नाटक मे ं भाषा किस प्रकार की होनी चाहिए?

(अ) सहज

(ब) स्वाभाविक

(स) प्रसंग के अनुकूल

(द) उपर्युक्त (द)

प्र.4 नाटक की मलू विशेषता क्या हैं?

(अ) समय का बन्धन

(ब) समय का उपयोग

CBEO BHINDER VALLABHNAGAR

(स) समय का सदुपयोग

(द) उपर्युक्त मे ं से कोई नही (अ)

प्र.5 हिन्दी नाटको ं का आरम्भ किस युग से माना जाता हैं?

(अ) भारतेन्दु युग

(ब) तुलसीदास युग

(स) केशवदास युग

(द) जयशंकर प्रसाद युग (अ)

प्र.1 नाटक क्या हैं?

उत्तर जिस काव्य या कथा को अभिनय के साथ मंच पर देख व सुन सके ं और जिसे पढ़ा भी जा सकता है नाटक कहलाता है।

प्र.2 नाटक के प्रमुख तत्व कौन–कोनसे हैं?
उत्तर 1. अभिनय 2. कथानक 3. संवाद 4. अभिनेता 5. देशकाल वातावरण
6. पात्र का चरित्र चित्रण 7. उद्देश ्य
प्र.3 भौतिक नाटक की शुरूआत सर्वप्रथम किसने की थी?
उत्तर नाटक की शुरूआत सर्वप्रथम नहषु (गोपाल चन्द्र गिरिधरदास) है।
प्र.4 नाटक की शुरूआत किस सन् में हुई थी?
उत्तर नाटक की शुरूआत 1339 सन् में हुई थी।
प्र.5 नाटक और कहानी में अतंर लिखिए।
उत्तर

कहानी – कहानी को पाठक पढक़ र आनन्द लते ा है।	नाटक – नाटक अभिनय के द्वार प्रस्तुत हौता ह ै।
क्हानी का आकार छोटा होता है।	नाटक का आकार बड़ा होता है।

विशेष लेखन

प्र.1 विशेष लखेन की भाषा शेली कैसी होनी चाहिए?

(अ) सरल

(ब) संवादपूर्ण

(स) सहज

(द) भावपूर्ण (अ)

प्र.2 विशेष लखेन के क्षेत्र कौन–कौनसे हैं?

(अ) खेल

CBEO BHINDER VALLABHNAGAR

(ब) कारोबार

(स) पर्यावरण

(द) उपर्युक्त सभी (द)

प्र.3 विशेष लखेन के अन्तर्गत कोनसे लेखन आते हैं?

(अ) रिपोटिंग

(ब) फीचर

(स) टिप्पणी

(द) उपर्युक्त सभी (द)

प्र.4 विशेष लखेन हेतु सुचनाओ के प्रमुख स्त्रोत निम्न हैं?

(अ) मंत्रालय के सूत्र

(ब) प्रेस काफ्रेंस और विज्ञप्तियाँ

(स) साक्षात्कार

(द) उपर्युक्त सभी (द)

प्र.5 समाचार लेखन मे ं कितने ककार होते हैं?

(अ) 5

(ब) 6

(स) 7

(द) 8 (ब)

प्र.1 लेखन क्या हैं?

उत्तर लखेन का शाब्दिक अर्थ है– लिखना। भाषायी कोशल मुबोपलि का चोथा क्रम लिखना है। ''जो कुद भी हम बोलते है।

प्र.2 शुद्ध लेखन के कौन – कौन से तत्व है? उनके नाम लिखिए। शुद्ध लेखन के तत्व

(1) अक्षर की बनावट
(2) शिरो रेखाएं लगाना
(3) अक्षर लिखने की गति
(4) लिखने मे ं स्वच्छता
(4) लिखने मे ं स्पष्टता।

प्र.3 लेखन का महत्व लिखिए।

उत्तर (1) लखेन से बच्चो ं मे ं बोद्धिक विकास होता हैं। (2) लखेन से बच्चो ं के शब्द भण्डार मे ं वृद्धि होती हैं। (3) लखेन से बच्चो की भाषा में एकरूपता आती हैं। (4) लखेन से बच्चो ं की अक्षर बनावट मे ं सुधार होता है, जिससे बच्चे सुन्दर इस्तलिपि मे ं लिखना सीख जाते हैं।

प्र.4 लेखन की विशेषताएं लिखिए।

उत्तर (1) लखेन एक महत्वपूर्ण कोशल हो। (2) यह एक प्रक्रिया भी है और परिणाम भी हो। (3) साथ ही साथ यह विचार स्पष्टीकरण की प्राविधि भी है। (4) चार भाग कोशलो में इसे जटिल प्रक्रिया और उच्चतर स्तर की क्षमता कहा जा सकता हो।

प्र.5 लेखन के प्रकार कौन – कौनसे हैं?

CEO BHINDER VALLABHNAGAR

उत्तर (1) वर्णनात्मक लेखन
(2) विवरणात्मक लेखन
(3) न्यायिक लेखन (4) कथा लेखन

कहानी

प्र.1 हिन्दी कहानी का जन्म कब हुआ?

(अ) 1900

(ब) 1924

(स) 1920

(द) 1940 (अ)

प्र.2 हिन्दी कहानी का विकास किस युग मे ं हुआ?

(अ) वृन्दावन युग

(ब) द्विवेदी युग

(स) रामचन्द्र युग

(द) किशोरी युग (ब)

प्र.3 हिन्दी कहानी के विकास का प्रकाशन कौनसी पत्रिका मे ं हुआ?

(अ) सरस्वती पत्रिका

(ब) परमेश्वर पत्रिका

(स) ईश्वरीय पत्रिका

(द) दुर्गा पत्रिका (अ)

प्र.4 हिन्दी कहानी मे ं सरस्वती पत्रिका का सम्पादन किसने किया।

(अ) महावीर प्रसाद द्विवेदी

(ब) महादेवी वर्मा

(स) सुर्यकांत त्रिपाठी निराला

(द) जयशंकर प्रसाद (अ)

प्र.5 कहानी कहने या लिखने के लिए मनुष्य मे ं क्या मूल भाव होता है?

(अ) प्रत्येक मनुष्य मे ं अपने अनुभव बांटने

(ब) दुसरे के अनुभवो ं को जानने की प्राकृतिक इच्छा

(स) हम सब अपनी बाते ं किसी को सुनाना

CBEO BHINDER VALLABHNAGAR

(द) उपर्युक्त सभी (द)

प्र.1 कहानी की परिभाषा लिखिए?

उत्तर कहानी वह साहित्यक गध विधा है जिसमे ं जीवन के किसी एक पक्ष का मिश्रित मार्मिक एवं रोचक चित्रण हातेा ह ै।

प्र.2 कहानी का अर्थ बताइए। उत्तर कहानी का शाब्दिक अर्थ ''कथा'' होता ह ै। इसे हिन्दी में ''लघु कथा'' कहा जाता है और अंग्रेजी मे ं शॉर्ट स्टोरी कहा जाता है।

प्र.3 कहानी के तत्व लिखिए? उत्तर कहानी के निम्न तत्व –

(1) कथावस्तु (2) पात्र एवं चरित्र चित्रण (3) कथोपकथन (4) भाषा शैली (5) देशकाल वातावरण (6) उद्देश्य

प्र.4 प्रथम कहानी लेखिका कौन थी?

उत्तर लेखिका – बंग महिला (राजेन्द्र वाला घोष) थी।

प्र.5 कहानी के गुण बताइए।

उत्तर गुण :– 1. वास्तविका भरपूर हो।

2- वार्तालाप और संवाद दोनो सही हो।

3- सरल वाक्य और सरल शब्द हो।

4- चरित्र निर्माण मे ं सहायक हो।

CBEO BHINDER VALLABHNAGAR

स्वच्छ भारत : स्वस्थ भारत

अथवा

स्वच्छ भारत अभियान

प्रस्तावना

भारत देश किसी जमाने में सोने की चिड़िया कहा जाता था अपने वैभव और संस्कृति के लिए जाना जाता था। लेकिन समय के बदलाव के चलते हमारे देश पर कई बाहरी ताकतों ने राज कियाए जिससे हमारी देश की हालत खराब हो गई।

हमारे देश में स्वच्छता पर बिल्कुल भी ध्यान नहीं दिया जाता है। आपने देखा होगा कि हमारे देश का कोई भी बड़ा राज्य हो या शहर हो या फिर गांव हो या फिर कोई गली या मोहल्ला हो वहां पर भी आपको कूड़ा करकट मिलेगा।

हमारे देश के विकास में बाधा पहुंचाने वाली समस्याओं में एक मुख्य कारण गंदगी है क्योंकि इसके कारण लोग हमारे देश में आना पसंद नहीं करते हैं और जिससे हमारे देश को इतनी ख्याति नहीं मिलती है। हमारा देश भी पूर्णतया स्वच्छ होए इसके लिए कई महापुरुषों ने सपने देखे थे और उन्हें साकार करने की भी कोशिश की थी लेकिन वह किसी कारण सफल नहीं हो पाए।

आज भी हमारे देश के कुछ ही घरों में शौचालय की सुविधा हैए गाँवो में तो लोग आज भी शौच करने बाहर ही जाते हैंए जिसके कारण गाँवो में गंदगी फैल जाती है और शहरों की बात करें तो शहरों में शौचालय तो है लेकिन वहां पर अन्य गंदगी बहुत ज्यादा हैए जैसे कि फैक्ट्रियों का अपशिष्ट कूड़ा.करकटए गंदे नाले और घरेलू अपशिष्ट जो सड़कों पर इतनी ज्यादा मात्रा में पाया जाता है कि हमारे देश की सड़कें दिखाई ही नहीं देती सिर्फ और सिर्फ कूड़ा.करकट दिखाई देता है।

स्वच्छ भारत अभियान का परिचय

हमारे देश को स्वच्छ बनाने के लिए भारत सरकार ने एक नई योजना निकाली हैए जिसका नाम ष्स्वच्छ भारत अभियानष रखा गया है। इस अभियान के तहत सभी देशवासियों को इसमें शामिल होने के लिए कहा गया है। यह अभियान आधिकारिक रूप से 1999 से चला रहा है पहले इसका नाम ग्रामीण स्वच्छता अभियान थाए लेकिन 1 अप्रैल 2012 को प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने इस योजना में बदलाव करते हुए इस योजना का नाम निर्मल भारत अभियान रख दिया और बाद में सरकार ने इसका पुनर्गठन करते हुए इसका नाम पूर्ण स्वच्छता अभियान कर दिया था। स्वच्छ भारत अभियान के रूप में 24 सितंबर 2014 को केंद्रीय मंत्रिमंडल से इस को मंजूरी मिल गई।

स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत

स्वच्छ भारत अभियान का उद्घाटन माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने महात्मा गाँधी जी की 145 वीं जयंती के अवसर पर 2 अक्टूबर 2014 को किया। उन्होंने राजपथ पर जनसमूहों को संबोधित करते हुए राष्ट्रवादियों से स्वच्छ भारत अभियान में भाग लेने और इसे सफल बनाने को कहा। साफ.सफाई के संदर्भ में यह सबसे बड़ा अभियान है। क्योंकि गाँधी जी का सपना था कि हमारा देश भी विदेशों की तरह पूर्ण स्वस्थ और निर्मल दिखाई दे। इस बात को मध्य नजर रखते हुए प्रधानमंत्री जी ने उन्हीं के जन्मदिवस पर इस अभियान की शुरुआत दिल्ली के राजघाट से की थी।

देश की सफाई एकमात्र सफाई.कर्मियों की जिम्मेदारी नहीं है।

क्या इस में नागरिकों की कोई भूमिका नहीं है।हमें इस मानसिकता को बदलना होगा।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने लोगों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए दिल्ली कि वाल्मीकि बस्ती में सड़कों पर झाड़ू लगाई थी। जिससे देश के लोगों में यह जागरुकता आए कि अगर हमारे देश का प्रधानमंत्री देश को स्वच्छ करने के लिए सड़क पर झाड़ू लगा सकता हैए तो हमें भी अपने देश को स्वच्छ रखने के लिए अपने आसपास सफाई रखनी होगी।

स्वच्छ भारत अभियान का कारण या इसकी आवश्यकता

अपने उद्देश्य की प्राप्ति तक भारत में इस मिशन की कार्यवाही निरंतर चलती रहनी चाहिए। भौतिकए मानसिकए सामाजिक और बौद्धिक कल्याण के लिये भारत के लोगों में इसका एहसास होना बेहद आवश्यक है। ये सही मायनों में भारत की सामाजिक और आर्थिक स्थिति को बढ़ावा देने के लिये है जो हर तरफ स्वच्छता लाने से शुरु किया जा सकता है। यहाँ कुछ बिंदु दिए जा रहे हैं जो स्वच्छ भारत अभियान की आवश्यकता को दिखाते हैं–

CEO BHINDER VALLABHNAGAR

1हमारे देश में कोई भी ऐसी जगह नहीं है जहां पर कूड़ा करकट नहीं फैला हो। हमारे भारत देश के हर शहरए हर गांव हर एक मोहल्लाए हर एक गली कूड़े.करकट और गंदगी से भरी पड़ी है।

2 हमारे देश के गाँवो में शौचालय नहीं होने के कारण के लोग आज भी खुले में शौच करने जाते हैं जिसके कारण हर जगह गंदगी फैलती है और यह गंदगी नई बीमारियों को आमंत्रण देती है।

3हमारे आसपास के सभी नदी.नाले भी कचरे से इस तरह से रहते हैं जैसे कि पानी की जगह कचरा बह रहा हो।

4 इस कूड़ा करकट और गंदगी के कारण विदेश से लोग हमारे देश में आना कम ही पसंद करते हैंए जिसके कारण हमारे देश को आर्थिक नुकसान होता है।

5इस कचरे के कारण हमारे साथ.साथ अन्य जीव जंतुओं को भी नुकसान होता है और साथ ही हमारी पृथ्वी भी

प्रदूषित होती है।

6ये बेहद जरुरी है कि भारत के हर घर में शौचालय हो साथ ही खुले में शौच की प्रवृति को भी खत्म करने की आवश्यकता है।

7नगर निगम के कचरे का पुनर्चक्रण और दुबारा इस्तेमालए सुरक्षित समापनए वैज्ञानिक तरीके से मल प्रबंधन को लागू करना।

8 ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों में वैश्विक जागरुकता का निर्माण करने के लिये और सामान्य लोगों को स्वास्थ्य से जोड़ने के लिये।

9पूरे भारत में साफ.सफाई की सुविधा को विकसित करने के लिये निजी क्षेत्रों की हिस्सेदारी बढ़ाना।

10 भारत को स्वच्छ और हरियाली युक्त बनाना।

11 ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाना।

12 स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रमों के माध्यम से समुदायों और पंचायती राज संस्थानों को निरंतर साफ.सफाई के प्रति जागरुक करना।

इस गंदगी और कूड़े.करकट के जिम्मेदार भी हम और आप ही हैंए क्योंकि हम लोग भी कभी जानबूझकर और कभी अनजाने में कहीं भी कचरा फेंक देते हैं। जिसके कारण हमारे देश में हर तरफ कचरा फैल जाता है और इसके साथ ही हमारा पूरा वातावरण प्रदूषित हो जाता है। यह गंदगी और कूड़ा.करकट दिन.ब.दिन बढ़ते ही जा रहे है। जिसके कारण अनेकों परेशानियां खड़ी हो रही हैंए इसलिए स्वच्छ भारत अभियान की जरूरत पड़ी जिसके तहत हमारा पूरा भारत स्वच्छ और साफ दिखाई दें।

देश को स्वच्छ रखने के उपाय

हमारे भारत देश को स्वच्छ और साफ सुथरा रखने के लिए हमें आज ही अपने से शुरुआत करनी होगी क्योंकि जब तक लोग खुद जागरुक नहीं होंगे तब तक हमारे देश में साफ सफाई का होना नामुमकिन है।

;1हमें देश के हर घर में शौचालय बनवाने होंगे।

;2हर शहर हर गांव की सार्वजनिक स्थलों पर सार्वजनिक शौचालय बनवाने होंगे।

;3 लोगों में साफ सफाई और स्वच्छता के प्रति जागरूकता फैलानी होगी।

;4हमें जगह.जगह कचरा पात्रों का निर्माण करना होगा।

;5शिक्षा के प्रचार.प्रसार को बढ़ावा देना होगा।

;6 लोगों की मानसिकता बदलने के लिए साफ सफाई के संदेश गांव.गांव तक पहुंचाना होगा।

CEO BHINDER VALLABHNAGAR

;7लोगों को गंदगी के गंभीर परिणामों के बारे में बताना होगाए जिससे की उनको पता चले कि उनके गंदगी फैलाने से उनके साथ.साथ पूरे वातावरण को कितना नुकसान होता है।

;8हमें बढ़ती हुई जनसंख्या को कम करना होगा।

;9 हमें कचरे के निस्तारण की सही विधि का पता लगाकर उस को अमल में लाना होगा जैसे कि पहाड़ जैसे कचरे के ढेरों को हटाया जा सके।

;10 हमें उद्योग धंधे चलाने वाले लोगों में जागरूकता फैलाने होगी कि उनके छोटे से स्वार्थ के कारण हमारा पूरा वातावरण कितना प्रदूषित हो रहा है।

;11 हमें नए कानूनों का निर्माण करना होगाए जिससे कि लोग कहीं भी गंदगी ना फैलाएं।

उपसंहार–

जो परिवर्तन आप दुनिया में देखना चाहते हैंए वह सबसे पहले अपने आप में लागू करें–महात्मा गाँधी

महात्मा गाँधी द्वारा कहे गए यह कथन जोकि स्वच्छता पर ही आधारित है। उनके अनुसार स्वच्छता की जागरूकता की मशाल सभी में पैदा होने चाहिए। इसके तहत स्कूलों में भी स्वच्छ भारत अभियान के कार्य होने लगे हैं। स्वच्छता से ना केवल हमारा तन साफ रहता है बल्कि हमारा मन भी साफ़ रहता है।

हमारे भारत में ृ जहां स्वच्छता होती हैए वहां पर ईश्वर निवास करते हैंए इस प्रथा को माना जाता हैए इसलिए हमें भी स्वच्छता को अपनाना चाहिए। इसकी शुरुआत हमें और आपको मिलकर करनी होगी। जिससे कि हमारा पूरा देश साफ सुथरा हो जाए। स्वच्छ भारत अभियान भारत को स्वच्छ करने के लिए एक कड़ी का काम कर रहा है। लोग इसके उद्देश्य से उत्साहित होकर स्वच्छता के प्रति सचेत हो रहे हैं। यह भारत सरकार द्वारा उठाया गया एक सराहनीय कदम है।

स्वच्छ भारत अभियान में आप भी भागीदार बनें। लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरुक बनाएँ। इसी को मध्य रखते हुए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भी सरकारी भवनों की सफाई और स्वच्छता को ध्यान में रखकर तंबाकू गुटका पान आदि उत्पादों पर प्रतिबंध लगा दिया है। जिसकी जरूरत उत्तर प्रदेश में ही नहीं बल्कि पूरे भारत देश में आवश्यक है। जिससे स्वच्छ रहे भारत स्वस्थ रहे हम।

स्वच्छ भारत अभियान से हमारा आने वाला कल बहुत ही सुंदर एवं अकल्पनीय होगा। अगर आप और हम मिलकर स्वच्छ भारत अभियान के लक्ष्य को पूरा करने में लग जाए तो वह दिन दूर नहीं जब हमारा पूरा देशए विदेशों की तरह पूरी तरह से साफ सुथरा दिखाई देगा। एक स्वस्थ्य देश और स्वस्थ्य समाज को जरुरत है कि उसके नागरिक स्वस्थ्य रहें तथा हर व्यवसाय में स्वच्छ हो। और इस नेक काम के लिए हम सब को मिल कर आगे आना होगा और साथ.साथ काम कर के इस मिशन को पूरा करना होगा।

CEO BHINDER VALLABHNAGAR

डिजिटल इंडिया

प्रस्तावना–डिजिटल भारत प्रोग्राम भारत को समृध्द करने की दिशा में भारत सरकार की नई पहल है। इसका प्रमुख उद्देश्य देश को विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नये कीर्तिमान गढ़ना है। इसके द्वारा देश को डिजिटली रुप से

सशक्त करना एकमेव लक्ष्य है। वर्तमान युग में आज वही देश आगे है जिसने विज्ञान और तकनीकी को अपने देश की तरक्की का माध्यम बना लिया है। भारत सरकार द्वारा डिजिटल इंडिया अभियान नाम से शुरू किया गया। यह अभियान इंटरनेट के माध्यम से देश में क्रांति लाना हैए साथ ही इंटरनेट को सशक्त करके भारत के तकनीकी पक्ष को मजबूत करना है। यह अभियान भारत सरकार द्वारा डिजिटल इंडिया अभियान नाम से शुरू किया गया है।

डिजिटल भारत की शुरुआत

एक कार्यक्रम दिल्ली के इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम में टाटा ग्रुप के चेयरमैन साइरस मिस्त्री आरआईएल के चेयरमैन और प्रबंध निदेशक मुकेश अंबानी विप्रो के चेयरमैन अजीम प्रेमजी आदि जैसे दिग्गज उद्योगपतियों की उपस्थिति में जुलाई 2015 को डिजिटल इंडिया अभियान के नाम से शुरू किया गया।

देश को डिजिटल रूप से विकसित करने और देश के आईटी संस्थान में सुधार करने के लिए डिजिटल इंडिया महत्वपूर्ण पहल है। डिजिटल इंडिया अभियान की विभिन्न योजनाओं जैसे डिजिटल लॉकर राष्ट्रीय छात्रवृत्ति पोर्टल ई.स्वास्थ्य ई. शिक्षा ई.साइन आदि को शुरु करके इस कार्यक्रम का अनावरण किया गया है।

2015 में भारत सरकार द्वारा आयोजित एक विशाल संकलन जिसे डिजिटल इंडिया के रूप में जाना जाता है इसने देश के विभिन्न क्षेत्रों में सरकारी सेवाओं तक आसानी से पहुंचने के लिए लागू किया। देश भर में लोग इस कार्यक्रम के तहत प्रौद्योगिकी पहुंच में सुधार करते हैं। डिजिटल इंडिया का उद्देश्य देश को डिजिटल.सक्षम समाज में परिवर्तित करना है। यह सुनिश्चित करता है कि सरकारी सुविधाएं इलेक्ट्रॉनिक रूप से निवासियों को उपलब्ध हों।

उपसंहार

1 जुलाई 2015 को शुरू किया गया।यह ग्रामीण लोगों को हाई स्पीड इंटरनेट नेटवर्क से जोड़ने के लिए आवश्यक देशव्यापि कार्यक्रम है। डिजिटल इंडिया का समाज के हर हिस्से के लोगों पर गहरा प्रभाव पड़ा है। इसका समाज की प्रगति और व्यक्तिगत जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इस कार्यक्रम के तहत देश भर में 28000 बीपीओ नौकरियों के सृजन का अवसर है। इसने प्रत्येक ग्राम पंचायत में एक कॉमन सर्विस सेंटर की भी व्यवस्था की है।

CBEO BHINDER VALLABHNAGAR

कन्या भ्रूण हत्या एक अभिशाप

अथवा बेटी बचाओ बेटी पढ़ओ

प्रस्तावना–**भारतीय संस्कृति दुनिया के सबसे प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। हमारी पवित्र संस्कृति में स्त्रियों को देवी का दर्जा दिया गया है।**

यही नहीं मां सरस्वती लक्ष्मी माता सीता मां काली आदि जैसे **ईश्वर के** अनेकों रूप एक नारी के रूप में हमेशा से ही पूजनीय है।

लेकिन आज के समय में परिस्थितियां पूरी तरह बदल गई हैं। समय बीतने के साथ ही लोगों के विचार धाराओं में भी परिवर्तन आयाए लेकिन यह परिवर्तन नकारात्मक है। हमारी पवित्र संस्कृति पर कलंक लगाने वाले लोगों की ऐसी विचारधारा हमेशा से ही समाज के विकास में बाधा डालती आई है।

आधुनिक समय में लोग लड़की और लड़के में इस हद तक भेदभाव करने पर उतर आते हैं कि वे **मानवता** की सारी हदें पार कर देते हैं।

कन्या भ्रूण हत्या क्या है– अल्ट्रासाउंड स्कैन जैसे उपकरणों का सहारा लेकर लिंग परीक्षण करने के पश्चात जब मां के गर्भ में कन्या शिशु के होने की पुष्टि कर ली जाती हैए तो कन्या भ्रूण को ही समाप्त कर दिया जाता है। इस अमानवीय प्रक्रिया को कन्या भ्रूण हत्या कहते है।

इतने विकसित समय में भी लोग अपनी पिछड़ी और शर्मसार कर देने वाली विचारधारा का प्रदर्शन करने से बाज नहीं आते हैं। यह हमारे समाज के लिए एक कलंक स्वरूप है कि आज भी हमारे समाज में केवल और केवल पुरुष सत्तात्मक विचारधारा को ही बढ़ावा दिया जाता है।

कन्या भ्रूण हत्या करवाने में सबसे अहम दोष **माता.पिता** का होता है। हमारे समाज में आज भी लोग केवल बालक शिशु की ही चाहत रखते हैं और कन्या को एक बोझ समझते है इसीलिए उसे जन्म के पहले ही मार डालते हैं।

कन्या भ्रूण हत्या के कारण .

हमारे समाज में जब बेटी पैदा होती हैए तो उसके **पढ़ाई लिखाई** और भविष्य निर्माण के बारे में सोचने से पहले माता पिता को उसके विवाह और दहेज की चिंता सताने लगती है।कन्या भ्रूण हत्या करने के बाद भी लोगों को अपनी गलती का एहसास नहीं होता और वे पूरी बेशर्मी से ऐसा करने का कारण भी बताते हैं।

दहेज प्रथा हमारे समाज में एक ऐसा दानव है जो दिन.ब.दिन अपना विस्तार बढ़ाए जा रहा है और हर रोज कई नवविवाहित स्त्रियों को अपनी चपेट में ले रहा है।

स्त्री कोई खरीदने और बेचने वाली वस्तु नहीं होती जिसे दहेज के बदले में लिया और दिया जा सके। दहेज के कारण न जाने कितने ही ऐसे मामले देखे जाते हैंए जिसमें बहुत क्रूरता से ससुराल वालों की तरफ से नववधुओं को पैसों के लिए ताड़ना दी जाती है और कभी.कभी तो मौत के घाट उतार दिया जाता है।

हमारे समाज में ऐसे भी लोग रहते हैं जो सामाजिक असुरक्षा अथवा महिलाओं के साथ घट रहे अत्याचारों और अपराधों के कारण कन्या शिशु को जन्म नहीं देना चाहते हैं।

रूढ़िवादी विचारधारा से प्रभावित लोग कभी भी घर में बेटी के जन्म **होने पर खुशियां** नहीं मनाते हैं बल्कि वे इसे एक अभिशाप की तरह देखते हैं।

मानव ने विज्ञान की सहायता से आज कई नई नई खोजें की है। यह कहना गलत नहीं होगा कि विज्ञान हमारे सुख सुविधाओं के लिए एक वरदान स्वरुप है। लेकिन जीवन बचाने वाले **आधुनिक तकनीको** का दुरुपयोग हमें ही नुकसान पहुंचाते हैं।

आज के समय में कई ऐसे अत्याधुनिक उपकरण खोजे जा चुके हैं जिनकी सहायता से लिंग परीक्षण किया जाता है। लेकिन पहले के समय में तो ऐसा कोई उपकरण नहीं था। यह आश्चर्य की बात हैए कि कन्या भ्रूण हत्या की शुरुआत बहुत पहले से ही हो गई थी।गर्भपात की जगह पहले भ्रूण हत्या के लिए दूध पीती प्रथा प्रचलित थी जिसमें छोटी बच्चियों को एक बड़े से पात्र में रखकर उन्हें दूध में डुबो दिया जाता था। कुछ मिनटों में ही सांस न

CEO BHINDER VALABHNAGAR

लेने के कारण उनकी मृत्यु हो जाती थी। आज भी हमारे आसपास ऐसे लोग मौजूद हैं जो ऐसे वीभत्स अपराध को बढ़ावा देते हैं।

कन्या भ्रूण हत्या के प्रभाव .

कन्या भ्रूण हत्या रुकने के बजाय हर साल बढ़ती ही जा रही है। समाज पर इसका बहुत विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। भारत में लिंग अनुपात बिगड़ने का सबसे मुख्य कारण कन्या भ्रूण हत्या ही है।

1901 के जनगणना के अनुसारए हमारे देश में प्रति एक हजार पुरुषों पर केवल 972 स्त्रियों की संख्या हैए जो अनुपात में बेहद कम है।

यदि 2001 के बात करें तोए जनगणना के पश्चात आंकड़ों के आधार पर प्रति 1000 पुरुषों पर केवल 933 स्त्रियों की संख्या है। इस कलंकित परंपरा के वाहक केवल **अशिक्षित लोग** ही नहीं बल्कि उच्च और शिक्षित समाज भी शामिल है।

देश के समृद्ध राज्यों में भी कन्या भ्रूण हत्या के मामले बढ़ते ही जा रहे हैं। यदि समय रहते हुए इस अमानवीय अपराध पर तंज नहीं कसा गयाए तो यह हमारी संस्कृति पर एक दाग लगा देगी जिसे मिटा पाना बहुत मुश्किल होगा।

यदि दुनिया के दूसरे देशों से तुलना की जाए तो वहां **महिलाएं** अधिक कामयाब होती हैं। क्योंकि वहां लोगों की मानसिकता विकसित है और वे लड़की और लड़कों में भेदभाव नहीं करते हैंए और ना ही कन्या भ्रूण हत्या जैसे अपराधों को बढ़ावा देते हैं।

कन्या भ्रूण हत्या को रोकने के उपाय .

समाज के रूढ़िवादी कुरीतियां आज के समय में लोगों के दिमाग में इस तरह घर कर गई हैं उन्हें जड़ से खत्म कर पाना थोड़ा मुश्किल है। किसी भी दुराचारी प्रथा को नष्ट करने के लिए सबसे पहले हमें पहल करना आवश्यक है।

कहने को तो कन्या भ्रूण हत्या पर सरकार ने प्रतिबंध लगाया है लेकिन यह हम सभी जानते हैं कि आज भी लोग किस प्रकार खुलेआम ऐसे अमानवीय कृत्य करते हैं।

इस पर रोक लगाने के लिए सबसे पहले डॉक्टर्स को आगे आना होगा। यदि वे गर्भ में पल रहे शिशु का लिंग परीक्षण करने से इंकार कर दे तो बहुत हद तक कन्या भ्रूण हत्या पर रोक लगाया जा सकता है।

निष्कर्ष .

समाज में कन्या भ्रूण हत्या को रोकने के लिए सबसे पहले हमें अपने अपने अंदर बदलाव करने होंगे। क्योंकि हर बड़े काम की शुरुआत एक पहल से होती है।

कोरोना वायरस.एक वैश्विक महामारी

प्रस्तावना–विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा कोरोनावायरस को महामारी घोषित किया गया है। इस वायरस ने पिछले साल पूरी दुनिया को अपने चपेट में ले लिया था और अब तक करोड़ों लोगों की जान ले चुका है। यह बीमारी सबसे पहले 2019 में चीन में देखी गई थी। इसके बाद यह संक्रमण धीरे.धीरे पूरी दुनिया में फैल गया। इससे ना केवल लोगों की जान गईए साथ ही कई लोगों की आर्थिक स्थिति को भी बहुत नुकसान पहुंचा। ऐसे में कोरोना की दूसरी लहरके चलते इस

CBEO BHINDER VALLABHNAGAR

वायरस का संक्रमण 2021 में और भी बढ़ गया है और साथ ही कोरोना के लक्षण भी बदल गए हैं। वायरस के संक्रमण फैलने से रोकने के लिए सभी देश में कई सारे नियम लागू किए हैं जिसके मद्देनजर लॉकडाउन लगाया गया और भीड़ भाड़ करने की इजाजत नहीं दी गई। इसके अलावा लोगों को स्वच्छता और सामाजिक दूरी का महत्व सिखाया गया और इम्यूनिटी मजबूत करने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

क्या है कोरोना वायरस के लक्षण–पिछले साल के अनुसार कोरोना वायरस की आम लक्षणों में खांसी सर्दीजैसे लक्षण शामिल है। इसके अलावा कई लोगों में पेट के संक्रमण भी देखे गए। हालांकि कई नए लक्षण देखे गए जिसमें सिर दर्द आंखों का लाल होना आंखों में सूजन दस्त त्वचा पर संक्रमण शरीर में दर्द आदि देखा गया।

कोरोना वायरस से कैसे बचें–कोरोनावायरस के संक्रमण से बचने के लिए सरकार द्वारा लागू किए गए नियमों का सख्ती से पालन करना और खुद भी स्वच्छता बनाए रखना बहुत जरूरी है।

नीचे दिए गए चीजों को ध्यान में रखें और खुद को संक्रमण से बचाएं–

मास्क पहनना । कोरोना संक्रमित क्षेत्रों से बचना। सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करना। किसी भी अनजान वस्तु को हाथ ना लगाना। हाथों को साबुन या हैंडवाश से साफ रखना। सैनिटाइजर का उपयोग करना। जितना हो सके घर में रहना। बाहर का खाना खाने से बचना। पौष्टिक आहार खाना। घर में अगर किसी को फांसी या बुखार है तो उनसे दूरी बनाए रखना। खांसते या छीकते समय मुंह पर रुमाल या टिशू पेपर रखना।

इन सारी बातों का ध्यान रखने से कोरोना वायरस के संक्रमण से बचा जा सकता है। इसके अलावा अगर आप कोरोनावायरस के लक्षण देखते हैं तो अपना टेस्ट जरूर करवाएं और डॉक्टर के निर्देशों के मुताबिक घर पर सावधानी बरतें।

उपसंहार–कोरोना एक भयंकर महामारी है जिसका सामना सिर्फ सावधानी के साथ ही किया जा सकता है अतः हमें सावधानी के साथ सामाजिक दुरी का पालन एवं अपनी रोग प्रतिरोधकता मजबुत करके ही इससे जीता जा सकता है।

CBEO BHINDER VALLABHNAGAR

मेक इन इंडिया पर निबंध

प्रस्तावना

मेक इन इंडिया यह भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा दिया नारा है।जो अपने आप में एक योजना को समेटे हुए है । इसका तात्पर्य है आवश्यकतानुरुप उत्तम से उत्तम वस्तुओं का निर्माण भारत में ही हो । जिसका लाभ हर दृष्टिकोण से और वास्तव में देशवासियों को ही मिले।

उद्देश्य

मोदी जी का यह आइडिया जो अब एक स्कीम का रूप ले रहा है इसका प्रमुख उद्देश्य भारत में रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाना है और कौशल क्षमता को विकसित करने से है । कौशल क्षमता विकसित होने के साथ अर्थव्यवस्था के लगभग 25 क्षेत्रों पर ध्यान केन्द्रित करना है जिनमें से प्रमुख है. ऑटोमोबाइल रसायन आईटी बंदरगाह विमानन चमड़ा पर्यटन और आतिथ्य . कल्याण रेल्वे डिजाइन अक्षय ऊर्जा खनन जैव प्रौद्योगिकी और इलेक्ट्रॉनिक्स । इन 25 क्षेत्रों में से अंतरिक्ष रक्षा समाचार . मीडिया : को छोड़कर शेष सभी क्षेत्रों में निवेश की अनुमति दी गई है । इस कार्यक्रम से देश की विकास दर और राजस्व कर में वृद्धि की उम्मीद है ।

योजना से लाभ

इस योजना का सबसे बड़ा फायदा तो यह होगा कि देश में बनी वस्तु की कीमत कम होगी और उत्पादित वस्तु का निर्यात कर राजकीय कोष में वृद्धि होगी ।

इस स्कीम के लिए 930 करोड़ रुपए का प्रावधान दिया गया है । सरकार योजना के लिए 581 करोड़ रुपए देगी । पूरी योजना पर 20000 करोड़ रुपए का खर्च हो सकता है ऐसा अनुमान है ।

योजना को सफल बनाने में चुनौती

इस योजना को सफल बनाने में जिन चुनौतियों का सामना करना है वह प्रमुख रूप से इस प्रकार है।

- औद्योगिक संस्थान व सरकार के मध्य टूटते विश्वास को कायम रखना।
- विकास के लिए सही जमीन व वातावरण बनानाइसमें यह ध्यान रखना होगा कि किसानों की जमीन न हड़पी जाए ।

इन प्रमुख चुनौतियों को ध्यान में रखते आगे बढ़े तो निसंदेह सफलता हाथ लगेगी । माना कि चीन के जैसे हमारे पास बहुत अधिक निर्माण की सुविधाएँ उपलब्ध नहीं है लेकिन उससे भी महत्वपूर्ण है कि क्या विश्व दूसरे चीन के लिए तैयार है यदि हाँ तो शायद वह दूसरा चीन भारत ही है ।

उपसंहार –

हमारे आर्थिक विकास की दर के लिए यह बहुत ही महत्वाकांक्षी परियोजना है । यदि इसके महत्व और दूरगामी परिणामों को देखें और एक ईमानदार कोशिश करें तो निश्चित ही हम इस योजना के द्वारा भारत को विश्व का ए निर्माण के क्षेत्र में एक शक्ति केन्द्र बना सकने में सक्षम होंगे ।

CBEO BHINDER VALLABHNAGAR

अपठित काव्यांश

अपठित काव्यांश वे काव्यांश हैं जिनका अध्ययन हिंदी की पाठ्यपुस्तक में नहीं किया गया है। इन काव्यांशों के अध्ययन का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों की भावग्रहण क्षमता को विकसित करना है।

अपठित काव्यांश हल करने की विधि

सर्वप्रथम काव्यांश का दो–तीन बार अध्ययन करें ताकि उसका अर्थ व भाव समझ में आ सके।
तत्पश्चात् काव्यांश से संबंधित प्रश्नों को ध्यान से पढ़िए।
प्रश्नों के पढ़ने के बाद काव्यांश का पुनः अध्ययन कीजिए ताकि प्रश्नों के उत्तर से संबंधित पंक्तियाँ पहचानी जा सकें।
प्रश्नों के उत्तर काव्यांश के आधार पर ही दीजिए।
प्रश्नों के उत्तर स्पष्ट होने चाहिए।
उत्तरों की भाषा सहज व सरल होनी चाहिए।
गत वर्षों के पूछे गए प्रश्न

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. शांति नहीं तब तक, जब तक
सुख–भाग न सबका सम हो।
नही किसी को बहुत अधिक हो
नही किसी को कम हो।
स्वत्व माँगने से न मिले,
संघात पाप हो जाएँ।
बोलो धर्मराज, शोषित वे
जिए या कि मिट जाएँ?
न्यायोचित अधिकार माँगने
से न मिले, तो लड़ के
तेजस्वी छीनते समय को,
जीत, या कि खुद मर के।
किसने कहा पाप है? अनुचित
स्वत्व–प्राप्ति–हित लड़ना?
उठा न्याय का खड्ग समर में
अभय मारना–मरना?

प्रश्नः
(क) कवि के अनुसार शांति के लिए क्या आवश्यक शर्त है?
(ख) तेजस्वी किस प्रकार समय को छीन लेते हैं ?
(ग) न्यायोचित अधिकार के लिए मनुष्य को क्या करना चाहिए?
(घ) कृष्ण युधिष्ठिर को युद्ध के लिए क्यों प्रेरित कर रहे हैं ?

उत्तरः
(क) कवि के अनुसार, शांति के लिए आवश्यक है कि संसार में संसाधनों का वितरण समान हो।
(ख) अपने अनुकूल समय को तेजस्वी जीतकर छीन लेते हैं।
(ग) न्यायोचित अधिकार के लिए मनुष्य को संघर्ष करना पड़ता है। अपना हक माँगना पाप नहीं है।
(घ) कृष्ण युधिष्ठिर को युद्ध के लिए इसलिए प्रेरित कर रहे हैं ताकि वे अपने हक को पा सकें, अपने प्रति अन्याय को खत्म कर सकें।

2. नीड़ का निर्माण फिर–फिर
नेह का आह्वान फिर–फिर
वह उठी आँधी कि नभ में
छा गया सहसा अँधेरा
धूलि–धूसर बादलों ने
भूमि को इस भाँति घेरा,
श्रात–सा दिन हो गया फिर
श्रात आई और काली,
ल्ग रहा था अब न होगा,
ठस निशा का फिर सवेरा,
श्रात के उत्पात–भय से
भीत जन–जन, भीत कण–कण
किन्तु प्राची से उषा की
मेहिनी मुसकान फिर–फिर
नीड़ का निर्माण फिर–फिर
नेह का आह्वान फिर–फिर

CBSE BHINDER VALLABHNAGAR

प्रश्नः
(क) आँधी तथा बादल किसके प्रतीक हैं ? इनके क्या परिणाम होते हैं ?
(ख) कवि निर्माण का आह्वान क्यों करता है?
(ग) कवि किस बात से भयभीत है और क्यों?
(घ) उषा की मुसकान मानव–मन का क्या प्रेरणा देती है?
उत्तरः
(क) आँधी और बादल विपदाओं के प्रतीक हैं। जब विपदाएँ आती हैं तो उससे जनजीवन अस्तव्यस्त हो जाता है। मानव मन का उत्साह नष्ट हो जाता है।
(ख) कवि निर्माण का आह्वान इसलिए करता है ताकि सृष्टि का चक्र चलता रहे। निर्माण ही जीवन की गति है।
(ग) विपदाओं के कारण चारों तरफ निराशा का माहौल था। कवि को लगता था कि निराशा के कारण निर्माण कार्य रुक जाएगा।
(घ) उषा की मुसकान मानव में कार्य करने की इच्छा जगाती है। वह मानव को निराशा के अंधकार से बाहर निकालती है।

3. यह लघु सरिता का बहता जल
कितना शीतल, कितना निर्मल
हिमगिरि के हिम से निकल–निकल,
यह विमल दूध–सा हिम का जल,
कर–कर निनाद कल–कल, छल–छल,
तन का चंचल मन का विह्वल
यह लघु सरिता का बहता जल।
ऊँचे शिखरों से उतर–उतर
गिर–गिर, गिरि की चट्टानों पर,
कंकड़–कंकड़ पैदल चलकर
दिनभर, रजनी–भर, जीवन–भर
धोता वसुधा का अंतस्तल
यह लघु सरिता का बहता जल।
हिम के पत्थर वो पिघल–पिघल,
बन गए धरा का वारि विमल,
सुख पाता जिससे पथिक विकल
पी–पी कर अंजलि भर मृदुजल
नित जलकर भी कितना शीतल
यह लघु सरिता का बहता जल।
कितना कोमल कितना वत्सल
श्री जननी का वह अंतस्तल,
जिसका यह शीतल करुणाजल
बहता रहता युग–युग अविरल
गंगा, यमुना, सरयू निर्मल
यह लघु सरिता का बहता जल।
प्रश्न
(क) वसुधा का अंतस्तल धोने में जल को क्या–क्या करना पडता है?
(ख) जल की तुलना दूध से क्यों की गई है?
(ग) आशय स्पष्ट कीजिए–'तन का चंचल मन का विह्वल'
(घ) 'रे जननी का वह अंतस्तल' में जननी किसे कहा गया है?
उत्तरः
(क) वसुधा का अंतस्तल धोने के लिए जल ऊँचे पर्वतों से उतरकर पर्वतों की चट्टानों पर गिरकर कंकड़–कंकड़ों पर पैदल चलते हुए दिन–रात जीवन पर्यंत कार्य करता है।
(ख) हिम के पिघलने से जल बनता है जा शुद्ध व पवित्र होता है। दूध को भी पवित्र व शुद्ध माना जाता है। अतः जल की तुलना दूध से की गई है।

CBEO BHINDER VALLABHNAGAR

(ग) इसका मतलब है कि जिस प्रकार शरीर में मन चंचल अपने भावों के कारण हर वक्त गतिशील रहता है, उसी तरह छोटी नदी का जल भी हर समय गतिमान रहता है।
(घ) इसमें भारत माता को जननी कहा गया है।

4. तरुणाई है नाम सिंधु की उठती लहरों के गर्जन का,
चट्टानों से टक्कर लेना लक्ष्य बने जिनके जीवन का।
विफल प्रयासों से भी दूना वेग भुजाओं में भर जाता,
जोड़ा करता जिनकी गति से नव उत्साह निरंतर नाता।
पर्वत के विशाल शिखरों–सा यौवन उसका ही है अक्षय,
जिनके चरणों पर सागर के होते अनगिन ज्वार साथ लय।
अचल खड़े रहते जो ऊँचा, शीश उठाए तूफानों में,
सहनशीलता दृढ़ता हँसती जिनके यौवन के प्राणों में।
वही पंथ बाधा को तोड़े बहते हैं जैसे हों निर्झर,
प्रगति नाम को सार्थक करता यौवन दुर्गमता पर चलकर।
प्रश्नः
(क) कवि ने किसका आह्वान किया है और क्यों?
(ख) तरुणाई की किन विशेषताओं का उल्लेख किया गया है?
(ग) मार्ग की रुकावटों को कौन तोड़ते हैं और कैसे?
(घ) आशय स्पष्ट कीजिए–'जिनके चरणों पर सागर के होते अनगिन ज्वार साथ लय।'

उत्तरः
(क) कवि ने युवाओं का आह्वान किया है क्योंकि उनमें उत्साह होता है और वे संघर्ष क्षमता से युक्त होते हैं।
(ख) तरुणाई की निम्नलिखित विशेषताओं का उल्लेख कवि ने किया है–उत्साह, कठिन परिस्थितियों का सामना करना, हार से निराश न होना, दृढ़ता, सहनशीलता आदि।
(ग) मार्ग की रुकावटों को युवा शक्ति तोड़ती है। जिस प्रकार झरने चट्टानों को तोड़ते हैं, उसी प्रकार युवा शक्ति अपने पंथ की रुकावटों को खत्म कर देती है।
(घ) इसका अर्थ है कि युवा शक्ति जनसामान्य में उत्साह का संचार कर देती है।

अपठित गद्यांश

गद्यांश जिसका अध्ययन हिंदी की पाठ्यपुस्तक में नहीं किया गया है अपठित गद्यांश कहलाता है। परीक्षा में इन गद्यांशों से विद्यार्थी की भावग्रहण क्षमता का मूल्यांकन किया जाता है।
अपठित गद्यांश को हल करने संबंधी आवश्यक बिंदु
विद्यार्थी को गद्यांश ध्यान से पढ़ना चाहिए ताकि उसका अर्थ स्पष्ट हो सके।
तत्पश्चात् गद्यांश से संबंधित प्रश्नों का अध्ययन करें।
फिर इन प्रश्नों के संभावित उत्तर गद्यांश में खोजें।
प्रश्नों के उत्तर गद्यांश पर आधारित होने चाहिए।
उत्तरों की भाषा सहज, सरल व स्पष्ट होनी चाहिए।
(गत वर्षों में पूछे गए प्रश्न)
निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए

1. संवाद में दोनों पक्ष बोलें यह आवश्यक नहीं। प्रायः एक व्यक्ति की संवाद में मौन भागीदारी अधिक लाभकर होती है। यह स्थिति संवादहीनता से भिन्न है। मन से हारे दुखी व्यक्ति के लिए दूसरा पक्ष अच्छे वक्ता के रूप में नहीं अच्छे श्रोता के रूप में अधिक लाभकर होता है। बोलने वाले के हावभाव और उसका सलीका, उसकी प्रकृति और सांस्कृतिक–सामाजिक पृष्ठभूमि को पल भर में बता देते हैं। संवाद से संबंध बेहतर भी होते हैं और अशिष्ट संवाद संबंध बिगाड़ने का कारण भी बनता है। बात करने से बड़े–बड़े मसले,

CBEO BHINDER VALLABHNAGAR

अंतर्राष्ट्रीय समस्याएँ तक हल हो जाती हैं।संवाद की सबसे बड़ी शर्त है एक–दूसरे की बातें पूरे मनोयोग से, संपूर्ण धैर्य से सुनी जाएँ। श्रोता उन्हें कान से सुनें और मन से अनुभव करें तभी उनका लाभ है, तभी समस्याएँ सुलझने की संभावना बढ़ती है और कम–से–कम यह समझ में आता है कि अगले के मन की परतों के भीतर है क्या? सच तो यह है कि सुनना एक कौशल है जिसमें हम प्रायः अकुशल होते हैं। दूसरे की बात काटने के लिए, उसे समाधान सुझाने के लिए हम उतावले होते हैं और यह उतावलापन संवाद की आत्मा तक हमें पहुँचने नहीं देता। ळम तो बस अपना झंडा गाड़ना चाहते हैं। तब दूसरे पक्ष को झुंझलाहट होती है। वह सोचता है व्यर्थ ही इसके सामने मुँह खोला। रहीम ने ठीक ही कहा था–"सुनि अठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहैं कोय।" ध्यान और धैर्य से सुनना पवित्र आध्यात्मिक कार्य है और संवाद की सफलता का मूल मंत्र है। लोग तो पेड़–पौधों से, नदी–पर्वतों से, पशु–पक्षियों तक से संवाद करते हैं। राम ने इन सबसे पूछा था क्या आपने सीता को देखा?' और उन्हें एक पक्षी ने ही पहली सूचना दी थी। इसलिए संवाद की अनंत संभावनाओं को समझा जाना चाहिए।

प्रश्नः1.उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए।
उत्तरःशीर्षक–संवाद रूप एक कौशल।
प्रश्नः2.'संवादहीनता' से क्या तात्पर्य है ? यह स्थिति मौन भागीदारी से कैसे भिन्न है?
उत्तरःसंवादहीनता से तात्पर्य है–बातचीत न होना। यह स्थिति मौन भागीदारी से बिलकुल अलग है। मौन भागीदारी में एक बोलने वाला होता है। संवादहीनता में कोई भी पक्ष अपनी बात नहीं कहता।
प्रश्नः 3. भाव स्पष्ट कीजिए– "यह उतावलापन हमें संवाद की आत्मा तक नहीं पहुँचने देता।"
उत्तरःइसका भाव यह है कि बातचीत के समय हम दूसरे की बात नहीं सुनते। हम अपने सुझाव उस पर थोपने की कोशिश करते हैं। इससे दूसरा पक्ष अपनी बात को समझा नहीं पाता और हम संवाद की मूल भावना को खत्म कर देते हैं।
प्रश्नः 4.दुखी व्यक्ति से संवाद में दूसरा पक्ष कब अधिक लाभकर होता है? क्यों?
उत्तरःदुखी व्यक्ति से संवाद में दूसरा पक्ष तब अधिक लाभकर होता है जब वह अच्छा श्रोता बने। दुखी व्यक्ति अपने मन की बात कहकर अपने दुख को कम करना चाहता है। वह दूसरे की नहीं सुनना चाहता।
प्रश्नः 5. सुनना कौशल की कुछ विशेषताएँ लिखिए।
उत्तरः सुनना कौशल की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–
(क) एक–दूसरे की बात पूरे मनोयोग से सुननी चाहिए।
(ख) श्रोता उन्हें सुनकर मनन करें।
(ग) सही ढंग से सुनने से ही समस्या सुलझ सकती है।
प्रश्नः6 हम संवाद की आत्मा तक प्रायः क्यों नहीं पहुँच पाते?
उत्तरः हम संवाद की आत्मा तक प्रायः इसलिए पहुँच नहीं पाते क्योंकि हम अपने समाधान देने के लिए उतावले होते हैं। इससे हम दूसरे की बात को समझ नहीं पाते।
प्रश्नः 7. रहीम के कथन का आशय समझाइए।
उत्तरः रहीम का कहना है कि लोग बात सुन लेते हैं, पर उन्हें बाँटता कोई नहीं। कहने का तात्पर्य है कि आम व्यक्ति अपनी ही बात कहना चाहता है।

2. जब समाचार–पत्रों में सर्वसाधारण के लिए कोई सूचना प्रकाशित की जाती है तो उसको विज्ञापन कहते हैं। यह सूचना नौकरियों से संबंधित हो सकती है, खाली मकान को किराये पर उठाने के संबंध में हो सकती है या किसी औषधि के प्रचार से संबंधित हो सकती है। कुछ लोग विज्ञापन के आलोचक हैं। वे इसे निरर्थक मानते हैं। उनका मानना है कि यदि कोई वस्तु यथार्थ रूप में अच्छी है तो वह बिना किसी विज्ञापन के ही लोगों के बीच लोकप्रिय हो जाएगी जबकि खराब वस्तुएँ विज्ञापन की सहायता पाकर भी भंडाफोड़ होने पर बहुत दिनों तक टिक नहीं पाएँगी, परंतु लोगों कि यह सोच गलत हो आज के युग में मानव का प्रचार–प्रसार का दायरा व्यापक हो चुका है। अतरू विज्ञापनों का होना अनिवार्य हो जाता है। किसी अच्छी वस्तु की वास्तविकता से परिचय पाना आज के विशाल संसार में विज्ञापन के बिना नितांत असंभव है। विज्ञापन ही वह शक्तिशाली माध्यम है जो हमारी जरूरत की वस्तुएँ प्रस्तुत करता है, उनकी माँग बढ़ाता है और अंततः हम उन्हें जुटाने चल पड़ते हैं। यदि कोई व्यक्ति या कंपनी किसी वस्तु का निर्माण करती है, उसे उत्पादक कहा जाता है। उन वस्तुओं और सेवाओं को खरीदने वाला उपभोक्ता कहलाता है। इन दोनों को जोड़ने का कार्य विज्ञापन करता है। व्ह उत्पादक को उपभोक्ता के संपर्क में लाता है तथा माँग और पूर्ति में संतुलन स्थापित

CEO BHINDER VALABHNAGAR

करने का प्रयत्न करता है। पुराने जमाने में किसी वस्तु की अच्छाई का विज्ञापन मौखिक तरीके से होता था। काबुल का मेवा, कश्मीर की जरी का काम, दक्षिण भारत के मसाले आदि वस्तुओं को प्रसिद्धि मौखिक रूप से होती थी। उस समय आवश्यकता भी कम होती थी तथा लोग किसी वस्तु के अभाव की तीव्रता का अनुभव नहीं करते थे। आज समय तेजी का है। संचार–क्रांति ने जिंदगी को गति दे दी है। मनुष्य की. आवश्यकताएँ बढ़ती जा रही हैं। इसलिए विज्ञापन मानव–जीवन की अनिवार्यता बन गया है।

प्रश्नः 1.गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए।
उत्तरः शीर्षक–विज्ञापन का महत्त्व।
प्रश्नः 2.विज्ञापन किसे कहते हैं ? वह मानव जीवन का अनिवार्य अंग क्यों माना जाता है?
उत्तरःसमाचार पत्रों में सर्वसाधारण के लिए प्रकाशित सूचना विज्ञापन कहलाती है। विज्ञापन के जरिए लोगों की आवश्यकताएँ पूरी होती हैं तथा मानव का प्रचार–प्रसार का दायरा व्यापक हो चुका है। इसलिए वह मानव जीवन का अनिवार्य अंग माना जाता है।
प्रश्नः 3.उत्पादक किसे कहते हैं ? उत्पादक–उपभोक्ता संबंधों को विज्ञापन कैसे प्रभावित करता है?
उत्तरःवस्तु का निर्माण करने वाला व्यक्ति या कंपनी को उत्पादक कहा जाता है। विज्ञापन उत्पादक व उपभोक्ता को संपर्क में लाकर माँग व पूर्ति में संतुलन स्थापित करने का कार्य करता है।
प्रश्नः 4.किसी विज्ञापन का उद्देश्य क्या होता है? जीवन में इसकी उपयोगिता पर प्रकाश डालिए।
उत्तरःविज्ञापन का उद्देश्य वस्तुओं का प्रस्तुत करके माँग बढ़ाना है। इसके कारण ही हम खरीददारी करते हैं।
प्रश्नः 5.पुराने समय में विज्ञापन का तरीका क्या था? वर्तमान तकनीकी युग ने इसे किस प्रकार प्रभावित किया है?
उत्तरःपुराने जमाने में विज्ञापन का तरीका मौखिक था। उस समय आवश्यकता कम होती थी तथा वस्तु के अभाव की तीव्रता भी कम थी। आज तेज संचार का युग है। इसने मानव की जरूरत बढ़ा दी है।
प्रश्नः 6.विज्ञापन के आलोचकों के विज्ञापन के संदर्भ में क्या विचार हैं?
उत्तरःविज्ञापन के आलोचक इसे निरर्थक मानते हैं। उनका कहना है कि अच्छी चीज स्वयं ही लोकप्रिय हो जाती है जबकि खराब वस्तुएँ विज्ञापन का सहारा पाकर भी लंबे समय नहीं चलती।
प्रश्नः 7.आज की भाग–दौड़ की जिन्दगी में विज्ञापन का महत्त्व उदाहरण देकर समझाइए।
उत्तरःआज मानव का दायरा व्यापक हो गया है। उसके पास अधिक संसाधन है। विज्ञापन ही अपनी जरूरत पूरी कर सकता है।

3. राष्ट्र केवल जमीन का टुकड़ा ही नहीं बल्कि हमारी सांस्कृतिक विरासत होती है जो हमें अपने पूर्वजों से परंपरा के रूप में प्राप्त होती है। जिसमें हम बड़े होते हैं, शिक्षा पाते हैं और साँस लेते हैं–हमारा अपना राष्ट्र कहलाता है और उसकी पराधीनता व्यक्ति की परतंत्रता की पहली सोढ़ी होती है। ऐसे ही स्वतंत्र राष्ट्र की सीमाओं में जन्म लेने वाले व्यक्ति का धर्म, जाति, भाषा या संप्रदाय कुछ भी हो, आपस में स्नेह होना स्वाभाविक है। राष्ट्र के लिए जीना और काम करना, उसकी स्वतंत्रता तथा विकास के लिए काम करने की भावना राष्ट्रीयता कहलाती है।ज्ब व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति से धर्म, जाति, कुल आदि के आधार पर व्यवहार करता है तो उसकी दृष्टि संकुचित हो जाती है। राष्ट्रीयता की अनिवार्य शर्त है–देश को प्राथमिकता, भले ही हमें 'स्व' को मिटाना पड़े। महात्मा गांधी, तिलक, सुभाषचन्द्र बोस आदि के कार्यों से पता चलता है कि राष्ट्रीयता की भावना के कारण उन्हें अनगिनत कष्ट उठाने पड़े किंतु वे अपने निश्चय में अटल रहे। व्यक्ति को निजी अस्तित्व कायम रखने के लिए पारस्परिक सभी सीमाओं की बाधाओं को भुलाकर कार्य करना चाहिए तभी उसकी नीतियाँ–रीतियाँ राष्ट्रीय कही जा सकती हैं। ज्ब–जब भारत में फूट पड़ी, तब–तब विदेशियों ने शासन किया। चाहे जातिगत भेदभाव हो या भाषागत–तीसरा व्यक्ति उससे लाभ उठाने का अवश्य यत्न करेगा। आज देश में अनेक प्रकार के आंदोलन चल रहे हैं। कहीं भाषा को लेकर संघर्ष हो रहा है तो कहीं धर्म या क्षेत्र के नाम पर लोगों को निकाला जा रहा है जिसका परिणाम हमारे सामने है। आदमी अपने अहं में सिमटता जा रहा है। फलस्वरूप राष्ट्रीय बोध का अभाव परिलक्षित हो रहा है।

प्रश्नः: 1. गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।
उत्तरःशीर्षक–राष्ट्र और राष्ट्रीयता।
प्रश्नः 2.'स्व' से क्या तात्पर्य है, उसे मिटाना क्यों आवश्यक है?
उत्तरः'स्व' से तात्पर्य है–अपना। केवल अपने बारे में सोचने वाले व्यक्ति की दृष्टि संकुचित होती है। वह राष्ट्र का विकास नहीं कर सकता। अतः 'स्व' को मिटाना आवश्यक है
प्रश्नः3 आशय स्पष्ट कीजिए–"राष्ट्र केवल जमीन का टुकड़ा ही नहीं बल्कि हमारी सांस्कृतिक विरासत भी है।"
उत्तरःइसका अर्थ है कि राष्ट्र केवल जमीन का टुकड़ा नहीं है। वह व्यक्तियों से बसा हुआ क्षेत्र है जहाँ पर संस्कृति है, विचार है। वहाँ जीवनमूल्य स्थापित हो चुके होते हैं।

CBO BHINDER VALLABHNAGAR

प्रश्नः 4.राष्ट्रीयता से लेखक का क्या आशय है ? गद्यांश में चर्चित दो राष्ट्रभक्तों के नाम लिखिए।
उत्तरःराष्ट्रीयता से लेखक का आशय है कि देश के लिए जीना और काम करना, उसकी स्वतंत्रता व विकास के लिए काम करने की भवना होना। लेखक ने महात्मा गांधी व सुभाषचन्द्र बोस का नाम लिया है।
प्रश्नः 5.राष्ट्रीय बोध को अभाव किन–किन रूपों में दिखाई देता है?
उत्तरःआज देश में अनेक प्रकार के आंदोलन चल रहे हैं, कहीं भाषा के नाम पर तो कहीं धर्म या क्षेत्र के नाम पर। इसके कारण व्यक्ति अपने अहं में सिमटता जा रहा है। अतः राष्ट्रीय बोध का अभाव दिखाई दे रहा है।
प्रश्नः 6.राष्ट्र के उत्थान में व्यक्ति का क्या स्थान है? उदाहरण सहित लिखिए।
उत्तरःराष्ट्र के उत्थान में व्यक्ति का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जब व्यक्ति अपने अहं को त्याग कर देश के विकास के लिए कार्य करता है तो देश की प्रगति होती है। महात्मा गांधी, तिलक, सुभाषचन्द्र बोस आदि के कार्यों से देश आजाद हुआ।
प्रश्नः 7.व्यक्तिगत स्वार्थ एवं राष्ट्रीय भावना परस्पर विरोधी तत्व हैं। कैसे? तर्क सहित उत्तर लिखिए।
उत्तरःव्यक्तिगत स्वार्थ एवं राष्ट्रीय भावना परस्पर विरोधी तत्व हैं। व्यक्तिगत स्वार्थ के कारण मनुष्य अपनी जाति, धर्म, क्षेत्र आदि के बारे में सोचता है, देश के बारे में नहीं। राष्ट्रीय भावना में 'स्व' का त्याग करना पड़ता है। ये दोनों प्रवत्तियाँ एक साथ नहीं हो सकतीं।

4. सभी मनुष्य स्वभाव से ही साहित्य–स्रष्टा नहीं होते, पर साहित्य–प्रेमी होते हैं। मनुष्य का स्वभाव ही है सुंदर देखने का। घी का लड्डू टेढ़ा भी मीठा ही होता है, पर मनुष्य गोल बनाकर उसे सुंदर कर लेता है। मूर्ख–से–मूर्ख हलवाई के यहाँ भी गोल लड्डू ही प्राप्त होता हैय लेकिन सुंदरता को सदा–सर्वदा तलाश करने की शक्ति साधना के द्वारा प्राप्त होती है। उच्छृखलता और सौंदर्य–बोध में अंतर है। बिगड़े दिमाग का युवक परायी बहू–बेटियों के घूरने को भी सौंदर्य–प्रेम कहा करता है, हालाँकि यह संसार की सर्वाधिक असुंदर बात है।जैसा कि पहले ही बताया गया है, सुंदरता सामंजस्य में होती है और सामंजस्य का अर्थ होता है, किसी चीज का बहुत अधिक और किसी का बहुत कम न होना। इसमें संयम की बड़ी जरूरत है। इसलिए सौंदर्य–प्रेम में संयम होता है, उच्छृखलता नहीं। इस विषय में भी साहित्य ही हमारा मार्ग–दर्शक हो सकता है। जो आदमी दूसरों के भावों का आदर करना नहीं जानता उसे दूसरे से भी सद्भावना की आशा नहीं करनी चाहिए। मनुष्य कुछ ऐसी जटिलताओं में आ फँसा है कि उसके भावों को ठीक–ठीक पहचानना हर समय सुकर नहीं होता।ऐसी अवस्था में हमें मनीषियों के चिंतन का सहारा लेना पड़ता है। इस दिशा में साहित्य के अलावा दूसरा उपाय नहीं है। मनुष्य की सर्वोत्तम कृति साहित्य है और उसे मनुष्य पद का अधिकारी बने रहने के लिए साहित्य ही एकमात्र सहारा है। यहाँ साहित्य से हमारा मतलब उसकी सब तरह ही सात्विक चिंतन–धारा से है।

प्रश्नः 1. गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।
उत्तरःशीर्षक–साहित्य और सौंदर्य–बोध।
प्रश्नः2.साहित्य स्रष्टा और साहित्य प्रेमी से क्या तात्पर्य है?
उत्तरःसाहित्य स्रष्टा वे व्यक्ति होते हैं जो साहित्य का सृजन करते हं। साहित्य प्रेमी साहित्य का आस्वादन करते हैं।
प्रश्नः 3.लड्डू का उदाहरण क्यों दिया गया है?
उत्तरःलेखक ने लड्डू का उदाहरण मनुष्य के सौंदर्य प्रेम के संदर्भ में दिया है। लड्डू की तासीर मीठी होती है चाहे वह गोल हो या टेढ़ा–मेढ़ा परंतु मनुष्य उन्हें गोल बनाकर उसके सौंदर्य को बढ़ा देता है।
प्रश्नः 4.उच्छृखलता और सौंदर्य–बोध में क्या अंतर है?
उत्तरःउच्छंखलता में नियमों का पालन नहीं होता, जबकि सौंदर्य बोध में संयम होता है।
प्रश्नः 5.लेखक ने संसार की सबसे बुरी बात किसे माना है और क्यों?
उत्तरःलेखक ने संसार की सबसे बुरी बात परायी बहू–बेटियों को घूरना बताया है क्योंकि यह सौंदर्य बोध के नाम पर उच्छृखलता है।
प्रश्नः 6.जीवन में संयम की जरूरत क्यों है?
उत्तरः जीवन में संयम की जरूरत है क्योंकि संयम से ही सामंजस्य का भाव उत्पन्न होता है जिससे मनुष्य दूसरों की भावना का आदर कर सकता है।
प्रश्नः 7.हमें विद्वानों के चिंतन की आवश्यकता क्यों पड़ती है?
उत्तरःहमें विद्वानों के चिंतन की आवश्यकता पड़ती है क्योंकि जीवन की जटिलताओं में फँसने के कारण हम दूसरे के भावों को सही से नहीं समझ पाते। साहित्य ही इस समस्या का समाधान है।

CBSEBHINDERVALLABHNAGAR